Planning Forums in Rajasthan

–A Decade of Working and Progress 1968-77

Directorate of College Education, Rajasthan,
Jaipur

With best compliments from

N. M. KOTHARI

Director. College Education

Rajasthan, Jaipur

Planning Forums in Rajasthan

–A Decade of Working and Progress

1968-77

NIEPA DC

D01851

Directorate of College Education
Rajasthan, Jaipur

— 544
309.25
RAJ—P

Sub. ... Systems Unit,
National I... of Educational
Pl... ...ation
... Marg, ... Delhi-110016
DOC. No....18551............
Date....26-11-84.........

Edited by	—	**Mrs. K. Thanvi, B. K. Khunteta, G. D. Paliwal**
Published by	—	**Director, College Education, Rajasthan, Jaipur**
Printed by	—	**M/s Amar Yug Printers, Jaipur**

FOREWORD

The central objective of our national policy and our endeavour since independence has been promotion of rapid and balanced economic development through democratic means. All the five Five Year Plans were intended as steps in this direction. The existence and functioning of Planning Forums in our Educational institutions provide unique opportunities to our Degree and Post-degree students and teachers to participate in fruitful activities and projects dealing with socio-economic development of the country. Besides promoting plan consciousness among the students the Forums inculcate in them a social responsibility of educating people about the nature of planning process and priorities.

The scheme of Planning Forum in Rajasthan was introduced in the year 1955. In the course of last 23 years the Planning Forums have expanded their activities in myriad meaningful directions just as their number has been increasing. Now we have 103 registered Forums, out of which 22 are functioning in Post-graduate Colleges (including 2 Medical Colleges and 1 Deemed as University) 78 in Degree Colleges and one each in the three State Universities.

The present publication outlines in brief the progress of Planning Forums movement in Rajasthan. It is hoped, this will be useful to all those who are concerned with the implementation of the scheme of Planning Forums.

I am thankful to Smt. Krishna Thanvi, Dy. Director of College Education Shri B.K. Khunteta, Teacher Fellow, University of Rajasthan, Jaipur and Shri G.D. Paliwal, Lecturers in English, Dungar College, Bikaner and for their initiative and sincere efforts in taking out this brochure and to Dr. N. S. Pillai, Research Assistant, for getting the manuscript typed.

N. M. Kothari
Director of College Education,
Rajasthan, Jaipur

CONTENTS

☐	i	Foreword
☐	iii	Editorial
☐	v	Messages
☐	1	Planning Forums—The Philosophy and Economics of the Scheme
☐	7	Countrywide Educational Movement for Generating Plan Awareness
☐	10	Planning Forums in Rajasthan — A Brief Account
☐	24	A Brief Review of the Progress—1968-76
☐	32	Report on Activities from Colleges and Universities—1976-77
☐	57	Broad Survey of Surveys—1976-77
☐	100	News, Views and Reviews
☐	108	Achievements

editorial

This brochure, The Planning Forums in Rajasthan, sets out the aims and objectives, policies and programmes, and appraises the reader of the main lines of the growth and development of the Planning Forums movement from 1952–53 through 1976–77.

The idea of bringing out a consolidated report was conceived during an informal discussion with Professor N. M. Kothari, Director, College Education, Rajasthan, Jaipur who adumbrated the scope and outline of the proposed report.

The present Publication consists of eight chapters. The opening chapter states the philosophy, economics and organisation of the scheme. Chapter two centres around a discussion of the Planning Forum as a country-wide movement for generating plan consciousness. Chapter three offers an account of Planning Forums activities in Rajasthan at a glance. Chapter four reviews briefly the progress of the scheme from 1968-69 through 1975-76. Chapter five reports the Planning Forum activities from colleges and universities during 1976–77. Chapter Six makes a broad survey of surveys conducted by the Forums. The penultimate chapter conveys the views and news about this organisation. The final chapter highlights the achievements.

Planning is too important to be left to the planners alone. Peoples' participation and involvement in the planning priorities is essential. If carried out effectively the Planning Forums can be very good means, media and platforms of social change. The introduction of this scheme in our educational institution is, therefore, very meaningful. It mainly attempts to accomplish two things. : (i) in all round development of the educated youth's personality by deepening his understanding of the socio-economic milieu in which he lives and grows; and (ii) the betterment of the economic conditions of the community at large.

As the movements of Planning Forums in Rajasthan has recently stepped into the twenty third year of its career, there are distinct signs that it has outgrown the period of adolescence, and is moving towards maturity. There are distinct signs that the organisation has struck firm roots, and is likely to grow into a vital movement of creating an awareness for the planned development of the country

among the student and through him among the common man. Since the creation, formation and establishment of an independent Research Cell with a Co-ordinator incharge of the Planning Forums in the Directorate, the range and sweep of the Forums' activities has widened.

We extend our sincere thanks to Professor N. M. Kothari, Director to whose vision, imagination and inspiration in a very subtle sense, this brochure owes its conception and birth. We are also thankful to professor Shiv Nath Singh Kapoor, Joint Director for the encouragement, guidance and help given by him from time to time. We are also grateful to all such institutions and persons as have contributed in various ways to the successful bringing out of the brochure.

—Editors

राष्ट्रपति का प्रेस सचिव,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली–110004
भारत.

आपके पत्र से राष्ट्रपति जी को जानकर प्रसन्नता हुई कि निदेशालय, महाविद्यालय शिक्षा, राजस्थान, उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में एक प्रगति प्रतिवेदन प्रकाशित करने जा रहा है। निदेशालय के प्रयासों की सफलता के लिये वे अपनी शुभकामनायें भेजते हैं।

आपका,
अब्दुल हमीद

उपराष्ट्रपति,
भारत,
नई देहली.

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि राजस्थान में उच्च शिक्षा से सम्बद्ध 109 संस्थाओं में 'प्लानिंग फोरम योजना' विगत वर्षों से कार्यरत है । इन फोरम्स् की उपलब्धियों के सम्बन्ध में महाविद्यालय शिक्षा, राजस्थाम प्रथम बार एक प्रगति प्रतिवेदन प्रकाशित करने जा रहा है । मैं आपके इस प्रयास की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं भेजता हूँ ।

ब. दा. जत्ती

रघुकुल तिलक
राज्यपाल

राज भवन,
जयपुर,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राजस्थान में उच्च शिक्षा से सम्बद्ध 109 संस्थाओं में कार्यरत 'प्लानिंग फोरम योजना' की उपलब्धियों तथा सर्वेक्षणों पर निदेशालय महाविद्यालय शिक्षा, राजस्थान द्वारा एक प्रगति प्रतिवेदन प्रकाशित किया जा रहा है।

इस दिशा में निदेशालय के प्रयास की मैं प्रशंसा करता हूँ तथा प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

रघुकुल तिलक

भैरोंसिंह शेखावत

मुख्य मंत्री, राजस्थान,
जयपुर.

प्रिय श्री कोठारी,

आपका पत्र मिला। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि निदेशालय महाविद्यालय, शिक्षा "प्लानिंग फोरम योजना" के बारे में एक प्रगतिवेदन प्रकाशित कर रहा है।

मुझे बताया गया है कि यह योजना राज्य की 109 उच्च शिक्षा संस्थाओं में पिछले 10 वर्षों से चल रही है। योजना का लक्ष्य छात्रों में विकास योजनाओं की गतिविधियों के प्रति जागरूकता पैदा करना है। देश के बदले हुएए सन्दर्भ में इसकी आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है।

राजस्थान की नई सरकार ने महात्मा गांधी के जन्म दिवस 2 अक्टूबर से राज्य में एक नई योजना प्रारम्भ की है। अब तक हमारे देश में विकास की जितनी योजनाएं पिछले 30 वर्षों के दौरान लागू की गई उनका लाभ उस वर्ग को नहीं मिला जिसे महात्मा गांधी दरिद्रनारायण कहते थे। राजस्थान सरकार ने देश में पहली बार एक ठोस और व्यवहारिक योजना को गतिशील किया है। हमने इसका महात्मा गांधी की भावनाओं के अनुरूप अन्त्योदय नाम दिया है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक गांव के 5 सबसे गरीब परिवारों का चयन ग्राम सभाओं के माध्यम से किया जाएगा और उन्हें राज्य सरकार विभिन्न वित्तीय संस्थाओं से सहयोग लेकर, कर्ज, अनुदान और सहायता देकर स्वावलम्बी बनाने का प्रयास करेगी। 2 अक्टूबर से प्रारम्भ की गई यह योजना एक नया दिशा संकेत है और एक नया प्रयोग है जिसकी सफलता सभी वर्गों के सहयोग पर आधारित है।

मैं कहना चाहूंगा कि आपकी प्लानिंग फोरम योजना के अन्तर्गत भी इस विषय पर चिन्तन किया जाय और छात्रों में से ही कुछ ऐसे समूह और घटक तैयार किये जाएं जो इस योजना की क्रियान्विति सम्बन्धी स्थितियों और प्रभावों का सर्वेक्षण कर विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करें।

यदि हमने ऐसा किया तो निस्सन्देह प्लानिंग फोरम की गतिविधियों में एक नया उत्साह उत्पन्न होगा। मैं आपकी योजना की उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करता हूं।

आपके द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदन की सफलकेता लिये शुभ कामनाएं प्रकट करता हूं।

भैरोंसिंह शेखावत

भँवरलाल शर्मा,
शिक्षा एवं स्वायत्त शासन मंत्री,
राजस्थान.

गणगौरी बाजार,
जयपुर, राजस्थान.

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि निदेशालय महाविद्यालय शिक्षा, राजस्थान प्रथम बार प्रगति प्रतिवेदन प्रकाशित करने जा रहा है। उक्त प्रगति प्रतिवेदन द्वारा महाविद्यालयी छात्रों और प्राध्यापकों में तथा उनके माध्यम से जन साधारण में राष्ट्रीय योजनाओं के निर्माण, क्रियान्वयन तथा सफलताओं के प्रति जागरूकता, उत्कण्ठा एवं ज्ञान वृद्धि के उद्देश्य में कार्यरत 109 योजना गोष्ठियों (प्लानिंग फोरम्स्) की उपलब्धियों एवं सर्वेक्षण प्रतिवेदनों को प्रस्तुत करेगा। इस शुभ कामना के साथ मैं इसकी सफलता चाहता हूं।

भंवरलाल शर्मा

जयपुर (राजस्थान)

ललित किशोर चतुर्वेदी
सिंचाई मंत्री
भूतपूर्व मंत्री, शिक्षा एवं स्वास्थ्य विभाग

यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि राजस्थान में उच्च शिक्षा से सम्बन्ध 'प्लानिंग फोरम योजना' के अन्तर्गत उपलब्धियों के आधार पर किये गये प्रतिवेदन का निदेशालय महाविद्यालय द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है। इस सर्वेक्षण के विश्लेषण के आधार पर जो तथ्य सामने आयेंगे वे अवश्य ही उपयोगी होंगे।

मैं इसके प्रकाशन पर अपनी हार्दिक शुभ कामना भेज रहा हूँ।

ललित किशोर चतुर्वेदी

सतीशचन्द्र
अध्यक्ष,

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली-110002.

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'प्लानिंग फोरम योजना' के माध्यम से उच्च शिक्षा से सम्बद्ध 109 संस्थाओं से उपलब्ध सर्वेक्षण प्रतिवेदनों को प्रस्तुत करने के लिए निदेशालय महाविद्यालय शिक्षा, राजस्थान इस बार सर्व प्रथम एक प्रगति प्रतिवेदन प्रकाशित करने जा रहा है। मैं इस प्रतिवेदन के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं आपकी सेवामें प्रेषित कर रहा हूं।

सतीशचन्द्र

Prof. Raj Krishna,
Member.

PLANNING COMMISSION,
NEW DELHI.

.....I hope you will persuade Planning Forums of Rajasthan Colleges close to the rural areas to prepare block-level plans for rural development after thorough techno-economic surveys.

With best regards,

Raj Krishna

M. V. Mathur

NATIONAL STAFF COLLEGE FOR EDUCATIONAL
PIANNERS & ADMINISTRATORS

17-B Sri Aurobindo Marg
New Delhi-110016

I am glad to know that the Directorate of Higher Education, Government of Rajasthan, is bringing out a Progress Report regarding the working of Planning Forums since 1968 in 109 educational institutions. Effective planning is a prime need for the progress of our country. Our students and our teachers should be able to appreciate its importance and participate in selected developmental activities in their respective localities and districts. This becomes all the more necessary in view of the very desirable stress that is now being laid on Area Planning specially at the Block Level. I wish the Planning Forums in Rajasthan an increasingly significant role in development programmes of the State.

With kind regards,

M. V. Mathur
Director

G. K. Bhanot

Chief Secretary,
Government of Rajasthan,
JAIPUR.

The Directorate of College Education, Rajasthan deserves to be congratulated on the decision to bring out a progress report on Planning Forums in Rajasthan.

Community Development and Social change is not something that can be conducted without some sort of theoretical framework. Nor is it something that can be left to professional planners, sociologists, economists and public administrators only. Public understanding, publlic cooperation and public character are essential elements of the desired social transformation. It is a matter of great pleasure that the youth of the State are constructively and actively engaged and involved in the task of national development through the scheme of Planning Forums. The scheme is devoted towards creating public cooperation, plan consciousness and awareness and involvement of the public at large in plan formulation through young students, right from the plan formulation stage.

I would like to extend all my good wishes for the publication.

G. K. Bhanot

कृपाशंकर रस्तोगी,

शिक्षा आयुक्त एवं शासन सचिव,
राजस्थान सरकार,
जयपुर

मुझे यह ज्ञात करके अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि राज्य के महाविद्यालयों में 109 प्लानिंग फोरम राष्ट्रीय योजनाओं के निर्माण, क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन में विगत अनेक वर्षों से कार्यरत हैं तथा इस वर्ष निदेशालय, महाविद्यालय शिक्षा, राजस्थान, इन वाक्पीठों (फोरम्स्) की उपलब्धियों का समेकित विवरण प्रकाशित करने जा रहा है।

विकासशील राष्ट्रों का समग्र एवं सुसम्बद्ध विकास प्रत्येक स्तर पर सुविचारित योजनाओं के द्वारा ही सम्भव है। राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को अपने सामान्य जीवन में भी योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने तथा योजनाओं के प्रति सचेत रहने की शिक्षा प्रदान करने में विद्यालय एवं महाविद्यालय विशेष योगदान कर सकते हैं। मैं आशा करता हूं कि प्लानिंग फोरम्स् के माध्यम से विद्यार्थियों को समुचित प्रशिक्षण प्राप्त होता रहेगा।

प्लानिंग फोरम्स् की निरंतर प्रगति हेतु मैं हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूं।

कृपाशंकर रस्तोगी

M. S. Mogra

Deputy Secretary,
Government of Rajasthan,
JAIPUR.

I am happy to learn that the Directorate of College Education, Rajasthan under the able guidance of Shree N. M. Kothari, the present Director, is bringing out a progress report of the activities of the Planning Forums in Rajasthan. I have been directly or indirectly associated with the work of Planning Forums in Rajasthan for quite a long time and I must congratulate all the officers for the excellent work that has been done in the past two years in providing guidance to the Planning Forums all over the State for organising their activities in a systematic manner.

I hope this publication will go a long way in encouraging the students to take further lively interest. I wish this effort, first of its kind in Rajasthan, all success and assure full cooperation to all those who are engaged in such activities.

M. S. Mogra

1

PLANNING FORUMS:

The Philosophy and Economics of the Scheme

The Concept

PLANNING is too important to be left to the Planners alone. Peoples' participation in the Plan preparation and execution, more particularly of the educated youths' involvement in the Planning process is essential. This is still more specifically true in the context of India, a developing country. Pledged as we are to democratic and socialistic planning where the creative energies of the people have to be roused by persuation and discussion, planned development is the only way to achieve economic growth with social justice. To achieve this, it is necessary to create an awareness among all sections of the people not only about the goals and gospels of economic planning but also about the job-oriented economic policies, priorities and success.

The introduction of the scheme of Planning Forums in our educational institutions is purposeful. It is commonly agreed that Planning Forums can be of incalculable help in making people receptive to new ideas, in carrying on publicity, and in educating people about the plans. If carried out effectively, Planning Forums can be very good means, mediums, and platforms which let us comprehend the process of economic change and resource mobilisation. They provide us insight to select the best available alternatives for accomplishing the optimum socio-economic development of the country.

The Aims

The major aims of the scheme, in the seats of higher learning, are:

(i) *to create* an awareness of need for planned development of the counttry among the youths, especially the student community, and through them among the common man; and (ii) *to involve* both of them, i.e.-the educated youth and the common man in the national development effort right from the planning stage. The scheme attempts to accomplish two things (a) an all round and integrated development of the educated youth's personality by deepening his understanding of the socio-economic milieu in which he liwes and grows and (b) the betterment of the economic condition of the community at large.

The Objectives

The main objectives of the Planning Forums, in brief, are as follows:—

(i) *to develop* plan consciousness among the educated youths;

(ii) *to provide* them understanding of the complexities of planning process and priorities;

(iii) *to give* a work experience to the youths by encouraging them to arramge meaningful discussions and debates on vital economic issues;

(iv) *to impart* them practical training in various types of exhaustive and practical plans commencing from the grassroot level, i.e., to enable them to conduct socio-economic surveys in rural and urban areas;

(v) *to educate* the masses, through the educated youths on economic planning in our country;

(vi) *to cooperate* with other developmental youth programmes like the National Service Scheme, Nehru Yuwak Kendras, Sarvodaya Organisations, etc.;

(vii) *to involve* the developmental machinery at district level and below in the discussions and activities of the Planning Forums; and

(viii) *to offer* positive and constructive suggestions about plan formulation, implementation and evaluation to the higher authorities.

The Location

The Planning Forums function in recognised Colleges/Universities and other approved educational institutions.

The Principal Elements

There are four major elements in the Planning Forums; the students, the teachers, the community and the programme content. The adequate interac-

tion and coordination of these component elements is essential for the success of the Planning Forums.

Aspects and Activities

The activities in which the Planning Forum youths can be involved are manifold and cover a vast area of economic development work. Activities to be undertaken by the Planning Forums can, for the sake of convenience, be grouped under the following aspects.

(i) Plan Publicity :

Locating the Plan Information Centre in the Central place of the College/University, i.e., in the College/University Library or any other convenient room frequently visited by a large number of students; display of posters and charts and important journals relating to socio-economic developmental activities; arranging film shows and cultural programmes in consultation with the field publicity organisations of the Information and Broadcasting Ministry and State Governments, dissemination of knowledge about India's Five Year Plans and spreading of plan conscionsness in the society at large.

(ii) Planning Talks :

Arranging talks/lectures, debates, discussions, seminars, symposia, essay competitions, Quiz programmes, etc. on popular planning topics.

(iii) Projects and Surveys :

Conducting purposeful socio-economic investigations in developmental projects, preparing village plan keeping in view local resources, etc. and taken in close consultation with the District/City/Block level authorities.

(iv) Participation in Camps and Conferences

Educational trips to projects, participation in National and State level Conferences and Camps on Planning Forums; cooperation with and participation in the actual developmental and Social Service Projects of the NSS and the Nehru Yuwak Kendras and other Youth Programmes.

Relation with other Programmes

Since the Planning Forums are expected to involve themselves, as far as possible, in the implementation of the developmental projects by actual

participation as a group, it must actively collaborate with the NSS, and other similar youth organisations; for, their goals, aims, objectives, dimensions and approaches are almost identical. The Planning Forums, Zila Parishads and Panchayat Samities should establish close relationship with a veiew to making studies and surveys more fruitful.

The Organisational Structture

The organisational set up of the Planning Forums is a four-tier system. It consists of the Central, the State, the University and the College level Committees.

At the **Central level** the Ministry of Education and Social Welfare (Student Youth Division) is the incharge of the Planning Forums Scheme, and functions in close collaboration with State Governments. There is also a Central Coordination Committee consisting of the representatives of the Ministry of Education, the Plannig Commission, the Ministry of Information and Broadcasting and the Department of Rural Development with a view to providing overall guidance in the implementation of the scheme of Planning Forums. Besides reviewing the achievements of the scheme periodically on the basis of the State Evaluation reports, the Central Coordination Committee also arranges one National Level Conference to evaluate the programme and to suggest corrective measures in the light of experience thus gained.

At the **State level,** an officer of the Department of Education or Planning is designated to look after registration of Planning Forums and implementation of the Scheme. Beside maintaining the list of such Planning Forums as are eligible for grant, the State Government sends the list of Planning Forums registered with it to the Central Ministry of Education every year. Just as at the Central level, so at the State level there is an Inter-Departmental Committee with representatives of the Departments of Planning, Education, Development, Information, Social Welfare and Youth Services. This Committee arranges for periodic evaluation of Planning Forums through the appropriate evaluation machinery of the State.

At the **University level,** a Planning Forum duly registered with the State Government, alone is eligible to receive annual grant. The N. S. S. Coordinators generally coordinate and guide the activities of the Forums.

At the **College level,** the Planning Forums function under the overall charge of the Principal of the College, with a teacher functioning as its incharge. It is advisable that the College teacher incharge of the NSS sholud

also be associated with activities of the Planning Forums for its smooth functioning. The Planning Forums should also have student representation in its Executive Committee with one of the senior students working as Secretary. It is further suggested, that the Forums should, as far as possible, enlist the cooperation of the developmental machinery at the District and Block levels.

Financial Management

Share of Expenditure : The entire expenditure on the Planning Forums (except grants for Regional Meetings/Seminars) is shared between the Central and State Governments in the ratio of 60 : 40.

Quantum of Grant : The basic grant to Forums shall be not less than Rs. 200/- and not more than Rs. 400/- per annum. Such Planning Forums as come forward with a view to intensifying their activities are given additional grants.

Two Categories : For the purposes of grants, the Universities/Colleges are divided into two categories;

(a) are given basic grant varying from Rs. 200/- to Rs. 400/- per Forum, per year.

(b) A grant upto Rs. 1,600/- is given to about 5-8 Colleges in each State with the following break-up;

(i) Basic grant including Rs. 400/- for Plan Information Centre.

(ii) Research Studies/Surveys etc. Rs. 1,200/-

Grants for Regional Meetings/Seminars : Financial assistance are available to few Universities/Autonomous Colleges and other institutions like I.I.T. for organising regional meetings and seminars on different aspects of Planning and Development. The maximum grant admissible to regional meetings/seminars is Rs. 15,000. The expenditure on these grants is borne by the Central Government.

Guide Lines : Only Planning Forums registered with the State Government are eligible for grants.

The Planning Forums are advised to raise some local resources of their own to supplement the grant-in-aid from the Government. The Planning Forums are instructed specifically that the expenditure on entertainment and conveyance should not exceed 1/8th of the total grant for constructive activities carried out at the headquarter of the Planning

Forums (Category 'A') In the case of activities such as surveys of a village or slum area, etc. undertaken at some distance from the College or University, the expenditure on the above items shall not exceed 25 percent of the total grant (Category 'B').

Each Planning Forum shall submit an application for grant-in-aid to the Directorate of College Education/the State Government, giving full information about the Forum, e.g., the proposed activities, the amount of grant-in-aid required, and the University to which the college is affiliated.

Universities, autonomous colleges and bigger Colleges of good reputation as are keen to conduct Regional Meetings/Seminars should submit their proposals directly to the Ministry of Education and Social Welfare (Department of Education), Student Youth Division, New Delhi giving full details and break up of the items of expenditure. The grants are sanctioned only for Seminars/Meetings, the proposals for which have been approved by the Ministry of Education and Social Welfare.

2

PLANNING FORUMS:

A Country-wide Educational Movement for Generating Plan Awareness

The Beginning

Since August 15, 1947, the day we achieved political independence it has been our endeavour to search for effective way of accomplishing economic independence. Comitted as we are to a planned way, to progress through democratic means, we recognised very early the need for getting active cooperation of the intelligentia, we also desired the active participation of the teachers and students, in the seats of higher learning, and through them the involvement of the community. The organisation of the Planning Forums in Universities and Colleges is one such effort. It aims at harnessing the teachers and students in a joint endeavour to help in the developmental process. The Planning Forums were intended to give serious thought to the Planning needs and problems. In the words of Johh Barnabas they "were to study the Plans, agree with or criticise them, make their own suggestions based on their thinking in their group studies, where both teachers and students had sat together and discussed issues. The reactions of the Planning Forums were to be relayed to the Planning Commission who in turn were to reconsider the plans in the light of the reflections received from the various Planning Forums from all over the country. Such a process, it was hoped, would give the 'Plan' the advantage of the practical administrator and the pragmatic politician as well as the critical analysis of the intellectual".

The Growth

Started as far back as the year 1955, there are to-day over 2000 active Planning Forums in the country. As the latest complete figures of the registered Planning Forums running in all the States of our country are not available, it is difficult to make a comparative study of the role and effectiveness of the Planning Forums. In our State, Rajasthan, there are 103 registered Planning Forums in Universities and Colleges taken together, and we claim to be one of the leading States of the country so far as the implementation of the movement of Planning Forums is concerned. We have been regularly utilising the grants issued by the State and Central Governments.

The Stages

Planning Forum movement has recently stepped into the 22nd years of its career, and as all living concepts grow and change with age and experience, it has also undergone a change. It has passed through the four distinctly marked stages ·

(i) **An instrument for the study of Plan** :

In the beginning our approach was purely of an academic nature, i.e , our Planning Forums were content with the organisation of debates and discussions on various aspects of economic planning.

(ii) **Interpreters of the Plans :**

Having projected itself as an instrument for the study of plan, it, in the second stage of its development, moved over to the concept that the Planning Forums could and should also be interpreters of the Plans.
In a word, they became the active agents of making publicity of the Plans. This included dissemination of the information about various aspects of Planning among the general public.

(iii) **Tools of Social change :**

During the third stage of growth the eoncept has undergone a further change and the scope of the activities of the Forums widened further. Forums decided to be the tools of social change.

(iv) **Organs of reseach .**

Members of the Forum visited the neighbouring community, started cleaning slums, constructing wells, approach roads, public buildings in villages, holding periodical health camps, family planning compaigns, helping in the relief of distress in cases of natural calamities like drought, flood, earthquake etc. This step proved to be of far reaching consequences. Besides turning out

to be educationally valuable both to the teacher and the student, it corrected one defect of education i, e., it minimised the ever widening gap between the educated and uneducated and now thanks to the scheme of National Service ard Planning Forums, the teacher and the student are being brought into direct contact with living people aud their problems. This marks the fourth stage of conceptual development of the Planning Forum. With greater contact with the people the Forums became organs of research : instruments for carrying out small surveys for small communities in rural and urban areas During this stage an increasingly greater emphasis was laid on research work and adoption of a village or a slum by the members of the Forums.

As the conceptual frame work of Planning Forums is gradually growing, so it is being realised that the widespread net work of Planning Forums throughout the country has all the potentialities of developing live cells of Planning, the contribution of which are bound to influence the plans substantially. Since a Planning Forum would survey a village, understand its needs, workout a plan for village, the work of a Planning Forum assumes great importance.

A developing country like ours in the process of rapid economic growth requires new institutions, modes and values. A Planning Forum is one of such institutions and modes. It attempts to bring about the emergence of the new social order based on justice and equality. The Planning Forums let us know that with the advent of Planning, our nation has begun its journey on a new terrain and we will have to constantly freshen and vitalise our knowledge and understanding as we continue our march towards the more stimulating horizons. One would like to say, therefore, with T. S. Eliot :

> The knowledge imposes a pattern and falsifies,
> For the pattern is new in every moment
> And every moment is a new and shocking
> Valuation of all we have been.

3

PLANNING FORUMS

In Rajasthan -A Brief Account

The Beginning

As in other States, so in Rajasthan the scheme of Planning Forums was introduced in the year 1955. It was started with the idea of making teachers and students in colleges and universities active partners with the process of planning. The scheme in the first thirteen years, i. e. from 1955 to 1968, was implemented by the Government of Rajasthan under the supervision of the Planning Commission. Since the session 1968–69, the Directorate of College Education, Rajasthan, Jaipur, has been given the task of managing, supervising and looking after the programme of Planning Forums.

Slow and Steady Growth

In the initial phase of their career, the Forums confined themselves to discussing and debating the various aspects of Plan, and there were only two Planning Forums in the State in 1955. But in the course of the last twenty two years, the Planning Forums have expanded their activities in various directions just as their number has been increasing. From the number of 2, in 1955, the number of Forums, in 1965, rose to 43. A decade later, in 1975, the strength of Forums became 97; during the session 1976–77, the number of Forums had gone up to 103–out of which 22 are functioning in Post-graduate Colleges (including 2 Medical Colleges, 1 Deemed as University), 3 in the three State Universities and 78 in Degree Colleges.

N
W
E
S
PLANNING FORUMS IN RAJASTHAN
SRIGANGANAGAR
CHURU
BIKANER
JHUNJHUNU
SIKAR
ALWAR
JAISALMER
NAGAUR
JAIPUR
BHARATPUR
JODHPUR
AJMER
TONK
SAWAI MADHOPUR
BARMER
PALI
BHILWARA
BUNDI
JALORE
SIROHI
UDAIPUR
CHITTORGARH
KOTA
JHALAWAR
DOONGARPUR
BANSWARA
INDEX
ONE PLANNING FORUM

Principal N. M. Kothari
(Now Director, College Education)
giving thanks after an-orientation
programme held at
Government College, Ajmer.

The Enrolment and Actual Coverage

In those colleges where there are Post-graduate Departments of Economics and Commerce subjects, the membership of the students to Forums is compulsory but in many Degree Colleges the enrolment of the students in the Planning Forums is optional. Nevertheless, the response of the students is encouraging. About 70 Planning Forums have approximately 200 members each; some 11 Planning Forums have more than 500 members on their rolls. Out of these there are 6 such Forums as have the enrolled strength of over 1000 members. We have now 103 Planning Forums in Rajasthan and a sizeable strength of 22,616 intelligent, active and dedicated workers who are expected to create a ferment of thought and provide inspiration for energetic implementation of the nation building socio-economic programme in the areas within their reach.

The Budget

Since the session 1968-69, the year in which the Directorate was assigned the responsibility of supervising the activities of Planning Forums, there has been the budgetary provision of Rs. 78,000 for financing the activities of the Forums. Out of this, upto 1973–74, Rs. 40,000 came from the Plan Fund and Rs. 38,000 from the Non-Plan Fund. Since 1974-75, one of the most discouraging and unfortunate aspect of the budgetary provision is that all through this period of 9 years, the budget has been static whereas the activities of the Planning Forums have been growing steadily. To recapitulate, there were, in 1968–69, only 56 Planning Forums in Rajasthan, now in 1976–77, their number has gone upto 103. These limited funds act as the major constraints in rapidly expanding activities of the Forums. This amount is so meagre that, if calculated in terms of the enrolled strength (22,616) of the last session, it provides Rs. 3.10 per annum on per bonafide member of the duly registered Forum. When compared to the NSS allocations where there is the provision of Rs. 120.00 per NSS volunteer per annum, this amount of Rs. 3·10 per member of the Planning Forums, stands out quite negligible. On an average each Planning Forum gets Rs. 757·28 from the Government for carrying on the activities throughout the session but in actual practice, some Forums get only the basic grants of Rs. 200/- to Rs. 400/-

As the Government funds for running most of the Planning Forums' activities are inadequate, the Forums were/are advised to raise the local resources of their own to supplement the Grant-in-Aid from the Government.

But so far, some of them have been collecting money through nominal fees from the members which is voluntary. This fees varies from Rs. 0·50 per year to Rs. 5.00. There is no consistent policy so far. During last session 37 Forums charged fees at the rate of Rs. 0·50 per student, 34 at the rate of Rs. 1.00 per member, 22 Forums at the rate of Rs. 2.00, 5 Forums at the rate of Rs. 4·00 per enrolled member whereas 4 Forums realised Rs. 5·00 from each member. The Directorate desires that there should be a uniform policy, and suggests that Rs. 2.00 should be charged from every member of the Forum from the forthcoming session.

The Growing Importance of the Planning Forums

The Directorate of College Education, having realised the importance of the Planning Forums as effective media of Plan publicity and Plan consciousness among the masses, appointed a Committee to suggest guidelines for the functioning of Planning Forums. This was initiated by the Former Directors—Prof. R. S. Kapoor, Dr. M. P. Mathur—who were greately intrested in plan activities such as lectures, discussions, seminars, popular talks by visiting scholars and personnel connected with planning, liaision with the District administration, undertaking survey projects, organising competitions in general knowledge, essay writing, preparation of plan materials, etc., establishment of plan corners and the assessment of work of Planning Forums.

The Periodic Review 1974

Although the working of Planning Forums was reviewed from year to year, the Directorate made an intensive review of the Planning Forums in Government and Aided Colloges for the last three years and with particular reference to the activities held during the previous year, i. e., 1973–74. The review revealed that though the colleges conducted the investigations assigned to them, most of them did not submit the reports regularly, and those that did submit the reports, omitted the details of the activities undertaken. The Periodic Review Committee 1974, felt the need of revitalizing the activities of the Forums and also the need of coordinating them at the Directorate level. The ideas suggested by Shree M. S. Mogra, former Deputy Secretary in the Planning Department, Government of Rajasthan, were considered by the Committee and due to the convincing arguments put forward on the ideas suggested by Shri Mogra, the Directorate decided to organise Planning Forum activities on the following lines :

(a) Selection of lecture topics on various aspects of plan each year by the

Committee and identifing personnel to deliver these lectures on zonal basis.

(b) Identifying suitable officers for being trained to give talks on these topics.

(c) Selection of survey topics relevant to the needs of the State in consultation with the Planning/Man Power/Social Welfare and other Departments, preparation of guidelines and methodology to undertake these surveys by the Planning Forums.

(d) Release of basic grants to each Planning Forums and special grants for survey projects based on the assessment of the project submitted.

(e) Adoption of a village or group of villages by each Planning Forum so that Plan consciousness is brought home to the general public.

(f) Liaision with the District administration in order to know the Plan programme and contribute to their implementation effectively.

(g) Collection of Plan literature and publishing Plan progress by way of preparation of illustrative material at the District, State and National levels.

(h) Coordination of Planning Forum activities at the Directorate level. A Coordinator in the Directorate assisted by a Research Assistant and other supporting staff was considered necessary so as to coordinate the activities, prepare an annual report on the activities and surveys conducted and pass on the relevant data to the State Government for using them in the formulation of Annual Plans.

Steps Taken by the Directorate

In the light of the observations and recommendations of the Committee and in accordance with the guidelines received from the Planning Department, Government of India, the Directorate took the following steps :

(i) All Planning Forums were got registered so as to make them recognised for plan work.

(ii) The Planning Forums have been categorised into 'A' and 'B' categories. All the 'A' category Planning Forums shall receive a basic grant of Rs. 400/- while the 'B' category Forums which shall organise surveys and other advanced activities shall receive grants not exceeding Rs. 1600/- depending upon the activities they propose.

(iii) Topics for lectures and surveys (separate for P. G. College and Degree College Planning Forums) have been identified and circular issued to to colleges.

Formation of Planning Forum Cell

The growing importance of Planning Forums activities and the role that they are expected to play in generating the plan awareness led to the realisation that there should be an independent unit of the Planning Forums under the control of the Directorate. The Government of Rajasthan, in response to the recommendations of the Consultative Committee, 1974 on Planning Forums, and due to consistently indefatigable efforts of the trinity-Shri M. S. Mogra, Dy. Secretary to Govt., Department of Planning, Government of Rajasthan, former Director, Dr. R. N. Chowdhuri and former Joint Director, Dr. B. V. Ratnam-sanctioned the post of a Lecturer-Coordinator, a Research Assistant and a L. D. C. typist to the Directorate of College Education during the financial year 1976–77. This staff works under the supervision of the Deputy Director of College Education (II). Started in February, 1977, the Planning Forums Cell is ready to work with a spirit of dedication. Its main task would be to register the Planning Forums, to issue guidelines, to allocate funds, to supervise and assess the functioning of the Forums, publish periodical bulletin with a view to coordinating the activities of the Forums and to help the institutions in conducting the surveys and projects This apart, the Cell intends to organise orientation and refresher courses for the incharges of the Planning Forums.

The New Dimensions

The scheme of Planning Forums which was activated by brilliant administrator, Director, Professor R. S. Kapoor, vitalised by Director Dr. M. P. Mathur, who himself was a student of Economics, strengthened and intensified by Director Dr. R. N. Chowdhuri, who was deeply interested in Plan activities is being further revitalised and consolidated under the able guidance of the new Director, Professor N. M. Kothari, an educationist and economist of established eminence. With a view to vigorously intensifying and properly coordinating the activities of the Forums in the colleges and universities, he intends to publish the activities of the Forums undertaken so far in Rajasthan. The publication of the progress report of the Planning Forums activities is sure to generate not only greater awareness of Plan policies and priorities but also create keener motivation among the teachers and students

and through them among the common man. The present Director, Prof. N. M. Kothari has already given a lead in this direction. He has had the distinction of bringing out, in the capacity of the Principal of Government College, Ajmer a special supplement on *Economic Development and Planning in India* which apart from covering a wide variety of topics dealing with almost every phase of Planning, succeeded in one way more : it could involve teachers, students, administrators, educationists, ministers at one platform. The aspects covered are : (i) Planning Process in Rajasthan and (ii) Priorities in Planning of Rajasthan by Shri M S. Mogra, Deputy Secretary Planning, Government of Rajasthan, Jaipur. The 'Strategy of Development Planning in India' by Professor S. Bagchi, 'Planning in India Before Independence' by Professor C. L Garg; 'An Assessment of Indian Planning' by Professor R. K. Jain, 'Twenty Point Economic Programme and Its Implementation—A Critical Appraisal' by Dr. H.C Saxena 'Fifth Five Year Plan, 1974-79', by Professor K. G. Agrawal, 'Agriculture Setup and Land Reforms in Rajasthan' by Professor C. R. Chaudhary, 'Economic Growth with Social Justice, by Sudhir Sogani, 'Poverty and Planning' by Mah ndra 'Green Revolution and Indian Agriculture' by M. K. Jain, 'Economic Planning and Transportation' by Gopal Garg, 'Economic Planning and New Rajasthan' by Thakur Thadani, 'Planning and Industrial Development of India' by Satish Thaparia, 'Plans Taken by Planning Commission' by Miss Jyoti Bhatia, etc.

National Conference of Planning Forums 1976

Smt. Krishna Thanvi, Deputy Director of College Education (II), participated in the National Conference of Planning Forums held at New Delhi, on 10th and 11th December, 1976. Three other representatives from Rajasthan were—Sri S. L. Lodha, Lecturer in Economics, S. D. Govt. College. Beawar, Shri G. P. Awasthi, Incharge, Planning Forums, B. I. T. S., Pilani, and Shri Murdia of Udaipur University. The points discussed and recommended in the Conference were :

(i) Existing Planning Forums should be strengthened and more Forums should be setup so as to propagate plan consciousness among student/teacher and through them among the general public of the society.

(ii) The entire academic community in colleges should be involved in the Planning Forum. The Principal, as the senior academician, has to take steps to guide and strengthen the Planning Forum .

(iii) Periodical reports of the Planning Forum activities must be obtained and their evaluation should be undertaken.

(iv) Involvement of women students and teachers in the activities of the Planning Forums because of the emphasis in recognition of equality of their status.

(v) Motivation of the student youth for participation in the process of planning and development, and in the constructive programme of community.

(vi) Linking Planning Forums with NSS and Nehru Yuwak Kendras so that they could work together towards the welfare of the deprived sections of the society in rural areas and urban slums.

(vii) Development of understanding of the process of planning among the masses by having exchange with the public in 'Muhallas', 'Chaupals' and 'Gram Sabhas' and by organising cultural meets, rallies, etc.

(viii) Organising field study and project work with a view to identifying problems that have local/regional/national relevance.

Plans, Plan Priorities & Planning Forums in Rajasthan– A Few Facts at a Glance

Rate of Growth of Economy During Plans

First Plan Period	3.3%
Second Plan Period	4.1%
Third Plan Period	3.5%
Fourth Plan Period	3.7%
Fifth Plan Period (Target)	5.5%

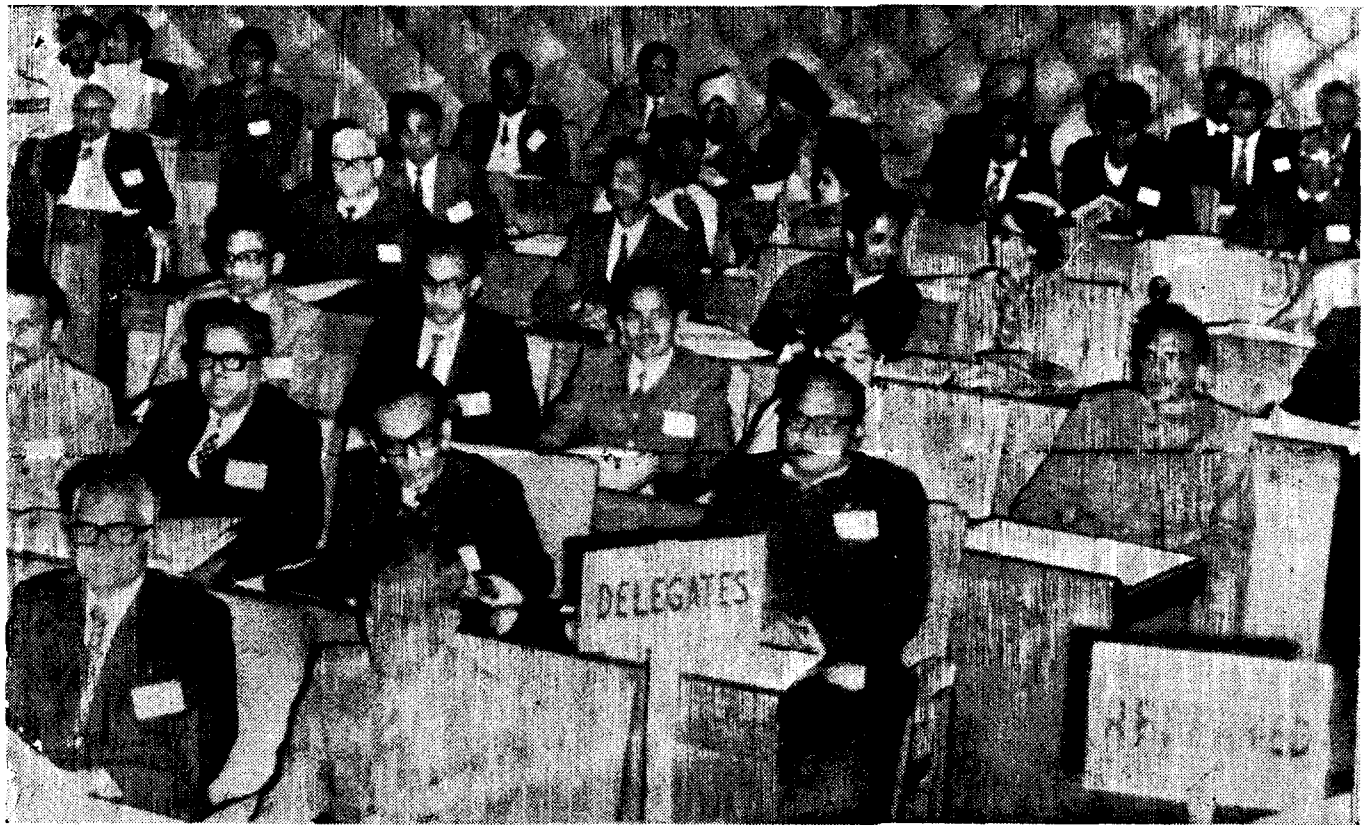

Delegates at 'National Conference on Planning Forums' held at New Delhi on 10 & 11 Dec., 1976

Planning Forum Incharges attending Zonal Orientation Programme at Kota.

(Rs. in Crores)

Broad head of Development	I Plan	II Plan	III Plan	Three Annual Plans	IV Plan	V Plan	Likely Exp. in Fifth Plan
1. Agriculture & Allied Programmes	6.7 [12.36]	23.5 [22.86]	38.2 [17.96]	24.3 [17.76]	25.3 [8.19]	73.9 [10 69]	69.3 [9.54]
2. Cooperation	0.3 [0.55]	1.9 [1.85]	2.4 [1.14]	0.9 [0.66]	5.3 [1.70]	8.3 [1 20]	8.6 [1.18]
3. Water & Power	31.5 [58.12]	28.3 [37.30]	115.9 [54 47]	83.3 [60.89]	187.2 [60.65]	327.5 [47.35]	415.8 [57.26]
4 Industry & Minerals	0.5 [0.93]	3.4 [3.31]	3.3 [1.56]	2.1 [1.54]	8 6 [2.78]	28·0 [4.06]	26.8 [3.70]
5. Transport & Communication	5.5 [10.15]	10.2 [9.93]	9.8 [4.62]	4.4 [3.22]	10.0 [3.24]	57.8 [8.36]	72.9 [10.04]
6. Social & Community Services	9.1 [16.78]	24.3 [23.66]	42.9 [20.16]	21.7 [15.86]	72.1 [23.35]	189.3 [27 37]	130.9 [18.02]
7. Miscellaneous	0.6 [1.11]	1.1 [1.07]	0.2 [0.09]	0.1 [0 07]	0 3 [0.09]	6.7 [0.97]	1.0 [0.26]
Total	54.2	102.7	212.7	136,8	308 8	691.5	726.2

Figures in paranthesis show per cent expenditure.

Planning Forums in Rajasthan
(A few Statistics)

I. The Beginning

1.	First Planning Forum founded in 1955	

II. The Enrolement & Actual Coverage

2.	Total Number of Registered Planning Forums by December, 1976.	103
	(a) P. G Colleges & Universities Planning Forums No.	25
	(b) Boys Degree Colleges „	66
	(c) Girls Degree Colleges „	12
3.	Total number of members enrolled during 1976-77	22,616
4.	Average Number of members for Planning Fornm	219·5

III. The Budget

5.	Money allotted to Planning Forums by the State Government	Rs. 78,000
6.	Money given by the Central Govt. as its share	37,760
7.	Average amount allocated to Planning Forums	757.28
8.	Per Capita Allotment of Grant by the Directorate	3·10

IV. Activities

9.	Number of Planning Forums which undertook survey work during 1976-77	34
	(a) Family Planning—	19
	(b) Other Topics—	15
10.	Orientation lectures organised for the Incharges of Planning Forums	03
11.	State Level activities undertaken by the Planning Forums.	
	(a) No. of Inter-College debates organised	14
	(b) No of Inter-College essay competitions arranged	24
	(c) No. of Educational Tours conducted	24
	(d) No, of Seminars/Symposia held	06
	(e) No. of Plan weeks celebrated	11

12. College Level activities organised by the Planning Forums of the Colleges

(a) Debating Competitions by	34	Institutions
(b) Essay Competitions by	32	,,
(c) Plans General Knowledge tests	39	,,

13. Total No. of Lectures/Talks delivered. 115 ,,

Table Showing Number of Planning Forums at Different Levels in Rajasthan During 1976-77

S. No.	Category	Boys Colleges			Girls Colleges			Total		
		P.G.	Degree	Total	P.G.	Degree	Total	P.G.	Degree	Total
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	Govt. Colleges	10	33	43	—	7	7	10	40	50
2.	Aided Colleges	7	15	22	2	2	4	9	17	26
3.	Non-aided Colleges—		13	13	—	2	2	—	15	15
4.	University Deptts. & constituent Colleges	3	5	8	—	1	1	3	6	9
5.	Deemed as University	1	—	1	—	—	—	1	—	1
6.	Medical Colleges	2	—	2	—	—	—	2	—	2
		23	66	89	2	12	14	25	78	103

Progress of Planning Forums

S. No.	Year of Starting	Name of College
1.	1955	1 Bhopal Nobles College, Udaipur. 2 Rajasthan University Economics Deptt. Jaipur.
2.	1956	1 B.I.T.S., Pilani 2 Jain Post-graduate College, Bikaner. 3 Seth G.B. Poddar College, Nawalgarh.
3.	1958	1 M.L. College, Jhunjhunu. 2 Agriculture & Economics Department, University of Udaipur, Udaipur 3 Chirawa College, Chirawa. 4 Government College, Ajmer. 5 Banasthali Vidya Peeth, Banasthali. 6 Government College, Kota.
4.	1960	1 Government College, Bundi. 2 Government College, Tonk. 3 R.R. College, Alwar. 4 Government College, Sriganganagar. 5 Chamaria College, Fatehpur. 6 Government College, Kishangarh. 7 School of Social Sciences & Humanities, University of Udaipur, Udaipur. 8 D.A.V. College, Ajmer. 9 Commerce College, Jaipur.
5.	1961	1 Agrawal College, Jaipur. 2 S.P.U. College, Falna.
6.	1962	1 Government College, Bhilwara 2 Government College, Dausa
7.	1963	1 S.D. Government College, Beawar 2 Government College, Kaladera 3 Lohia College, Churu 4 Government College, Kotputli 5 B.J.S.R. Jain College, Bikaner

8.	1964	1 Government College, Shahpura (Bhilwara) 2 School of Social Works, Udaipur 3 Government College, Sirohi 4 Government College, Barmer 5 Dungar College, Bikaner 6 Shramjeevi College, Udaipur
9.	1965	1 Government College, Chittorgarh 2 Government College, Jhalawar 3 Agricultural College, Sangaria 4 Government College, Baran 5 Khalsa College, Sriganganagar 6 M.S. College for Women, Bikaner
10.	1966	1 Government College, Ramgarh 2 B.D. Todi College, Laxmangarh 3 Government College, Nathdwara 4 Government College, Banswara 5 Government College, Neem-ka-Thana 6 Government College, Pratapgarh (Chittor) 7 Vidya Bhawan Rural Institute, Udaipur
11.	1967	1 Bangur College, Didwana 2 V.S.P. Shramjeevi College, Ajmer 3 Government College, Bhinmal
12.	1966	1 Government College, Nagaur 2 B.R.G. Government Girls College, Sriganganagar 3 Government College, Ladnu
13.	1969	1 Government College, Barmer 2 Bangur College, Pali 3 Government College, Sambhar Lake 4 J.D.B. Girls College, Kota 5 Government College, Jalore 6 Saboo College, Pilani 7 Government College, Sardarshahar 8 G.D. Girls College, Alwar 9 Government College, Dholpur 10 Meera Girls College, Udaipur

14.	1970	1 S.K. Government College, Sikar 2 Government College, Nasirabad 3 Government College, Bhilwara 4 Government College, Rajgarh 5 Savitri Girls College, Ajmer 6 Sona Devi Girls College, Sujangarh 7 Seth G.L. Bihani College, Sriganganagar 8 M.G. College, Sriganganagar 9 S.S. Jain Subodh College, Jaipur 10 Nehru Sharda Peeth, Bikaner 11 Government College, Sujangarh 12 Indira Gandhi Balika Niketan, Ardawata
15.	1971	1 Government College, Jaisalmer 2 Government College, Sawaimadhopur 3 Government College, Karauli 4 Gyan Jyoti College, Srikaranpur 5 M.D. College, Sriganganagar 6 Kanoria Mahila Vidyalaya, Jaipur 7 University Maharaja's College, Jaipur 8 Nehru College, Hanumangarh 9 University Maharani's College, Jaipur
16.	1972	1 Gomati Devi College, Baragaon 2 Government Girls College, Bharatpur 3 Lal Bahadur Shastri College, Jaipur
17.	1973	1 Satya Sai College, Jaipur 2 Mohta College, Sadulpur
18.	1974	1 Omkar Mal Somani College, Jodhpur 2 Jawahar Vidya Peeth, Kanore
19.	1975	1 Shri Jain Terapanthi College, Ranawas 2 Pragya College, Bijainagar 3 Adarsh Degree College, Ajmer 4 Lachoo Memorial College, Jodhpur 5 S.M.S. Medical College, Jaipur 6 Nehru College, Deoli 7 Sona Devi Sethia Girls College, Sujangarh
20.	1976	1 R.N.T. Medical College, Udaipur 2 S.K.N. College of Agriculture, Jobner

Per Capita Income in Different States in 1974-75

Name of the State/Union Territory.	In Rupees
Delhi	2130
Punjab	1580
Maharashtra	1330
Goa	1689
Haryana	1217*
Himachal Pradesh	1050
West Bengal	1046
Gujrat	1038*
Andhra Pradesh	919
Jammu & Kashmir	883
Kerala	861*
Tamil Nadu	851
Assam	850
Rajasthan	819*
Madhya Pradesh	793
Karnataka	785
Orissa	785
Uttar Pradesh	781
Manipur	740
Bihar	718

* 1975-76

4

PLANNING FORUMS:

A Brief Review of the Progress of the Movement 1968-69 to 1975-76

As the movement has recently moved in the twenty second year of its career, there are distinct signs that the organisation has struck roots and is likely to grow into a vital movement. In this section we propose to make a brief review of the progress of the Planning Forums from 1968-69– the year in which the Directorate assumed the responsibility of guiding the Forums activities. Since a detailed account of the activities undertaken during 1976-77 follows in the succeeding chapter, a brief resume of the activities upto 1975-76 is undertaken in this section.

The Early Phase, 1968-70

The Scheme as pointed out earlier, during the first thirteen years was implemented by the Government of Rajasthan under the supervision of the Planning Department. Hence the discussion of the activities of that period is beyond our purview.

The period of first two years under the control of the Directorate should in all fairness, be treated as incubation period. The activities of Forums, in these early years, were primarily confined to collection of Plan-literature, arranging popular lectures on various aspects of Planning, conducting seminars

and discussions to generate plan-consciousness. The Forums primarily concentrated on discussions on the usefulness of small savings, celebration of National Plan weeks, economic surveys of villages in community development areas, 'Shramadan' for building village roads, cultural shows in rural areas on matters relating to plan, regular visits by the members of the Forums to study the reactions of villagers regarding the national development work being done in the area, etc Another activity popular among the Planning Forums was educational tours to Plan sites such as Bhakra Nangal Project, Rana Pratap Sagar, Atomic Energy Plants and the like. Most of the Degree Colleges did not take much interest in these activities. The activities were mainly supported by grants from the Government, and by the nominal fees collected from the members of the Planning Forums, which was voluntary.

Session 1971-72

Besides conducting debates, arranging seminars, workshops, lectures, talks, essay competitions, general knowledge tests, etc. on aspects and problems of Planning and Development in Rajasthan and India with specific purpose of making the students/teachers and through them the community Plan-minded and Plan-conscious. Out of 85 Forums 21 Forums of the State were suggested the following specific areas of survey.

Name of the College	Project
	A Socio-economic Survey of village Makhupura.
V. S. P. Shramjeevi Evening College, Ajmer.	A Survey of the Socio-economic Impact of Urs Fair on the City of Ajmer.
S. D. Govt. College, Beawar.	A Socio-economic Survey of Jawala village.
Dungar College, Bikaner.	A Case Study of Milk Supply in the City of Bikaner.
Jain College, Bikaner.	The Socio-economic Survey of a Nearby village.
M. L. V. Govt. College, Bhilwara.	A Survey of the Socio-econnmic Conditions of the College Students.
Govt. College, Bhinmal.	A Survey of the Working Conditions of Shoemakers in Bhinmal.
Chirawa College, Chirawa.	Survey of Progress of Green Revolution in Chirawa & Neigbbouring Villages

Government College, Dausa.	The Sacio-economic Survey of a Neighbouring Village.
S. P. U. College, Falna.	A Survey of Dietary Conditions of Different Classes of People of Falna.
Nehru Memorial College, Hanumangarh.	A Case Study of Agricultural Income-tax in the Villages of Hanumangarh.
S. S. Jain Subodh College, Jaipur.	A Socio-economic Survey of the Conditions of of Labourers Employed in the Jewellery Industry in the City of Jaipur.
Seth Moti Lal College, Jhunjhunu.	A Survey of the Potential and Prespects of Cottage Industries in Jhunjhunu District.
Government College, Kota.	A Survey of the Problems of Housing of Industrial Labour in the City of Kota.
B. D. Todi College, Laxmangarh.	A Survey of Rural Indebtedness in Village Bidasar.
Govt. College, Nathdwara.	Impact of Rural Electrification on Agricultural Productivity.
Govt. College, Nagaur.	A Socio-economic Survey of Students of Government College, Nagaur.
Govt. College, Sambharlake.	A Socio-economic Survey of Village Tyed.
Govt. College. Ganganagar.	A Socio-economic Survey of Conditions of Rickshah pullers within the Municipal Limits of Sriganganagar.
Vidya Bhawan Rural Institnte, Udaipur.	Rural Socio-economic Survey.
Udaipur School of Social Work, Udaipur.	A study of Prohibition and Its Impact Upon Tribals.

Session 1972-73

During the session under review 4 more Planning Forums were started and thus from 84, the number of Forums became 89. Most of the centres organised educational tours to the Industrial colonies, Project sites of national importance and held symposia on inflation and on programmes like welfare of Jawans

families, relief and rehabilitation, industrial policy of Covernment of India, Fifth Five Year Plan, Achievements of Five Year Plans in India, Problem of Educated unemployment, Role of Science in Economic Development of India, Nationalisation of Banks, Cooperative Farming, etc. The Directorate made vigorous efforts to gather important literature of Rajasthan particularly in respect of Industry, Labour, Cooperation, Agriculture, Planning, and got it distributed amongst various Colleges of the State. 17 Colleges were selected for special lectures. The names of some of the surveys which earned the praise of the people are mentioned below :

G.D Girls College, Alwar	The Socio-economic Survey of Roophas Village, near Alwar.
B.J.S. Rampuria College, Bikaner.	Socio-economic Survey of Shivbari,
Nehru Memorial College, Hanumangarh.	Socio-economic Survey of Landless Labourers of a Small Village Jaltani, Hanumangarh.
Seth Motilal Colleg, Jhunjhunu.	A Special Survey Project of Jhunjhunu. District for Small Scale Cottage Industries.
Government College. Nathdwara.	The Survey on Rural Electrification and Its Impact on Agriculture.
Government College, Pratapgarh.	The Socio-economic Survey of Village, Devgarh.
Udaipur School of Sociai Work, Udaipur.	The Socio-economic and Medical Survey in Village Nai, Kanpur, Bedla and Sakroda.

Session 1973-74

There was a further increase in the number of Planning Forums from that of the previous year. During the session under discussion, the number of Planning Forums rose up to 93. A wide variety of topics attracted the attention of the paper readers of different colleges. The most important of these were; Black Money in India, Industrial Development Problems in Rajasthan, Food Grains, Nationalisation, Inflation–causes and cure, Objectives of Indian Planning, Indian Policy and Industrial Development Essay competitions were held on aspects like Strategy of Planning in India, Fifth Five Year Plan–A survey, on Indian Planning and the Common Man, Role of Nationalisation of Banks, Nationalisation of Wholesale Business, Achievements of Planning. University of Jodhpur did commendable work by (i) organising an exhibition consisting of books,

diagrams, maps. charts, write ups on significant aspects, of economic planning in India at K.N.U. Hall for women, (ii) by displaying documentary films through the courtesy of the Field Publicity Officer, Govt of India, Jodhpur, and (iii) by arranging symposium on Approaches to Fifth Five Year Plan.

Besides the above mentioned activities, the Planning Forums of different Colleges and Universities of Rajasthan under took the following surveys to make the students and community around plan-conscious.

S D. College, Beawar.	The Survey on Rural Indebtedness—A Case Study of Jawaja Village.
Government College, Churu.	Socio-economic Survey on Harijans of Churu Town.
S.P.U. College, Falna.	The Survey on Economic Conditions of Labourers Engaged in Development of Godward area.
Govt. College. Nasirabad.	The Economic Survey on Students who Passed out Final Year T.D.C. from the College During 1972-73.
Govt. College, Pratapgarh.	Socio-economic Survey of a Village near Pratapgarh.
Govt. College, Ganganagar.	Survey on Unemployment Problems in Ganganagar.
Udaipur School of Social Works, Udaipur.	Survey Work on Unemployment as Udipur District.

Session 1975-76 :

During this session 4 more new Planning Forums were set up. Thus, their number rose upto 97. This is the period of National Emergency, and, as was expected, almost every form was vying with one another in discussing the 20 Point Economic Programme of the Prime Minister, Indira Gandhi, Role of Emergency and Gains of Emergency were the other such topics. Documentary Films, Charts, Diagrams, Maps Exhibitions were arranged to highlight the economic development of the country. Other topics which caught the fancy of the academic world under the banner of Plannig Forums were Family Planning, Consumer Co-operative Stores and Their Role, Rural uplift, Poverty and Population Problems, Foreign Trade, Policy of Nationalisation, Iudustrial Development of

Rajasthan. Apart from these topics like Gandhian Economics, Export Promotion, Labour Problem, Labour Policy, International Womens' Year also figured in discussions. In this session, thanks to the Scheme of Book Bank, Institutions equipped their libraries with books dealing with economic issues of vital interest, with books on and about Planning and Development in India. Planning Commission also supplied books to the colleges. The most heartening feature of this sessions' Pianning Forums was their proper co-ordination and collaboration with the NSS activities. Planning Forums and the NSS tried to understand each others point of view, and having realised that their goals and aims being identical worked unitedly and did a lot for the socio-economic development of the colleges and for the neighbouring areas. 23 colleges conducted the following surveys :

Savitri Girls College, Ajmer.	—	Brief Surveys of (i) Housing Problem of Industrial Labour, (ii) Post-Matriculation Government Scholarships to S.C. and S.T. Women candidates in Ajmer.
Vijai Singh Pathik Shramjeevi College, Ajmer.	—	Urs Mela ka Samajik Sarvekshan (1970–75)
Govt. College, Baran.	—	Employment and Socio-economic Survey of Tehsil Hindoli.
S.D. Govt. College, Beawar.	—	Socio-economic Survey of A.C. Pipe & Fittings Industry in Beawar.
Govt. College, Chittorgarh.	—	The Socio-economic Survey of Sethi Village.
Govt. Lohia College, Churu.	—	A Study Report on Income & Expenditure of Village Somari (Distt. Jhunjhunu).
Seth G.R. Chamaria Gollege, Fatehpur.	—	A Report on the Study of Rural Economy in the Light of New Economic Programme.
Kanoria Girls College, Jaipur.	—	The Survey of Workers of Jhotwara Industriai area.

Moti Lal College, Jhunjhunn.	—	Working of Co-perative Banks in Jhunjhunu District.
Govt. College, Karauli.		The Socio-economic Survey of S. C. and S. T. People in Karauli.
Govt. College, Kota.		The Project Work on Higher Education Facilities Availed by Students Belonging to S. C. and S. T. in the Kota Town.
Govt. College, Kaladera.		Economic Survey of Cloth Printing (Small Scale Industry).
Govt. College, Nathdwara.		Socio-economic Survey of Villege Odai.
Govt. College, Pali.		Economic Surveys (i) Balral villege of Pali and (ii) S. T. and S. C. of Sarvodayanagar, Pali.
Govt. College, Pratapgarh.		Socio-economic Survey of Shahpura Village.
Govt. College, Rajgarh.		Survey of Housing Problems of S. C. Govt. Servants in Rajgarh Municipality.
Govt. College, Sambharlake.		Economic Survey of Dudu Panchayat Samiti on 'Applied Nutrition Programme'.
Mohta College, Sadulpur.		Socio-economic Survey of Village Badwa.
Govt. College, Shahpura.		Evaluation of (i) Tutorial Scheme. (ii) 20 Point Programme & Success.
Govt. College, Sriganganagar.		Survey on the Leper Programme in Ganganagar.

Meera Girls College, Udaipur.	The Survey on Assessment of 20 Point Economic Programme of Village Mandal and Nearby Areas of Udaipur.
Bhopal Nobles College, Udaipur.	Survey Report on the Impact of 20 Point Economic Programe in Village Nai.
Pragya College, Bijainagar.	A Report on Socio-economic Survey of Student of Sri Pragya College.

5

PLANNING FORUMS

Reports on Activities from Colleges And Universities During the Session 1976-77

When the Planning Forums were started originally, during the First Plan period, their interest was purely of an academic nature. Then, during the Second Plan period, the scope of activities of the Forums was widened. They were asked to help in the implementation of plan programmes. The new functions assigned to them included dissemination of information about various aspects of planning among the general public, organising saving drives, conducting village surveys, rendering social service to the neighbouring community, etc., Now, the activities of Planning Forums have gone wider : the emphasis is more on practical training.

Planning Forum News

The Planning Forum activities which took place during 1976–77 can be grouped under two heads : first, the normal, regular activities during the term period for all students enrolled under the Planning Forum; and second, the special surveys undertaken. The brief reports from the educational institutions of Rajasthan, reproduced below, make an interesting reading.

A. UNIVERSITIES

The University of Rajasthan, Jaipur

1. The Planning Forum of **the Department of Economics of the University** in collaboration with **the Economic Society.** organised a debate on the topic—'In the opinion of the House Parliamentary Democracy has stood in the way of rapid Economic Growh in India' and undertook an industrial tour to Udaipur. The Forum wanted to conduct a survey on problems of Educated Entrepreneurs in Industrial Estate, prepared a questionnaire, but could not undertake it due to preoccupations and heavy rush of work. The Forum, however, hopes to complete it in the next session.

2. Besides, arranging a symposium on 'Wild Life: Why Preserve It ?' and an essay competition on 'Our Vanishing Arts,' the Planning Forum of **the University Maharaja's College,** held an All India Debating Competition on 'Modernity & Tradition' in which the students from different colleges of Rajasthan actively participated. A team of 15 Forum students visited Ghana Birds Sanctuary, Bharatpur.

3. The Planning Forum of the **University Commerce College** with a team of 38 members arranged General Knowledge Competition and All Rajasthan Inter-Collegiate Debate Contest on 'Population, Poverty and Future of India.'

4. The Planning Forum of the **University Rajasthan College** with its enrolled strength of 50 volunteers, organised an essay competition on 'Twenty Five Years of Indian Planning' and a debating competition on 'Poverty and Population Problem' and a symposium on 'Economic Development of Rajasthan during the Plan Periods.' The Forum also conducted a survey with a view to assessing 'the Knowledge, Attitute and Practice of Family Planning in Jaipur City'.

5. The Planning Forum of the **University Maharani's College** arranged an educational tour to village Chaparwara in which nearly 100 girls participated under the supervision of 5 lecturers. They met the villagers, enquired about their means and methods of production and sources of livelihood. Subjects like the role of modern implements, use of improved seeds of food grains and fertilisers, facilities provided by the Government, credit facilities, sources of irrigation figured in discussion. The villagers talked to the students without any hesitation on all subjects leaving Family Planning. The girls came to know that some 50% of the villagers are benefitted by the irrigation facilities provided by Chaparwara Bund. The students visited the 'Bund' and gathered information about the catchment area of the project.

The University of Udaipur

The Planning Forum of the **School of Basic Sciences & Humanities** has a sizeable membership of 175 students. It realised Rs. 7/- as fees from each of its Post-Graduate members and Rs. 3/- from the Under-Graduate members. The wide variety of activities taken up by the Forum testified that it is one of the most active Forums in the State of Rajasthan. Activities of the Forum were inaugurated by Shri I. G. Jhingran, I. A. S., Managing Director of the R. S. S. M. Ltd., who enlightened the members on 'Benefication Process of Rock Phosphate of Jamar Kotra Mines'. An excursion to the historic fort of Kumbhalgarh was undertaken. Talks were delivered on the topics of immediate and abiding interests by eminent persons : Dr. T. P. Jain and Dr. L K. Jain spoke on 'New Strategy for Population', Dr. B.K. Tandon on '42nd Constitution Amendment (in co-sponsorship with Lions Club and Indian Council of World Affairs and Planning Forum), McLeski of Virginia University on 'Presidential Election in the U. S. (under joint auspices of the Departments of Sociology and Political Science), Shri B L. Dhakar on 'Appraisal of the Final Fifth Five Year Plan' Shri Bhagwat Singh Bhandari, a senior Advocate on 'Rural Poverty' and Dr. K. K. Jacob, Principal, School of Social Work on 'Socio-Economic Development' with particular reference to his recent foreign tour of Hongkong. Papers were presented by the students on 'Impact of 20 Point Economic Programme' 'Union Budget for 1976-77' 'Linear Programming' 'Economics of Oil.' The Forum members participated in seminar on' Bi-centennial in World Perspective' organised by U. S. I. S. at Lake Palace, Udaipur, in National Seminar on Planning Forums held at Vigyan Bhawan, New Delhi, and in the 18th Rajasthan Economic Conference at Beawar. This apart, the Forum members took active interest in several other local and State level debating and essay competitions. Major thrust all through has been given to the academic sides.

B. DEEMED AS UNIVERSITY

Birla Institute of Technology & Science, Pilani

The activities of the Planning Forum of this well-known college started with a fruitful discussion on 'Why And Wherefore of Planning ?' This purposeful activity was arranged with the intention of clearing the doubts and misconceptions of the people about planning. It was followed by a talk by Dr. Bhandhopadhyaya on 'Multi-level Planning and Role of Banking in Planning'. Furthermore, to invite the attention of the students on planning in real life and the problems

involved in it, the Forum asked some of the students to explain how they chalked and planned out their activities. In addition, on Saturdays, the Forum had group discussions on various planning and economic aspects of national importance. Two surveys—one on the 'Role of Cooperatives in Pilani Tehsil and their Effectiveness after the Emergence of the 20 Point Programme', and the other on the 'Problems of the Small Scale Industries of Pilani Region'—were undertaken. The Forum published a magazine called PLANNUM with a view to disseminate information regarding various aspects of Planning.

C. MEDICAL COLLEGES

1. R. N. T. Medical College, Udaipur

With the enrolled strength of 50 students, the Planning Forum of the College organised an essay competition on 'Immunize and Protect your Child,' a drawing competition incorporating the theme of World Health Day, an elocution contest on 'If I were Health Minister of the Country' and a Popular lecture, in collaboration with the Nutrition Society of India, Rajasthan, Jaipur on Nutrition which was delivered by Dr. K. T. Acharya, an eminent nutrition scientist.

2. Sawai Man Singh Medical College, Jaipur

About 150 students under the Inchargeship of Dr. K. P. Khunteta visited some of the slum areas of Jaipur and made available certain medical facilities to the people. Guidance was also given to the people about health care, food, child care etc., so that they may be able to keep away from diseases. By this visit the medical students could come into direct contact with the people of slum areas and also could study their living conditions.

D. COLLEGES AFFILIATED TO THE UNIVERSITY OF RAJASTHAN

1. Adarsh Girls Degree College, Ajmer

With a view to generating plan consciousness among the girls, the Planning Forum of the college organised a symposium on 'Indian Plans and Eradication of Poverty', a debating competition on 'Five Point and Twenty Point Economic Programme,' an essay competition on 'Population Policy and Family Planning' and a lecture on '25 years of Economic Development of Rajasthan.'

1851

2. Dayanand College, Ajmer

The Planning Forum of the college arranged two essay competitions—one on '20 Point Economic Programme' and the other on 'Achievements of Indian Planning'. a symposium on 'Population and Economic Growth' and a visit to Daurai village for making inquiry about farmer's problems. The Forum also undertook two surveys : first, with a view to comprehending the response of the masses to 20 Point Economic Programme in the village, Srinagar, District Ajmer, and the second to ascertaining the problems of the handicapped of the city.

3. Government College, Ajmer

The Planning Forum of the college organised a wide variety of activities like general knowledge tests, essay and debating competitions, a film show on 20 Point Economic Programme and extension lectures on such topics as 'Industrial Policy and Gandhism,' 'Economic Development of Rajasthan under plans,' 'the Technical Aspects of Planning.' Among the principal speakers were Professor B. K. Tandon, University of Udaipur, and Mr. M. S. Mogra. Deputy Secretary to Govt. The college Forum also arranged activities in collaboration with other local and neighbouring colleges. In addition to these, the Forum undertook a survey on 'Problems of Educated Unemployment in Ajmer.' The college gave a lead by bringing out a special Supplement of COMMERCIA under the caption '*Economic Development & Planning in India.*' Apart from covering topics dealing with almost every phase of planning, this publication succeeded in one way more; it involved teachers, students, administrators, educationists and ministers at one platform.

4. Savitri Girls College, Ajmer

With a team of 26 members, the Planning Forum of the college, celebrated the Planning Forum Week from the 9th to 15th January, 1977, and organised a competition on 'Progress of Rajasthan Under 20 Point Economic Programme,' conducted a symposium on 'Measures to Correct Economic Crimes,' convened a lively debate on 'Legislation Alone Can Solve the problem of Dowry in India.' Seven local colleges were invited to participate in the programme and winners were awarded prizes. Among the prominent members who delivered extension lectures were Hon'ble Justice B. P. Beri who spoke on the 'Impact of Legal Changes on the Economy of India' and Shri R. K. Jain on 'Internal Rate of Return of Projects of Economic Growth in India.' The Forum also conducted a survey on the problem of Rehabilitation of Crippled in Ajmer.'

5. G. D. Govt. Girls College, Alwar

Besides organising the college level and Inter-college level essay and

debating competitions, the Forum of the College got prepared charts and diagrams showing the economic development of the country. A one day camp was also set up in village Samola for making socio-economic survey, 50 girls participated in it. The College charged Rs. 2/- from each of its 135 members to raise the fund of the Forum.

6. R. R. College, Alwar

Among the main activities of the Planning Forum of the college, the worth-mentioning are : a debating contest on 'Only Youth Can Bring About Socialistic Society in India,' and on the spot general knowledge test, and a symposium 'Democracy & Economic Development.' The activities of the Forum were inaugurated by Shri Ram Singh Yadav, former Deputy Speaker, Rajasthan State Assembly who enlightened the audience about the gains of emergency in Rajasthan. Besides surveying the socio-economic system of village Burja, the members of the Forum planted trees, started adult literacy centre in the same village. The Forum also established cordial relations with the developmental authorities of the city and there by won their cooperation in every constructive academic activity of the Forum.

7. Government College, Barmer

The Forum organized many activities which included an essay competition on 'Population Problem & Government Policy,' 'Economic Vocabulary Test', 'General Knowledge Test', paper reading on 'Population Problem' and an extension lecture on 'Taxation.' 'Shramdan' and tree plantation were also undertaken, Inter-collegiate essay competition on '42nd Constitution Amendment', and an all India essay competition on 'Economic Revolution is Meaningless Without Moral Revolution' were also held. The Planning Forum of the College realised Rs. 3/- as membership from each of its 73 members, and thus raised the funds for carrying on activities of the Forum.

8. Government College, Banswara

The Planning Forum started its activities with the paper reading on 'Population Problem and the New National Policy.' This was followed by a lecture on 'The Role of Banks in Economic Development of the Country.' Members of the Forum participated in an all India essay and debating competition. Books and magazines and charts dealing with the economic progress of India were displayed in the Information Centre of the Forum. An educational tour to Mahi Bazaz Sagar Project and a survey of Lodha Village for investigating the 'knowledge,

attitude and practice of people about Family Planning' were undertaken. Dr. R. N. Chowdhari, former Director, College Education, Rajasthan, Jaipur, gave away the prizes to the active and meritorious members of the Forum.

9. Government College, Baran

The Forum conducted an essay competition on 'The Socio-economic Consequences of the 42nd Constitution Amendment' and on 'Group Marriages.' It also arranged extension lectures on 'New Economic Programme & Economic Planning in India' and on 'New Economic Programme and the Fifth Five Year Plan', made extensive publicity of 20 Point Economic Programme, planted trees, beautified college campus, did 'Shramdan', celebrated Plan Week and conducted a survey on Family Planning. The College Planning Forum charged Re. 1/- as enrolment fee from each of its 76 members.

10. G. D. College, Baragaon

The Planning Forum of the College organised the following activities :—a seminar on 'Development of India Under Planning,' a symposium on 'Success of Indian Planning,' an all Rajasthan Inter-Collegiate debate competition on '20 Point Economic Programme' and all Rajasthan essay competition on 'Development of India and 20 Point Economic Programme.'

11. B. V. Gyan Vigyan Mahavidyalaya, Banasthali Vidyapeeth

The Planning Forum with its 36 members, organised activities including lecture on 'Bhartiya Artha Vyavastha — Ek Mulyankan' delivered by Professor P. N. Mathur, Shiksha Upadhyaksha, surveys dealing with (i) Development, Planning, Achievements and Resources of Tonk District (ii) Self-employed Entrepreneurs and (iii) Handicapped Persons. The Forum also displayed in its Information Centre literature related to 20 Point Economic Programme.

12. Shri Pragya Mahavidyalaya, Bijainagar (Distt. Ajmer)

The Planning Forum of the College organised such activities as the essay competitions on '20 Point Economic Programme,' 'Nation & the Youth Force,' a debating competition on 'In the opinion of the House, Indian Planning has been Helpful in the Economic Development of the Country,' talks on 'Planned Development,' 'Importance of Planning' and 'Gains of Emergency.'

13. Jain P. G. College, Bikaner

The Planning Forum organised Inter-class and Inter-college level debates on topics like 'Dowry System' and 'In the Opinion of the House Mental Peace & Contentment is Better than Physical Prosperity.' A general knowledge test was held, Plan literature was displayed in the Plan-Corner of the Forum, a survey on 'Problems of Educated Entreprenuers in the Industrial Area of Bikaner' was also undertaken.

14. M. S. Girls College, Bikaner

The College organized actvities which included three extension lectures covering such aspects as 'International Economic Cooperation & Modern Strategy,' 'International Monetary Fund & Its Future', '20 Point Economic Programme— Its Practical Aspects & Steps Taken so Far'; an Inter-collegiate debating competition on 'In the Opinion of the House Economic Revolution is Meaningless Without Moral Regeneration' a state level essay competition on 'The contribution of 20 Point Economic Programme in Lessening Disparity of Income,' an educational tour to Khetri Copper Complex and a survey work on 'Vocational Interest of the College Students'. The College charged Rs. 3/- as enrolment fee from each of its 107 members studying Economics.

15. Government College, Bundi

The Planning Forum of the College cast its net wide by undertaking almost all sorts of activities for generating plan awareness among the students. Major activities organised included short lectures on : (i) 20 Point Economic Programme, (ii) Various aspects of Five Year Plans & Indian Economy, debates and discussions on Mixed Economy, essay competitions on 'Achievements of Indian Planning & Achievements of 20 Point Economic Programme,' general knowledge tests, extension lectures on 'Challenges Before the Developing Countries with Particular Reference to India,' 'Indian Planning : Organisation and Achievements,' 'Development of Bundi District', and a survey on the topic 'Knowledge, Attitude and Practice of Family Planning in Bundi.'

16. Government Girls College, Bharatpur

Besides arranging talks, essay and debating competitions on various aspects of Indian Planning and Economy, the Forum organised an extension lecture on 'Planning in India' delivered by Shri S. C. Tela, Principal, S. P. U. College, Falna. A survey was also undertaken with a view to ascertaining Knowledge, Attitude and Practice of Family Planning in Bharatpur.

17. M. L. V. Government College, Bhilwara

The Planning Forum of the College organised the following activities :— three essay competitions—one for the Post-graduate students on 'Role of Social Factors in Economic Development,' the other for Under-graduates on 'Evaluation of New Economic Programme in Rajasthan' and the third—short essay competition of general nature on 'Conditions for successful Planning in India,' extempore talks, competition on New Economic Programme, General Knowledge test, charts competition, depicting the progress of Rajasthan and India under New Economic Programme, lecture on planned way of solving the problem of Air Pollution in India, articles on Fifth Five Year Plan in Rajasthan, two surveys one on Operation of Differential Interest Scheme for the Assistance of weaker Section under the Public Sector Banks, Bhilwara and the other dealing with physically disabled persons in Mandalgarh.

18. Government College, Bhinmal

The Planning Forum of the college organised a 'Plan Week' during which essay competition, graph and diagram competition, general knowledge test and a symposium were organised. An extension lecture on 'Regional Rural Banks in India' was also organised. Planning Forum members also did 'Shramdan' for cleaning fields and pits for tree plantation. A case study of Raniwada Dugdha Dairy was made by a team of students. To disseminate the knowledge about the progress of the Plans, a team of 10 members visited a few villages. The visit was very successful and useful as the rural folk commended the efforts made by the students.

19. S. D. Government College, Beawar

The Planning Forum of the college planned a wide variety of chosen activities such as essay and debate competitions on 'Achievement and Implementation of 20 Point Economic Programme in Rajasthan,' and 'Rising Prices' respectively, survey work on Family Planning with a view to comprehending facts about its knowledge, attitude and practice. The Planning Forum members also did 'Shramdan.'

20. Chirawa College, Chirawa

The Planning Forum of the college studied demand and supply of agricultural inputs in Lakhhu village and also did a survey of persons who could take up family planning in Municipal Wards No. 15 and 16 in Chirawa Town. Members of

the Forum extended help in the projects undertaken by the N. S. S. The Forum students staged an interesting programme emphasizing the core points of national development, created congenial climate for adoption of Family Planning. The Programme was inaugurated by the Collector & District Magistrate, other District and Developmental authorities also participated. The Forum launched a campaign for Small Savings.

21. Government College, Chittorgarh

The Planning Forum of the college celebrated Plan Week from 13 through 20 November, 1976. An inter-collegiate essay competition on 'Achievements and Implementation of 20 Point Programme in Rajasthan', was also organised. Four papers on topics related to Planning were read and a debate on 'Rising Prices' was held. The members also did 'Shramdan' in collaboration with NSS students. A socio-economic survey about knowledge, attitude and practice of Family Planning of residents of Ochari village was conducted. The Plan Information Centre is also being enriched regularly, so that the knowledge about Plan progress is disseminated amongst the students.

22. Lohia College, Churu

The activities of Planning Forum of the college were inaugurated by Shri Ajaya Dube, Collector of the District. Subsequently, a wide variety of activities ranging from essay and debating competitions on '20 Point Economic Programme and Economic Development of the Country' Plan Knowledge Test, paper reading on topics like 'Public Enterprise & Price Policy,' The Problem of International Liquidity,' The Progress of India During Plans,' 'Public Enterprises & Organisational Patterns' etc. were planned. Seminars on 'International Monetary Development' 'Oil Crisis & International Economy' were also arranged.In addition to undertaking an educational-cum-site seeing tour to Pilani and Khetri Copper Project, the Forum conducted a survey on the problems of such educated entrepreneurs as have set up small scale industries in Churu.

23. Bangur College, Deedwana

The Planning Forum carried on activities like paper reading on 'Exchange and Money Control by Reserve Bank of India', debating competition on 'The Economic Development of the Country depends on Higher Expenditure on Social Welfare Activities rather than on Production', a general knowledge test on Economic Terminology, an essay competition on 'Unemployment—Cause & Cure', a

survey on 20 Point Economic Programme and the Development of Deewani Tehsil. An educational tour was undertaken to Makrana marble mines from which members learnt a lot about digging, cutting, carving and idol making.

24. Government College, Dausa

The Forum of the college set a worth emulating example by harnessing local resources to supplement the grant-in-aid of Rs. 1000/- of the Government. Besides charging Rs. 2/- from each of its 150 members, it collected Rs. 3,850/- through advertisement for the publication of a magazine dealing with its adopted village Bhandana. The Forum conducted a general knowledge test, a debate competition on the topic 'In the opinion of the House the Creation of Socialistic Society is possible only through Youth' and a symposium on 'Stages of Development.' Inter-collegiate short story and essay competitions were held on themes like Dowry system, Rural Uplift, Prohibition, Cooperation, etc. An extension lecture on 'Strategy for the Formation of Socialistic Society' was delivered by Dr. B. C. Mehta, Reader, University of Rajasthan. In the Plan Information Centre charts, maps, diagrams dealing with the progress of the counry were displayed. The Forum of the college earned the praise of the people not only because it adopted village Bhandana, as part of its NSS and Planning Forum activities, but also because it brought out a Souvenir with a view to generating plan consciousness among the rural populace. Among the contributors were persons of the eminence of Shri Shanker Gosh, former State Minister for Planning, Delhi, Shri Devi Lal, Director, Bhartiya Lok kala Mandal, Udaipur, Dr. M. K. Doshi, Director, Pashu Palan and the magazine covered multifarious aspects like; 'Planning and Economic Structure : Present Challenges', 'Traditonal Folk Art', 'New Economic Programme & Rural Development', 'Animal Rearing', 'Gobar Gas', 'Agricultural Development of Rajasthan : An Evaluation', 'Problem of Drinking Water in Villages' and 'Banking System in Rural Areas' etc.

25. Nehru College, Deoli (Tonk)

The College Planning Forum gathered Rs. 114/- as membership contribution from its 57 members. The Collector & District Magistrate of Tonk inaugurated the Forum activities. In addition to extesion lectures Inter-collegiate debate and essay competitions on 'Country's Development is Possible Only Through Socialism' and 'Achievements of New Economic Programme in Rajasthan' respectively; the Forum undertook an educational tour to Rawat Bhata and Rana Pratap Sagar Dam with a view to keeping abreast the students with the progress made by

Symposium on 'Different Dimensions of Development' held at Government College, Dausa.

Planning Forums—They disseminate Plan information.

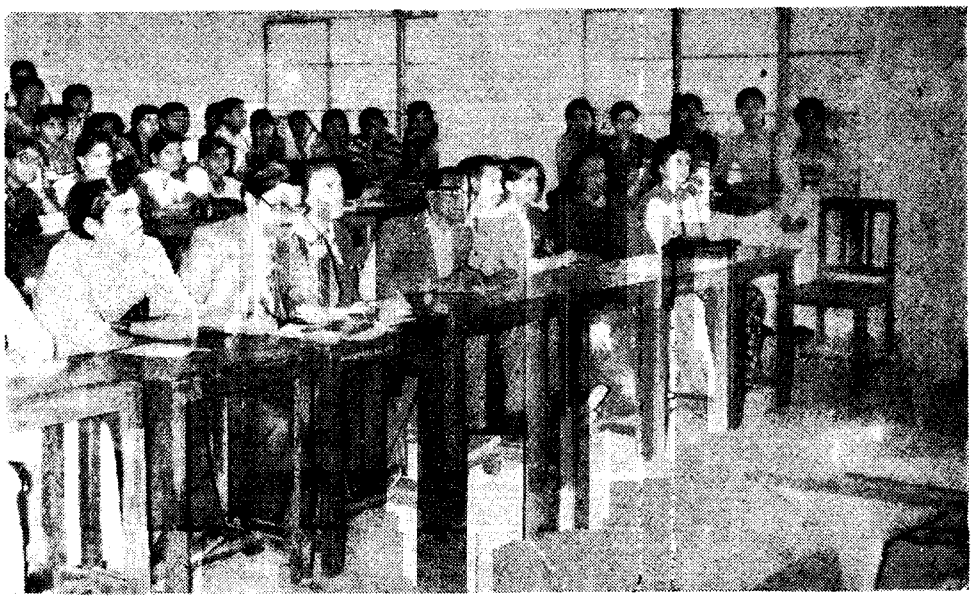

An Orientation Lecture in Process.

Principal **Upadhyaya** giving thanks at a symposium held at Deoli (Tonk)

the country in the field of irrigation, atomic energy and hydro-electrcity. Apart from this Forum took up survey of Demand and Supply of Agricultural Inputs in Deoli town.

26. Government College, Dungarpur

With a sizeable strength of 137 members the Planning Forum organised a wide variety of activities including extension lectures on 'Input-Output Technique & Planning in India', 'Credit Facilties Available to Farmers and Entrepreneurs' 'Aspects, Activities & Future Prospects of Gyan Kendras' 'Planned Development of India & Prospects of Fifth Five Year Plan'. Among the main speakers were persons of eminence like Dr. D. R. Veena, of Sardar Patel Institute of Economics & Social Research, Ahmedabad and Mr. M. A. Modi, Manager State Bank of Bikaner and Jaipur. A Symposium was conducted on 20 Point Economic Programme. Students paid a visit to nearby villages Biladi, Navadera, Mathngamda. A survey for ascertaining the knowledge, attitude and practice of Family Planning among tribals was also carried out.

27. Government College, Dholpur

The Planning Forum of the college realised Re. 1/- as enrolment fee from each of its 80 members and did commendable work, indeed in the field of small savings. It succeeded in opening 200 accounts in the State Bank of Bikaner & Jaipur. Besides conducting a general knowledge test, the Forum sent members to represent the Inter-collegiate debating competition held at Sambharlake.

28. S. P. U. College, Falna

The Planning Forum collected Rs. 52/- from its 52 members as their contribution. It organised activities in and around the college to generate plan consciousness. Some of the activities undertaken by the Planning Forum include a seminar on 'Role of Students in the Implementation of 20 Point Economic Programme' a talk on 'Planning Problems' an essay competition on 'Achievements of 20 Point Economic Programme' and a survey on Family Planning.

29. Seth G. R. Chemaria College, Fatehpur (Shekhawati)

Membership of the Planning Forum being compulsory, the Forum charged Re. 1/- from each of its 316 members and organized the following meaningful

activities, like group discussions on Family Planning, 20 Point Economic Programme, Role and Contribution of the Youth in the Nation Building Programme, lectures on various aspects of Planning with particular reference to Fifth Five Year Plan. District level essay competition on 'Population & Economic Development' was also organized.

30. Agrawal College, Jaipur

The activities undertaken by the Planning Forum of the College are : general knowledge test, an essay competition on the theme 'Economic Planning in India in the Present Context', a survey work on 'Existing Educational Facilities Available in Return to the Occupational Needs of the Backward Classes.

31. Kanoria Mahila Mahavidyalaya, Jaipur

The Planning Forum of the college organised a series of lively talks on 'Poverty, Equality and Development', 'Rajasthan Canal', 'Women's Education & Employment', 'Economic Systems & Economic Development', 'Trends and Problems of Indian Economic Development', 'Agricultural Price Policy' and 'International Liquidity'. The talks were delivered by Dr. (Mrs.) Kanta Ahuja, Shri Hari Singh, Shri R. S. Gupta, Dr. L. M. Mishra, Shri Laxmi Narain, and Dr. G. S. Shekawat respectively. A symposium on '20 Point Economic Programme and Rural Economic System', a general knowledge test, an essay competition on '20 Point Economic Programme and the Common Man', a survey dealing in the Printing Industry of Sanganer are the other remarkable activities of the Forum.

32. Pareek College, Jaipur

The Planning Forum of the college organised essay and debate competitions on The Role of Public Sector in Economic Development of India' and 'The Bank Nationalisation' respectively. Besides this, a talk by Dr. G. S. Shekhawat, was also arranged for the benefit of the members of the Planning Forum.

33. Sri Sathya Sai College, Jaipur

With a sizeable team of 135 members the Forum of the college held Quiz Competitions and group discussion on '20 Point Economic Programme', arranged lectures on 'Rural Economy', 'Indian Agricultural Economy', 'Importance of Plans', 'Role of Banks', convened Inter-collegiate Debates on 'Nationalisation of Banks' in

which Rajasthan and Commerce Colleges participated. In addition to these activities the Forum of the college conducted a study of 'Occupational Aspirations of the Scheduled Caste Students of 'Harijan Basti', Jaipur, with the avowed purpose of knowing the relationship between the socio-economic status and the occupational aspirations of the youth of the 'Harijan Basti'.

34. Government College, Jalore

The Planning Forum of the college organised a talk on 'Plans & Planning Process', a lecture on 'The Planning Work of Jalore District with Particular Reference to Agricultural Potentialities in District'. Paper reading was done on 'The Role of L. I. C. of India', 'Indian Population & Economic Development' and an extension lecture was delivered on the topic 'The Recent Trends in Working of Regional Banks in India'.

35. S. B. K. Government College, Jaisalmer

With a team of 30 members, the Planning Forum undertook the following activities : a debating competition on the topic 'Social Welfare is Possible Only Through Youths of the Nation', an educational tour to Mandor Gardens (Jodhpur), a visit to Industrial Area, Dairy Industry, and Krishi Mandi of Jodhpur and a survey with a view to assessing the knowledge, attitude and practice of Family Planning in Jaisalmer town.

36. Seth Moti Lal College, Jhunjhunu

In addition to bringing out a handwritten magazine of about 400 pages, the Planning Forum of the college held Plan-consciousness test, Memory test, Inter-collegiate essay competition on 'Achievements of 20 Point Economic Programme', arranged lectures on Small Savings, Green Revolution, Community Development, National Integration and Panchayati Raj in Rajasthan. Another significant work undertaken by the Forum was the adult literacy drive, Primary reading and writing material was distributed amongst the villagers of Khajpur, Malsisar, Nayasar and night coaching classes were regularly taken at the various literacy centres.

37. R. L. Saharia College, Kaladera

The Forum supplemented Government grants by charging Rs. 2/- from

each of its 119 members and arranged symposia on (i) Population Problem and Need for Family Planning with special reference to the State Policy, (ii) Achievements of 20 Point Economic Programme, and (iii) Progress Towards Socialism in India. Debate competition was arranged on the Future of Democracy and Economic Disparity in India.

38. Government College, Karauli

Besides organising a lively discussion on the 20 Point Economic Programme and Economic Development of the Country, the Planning Forum of the college worked hard to create an atmosphere against the evil of Dowry System, engaged in 'Shramdan', undertook a survey on socio-economic conditions in Karauli sub-division.

39. Government College, Kota

The Planning Forum started its purposeful activities with a series of lectures : Shri P. C. Sethi, Addl. Commissioner, Chambal Command Area spoke on 'The Role of Management in Economic Development', Shri K. K. Mehrishi, Director, School of Basic Sciences and Humanities, on 'Impact of Current Economic Condition on Economic Thinking' and Shri M. S. Mogra, Deputy Secretary to Government of Rajasthan, on 'Priorities in Planning with particular reference to Rajasthan'. Besides, this the Forum undertook three surveys, viz. (i) Higher Education of Students belonging to S.T./S.C. in Educational Institutions of Kota Division and their Placement, (ii) Socio-Economic Survey of Village Borkhera (Kota) and (iii) Problems of Educated Entrepreneurs Setting up Small Scale Industries. The reports of these surveys are awaited.

40. J. D. B. Girls College, Kota

With a sizeable strength of 119 students the Planning Forum of the college organised various activities to promote plan awareness among the girl students of the college. A symposium on 'The Role of Banks in the Economic Programme', paper reading on '20 Point Economic Programme', essay competition on 'Population and Family Planning', Celebration of Plan Week, Literacy Drive, tree plantation, and Disrict level Essay Competition on 'Economic Democracy is the Main Product of Emergency' and other lectures were arranged by the Planning Forum.

'Plan Information Centre, Girls College, Kota

Delegates from Rajasthan attending "National Conference on Planning Forums" at New Delhi.

Judging the 'Chart Competition, Girls College, Kota.

An All India Debate at R. R. College, Alwar in progress.

41. Government College, Kotputli

The members of the Planning Forum, Government College, Kotputli (Jaipur), organised two extension lectures on 'Planning Forum and our Responsibilities' and 'Financial Organisation of Industries'. Small Saving drive amongst the students of the college got some success. This was organised by the Planning Forum.

42. M. B. Science College, Ladnu

The college Planning Forum besides organising an extension lecture on 'Future of Family Planning in India' organised essay competitions and a couple of talks by experts. The Forum also had a case study about the Knowledge, Attitude and Practice of Family Planning of the residents of Gopalpura village.

43. Shri Bhagwan Das Todi College, Laxamangarh

The Forum of the college realised Rs. 2/- from each of its 41 members in order to raise local funds. The Forum conducted general knowledge test, based on D. A. V. P. booklets, arranged extension lecture on 'Plan Strategy With Special Reference to Fifth Fiye Year Plan' an Inter-Collegiate essay competition on Importance of Small Savings in the Economic Development of India, and a survey on Family Planning.

44. Government College, Nagaur

The Forum started its activities with the inaugural address by Shri Narvani, A. D. M., Nagaur, who spoke on the 20 Point Economic Programme and the Planned Development. Subsequently, tree plantation work was taken up. Discussions were held about population problem, 5 Point Programme and the Role of Banks.

45. Government College, Nasirabad

The Planning Forum of the college charged Rs. 2/- as membership fee from each of its 40 members. The main activities taken up were paper reading, a talk on 'The Role of Banks in the Implementation of 20 Point Economic Programme', a debate on 'The Role of Youth in the creation of Socialistic Pattern of Society'. The members of the Forum undertook an educational tour to Khetri Copper project.

46. M. D. B. Government College, Nathdwara

The Planning Forum of the college was inaugurated by A.M. Lunia, Income

Tax Officer, who spoke on 20 Point Economic Porgramme with particular reference to the rate of Income Tax. Shri M. Kothari, M. L. A., who presided over the function spoke on the usefulness of 42nd Amendment of the Constitution. A group of students toured nearby 'Mohalla' and enlightened the people about Family Planning. The Forum also conducted a survey with a view to assessing the knowledge, attitude, and practice of Family Planning in the families of the teachers of Nathdwara.

47. Seth G. B. Poddar College, Nawalgarh

The Planning Forum of the college collected Rs. 45/- from its 90 voluntary members as fees @ Rs. 0.50 per member and during the session under review organised a Hindi debate contest on the topic 'Creation of Socialistic Society is possible only through the Youth of the Country', and Hindi essay competitions on (i) Population & Economic Development and (ii) Achievements of 20 Point Economic Programme in Rajasthan, English essay competitions on (i) Fifth Five Year Plan (ii) Role of Science in Economic Development of India, and (iii) 20 Point Economic Programme. A survey on the problems of handicapped was also undertaken.

48. S. N. K. P. Government College, Neem-Ka-Thana

Besides organising college level essay, debate and general knowledge competitions on Economic Development through Plans and 20 Point Economic Programme—Implementation and Achievements, the Planning Forum of the college arranged extension lectures. Dr. M. L. Mishra delivered lecture on 'Personal Management', Shri D.P. Agrawal on 'Growth of Public Sector in India', Shri V.K. Vashistha on 'Problems of Public Sector Management' and Shri Badhana on 'International Monetary Management'.

49. Government Bangur College, Pali

The Planning Forum of the college organised an essay competition on 'Achievements in Rajasthan during Emergency', presented diagramatic representation of data on progress of Indian Economy, exhibited 20 Point Economic Programme and items of economic development in India and the salient features of Fifth Five Year Plans on wooden boards. The Forum sent representatives of the college to participate in All Rajasthan essay and debate competitions organised by the sister institutions of Rajasthan.

50. M. K. Saboo College, Pilani

The Planning Forum of the college organised various constructive activities ranging from story writing to debating competitions on Economic Development of the country. Discussions were held on the 20 Point Economic Programme, and Economic Development of the World. Extension lectures ware arranged on Planning in General life and Plan-Administration.

51. Government College, Pratapgarh

Besides organising essay competition on 'The Role of Planning', papers were presented on 'Need of Family-planning'. A survey work was also undertaken to assess the knowledge, attitude and practice of Family Planning in Pratapgarh town.

52. Government College, Rajgarh

The Planning Forum of the college, with a sizeable strength of 250 members organized college level, and State level essay competitions on 'The Role of Small Savings in the Indian Economic Development' and '20 Point Economic Programme in Rajasthan' respectively. Story writing competitions on themes of vital interests as Evils of Dowry System, Rural Development, Family Planning, Co-operatives and Afforestation were organized. Extension lectures were arranged on topics like 'Problem of Poverty in India' and 'The Fifth Five Year Plan'. The Forum conducted a survey with a view to ascertaining knowledge, attitude and practice of Family Planning in Rajgarh.

53. R. N. Ruia Government College, Ramgarh

From 14 to 20th November, 1976, the Forum celebrated the Plan Week covering a wide variety of meaningful activities ranging form' 'Balmela' to essay competition on 20 Point Economic Programme and Indian Economic system. A general knowledge test was also held, and papers were presented emphasising the need of Family Planning. Members of the Forum attempted to conduct a survey on Family Planning but the citizens of town not only did refuse to give information but vehemently opposed the proposed survey. Hence the survey could not be conducted.

54. Sri Jain Terapanthi Mahavidyalaya, Ranawas, (District Pali)

The Planning Forum of the college supplemented grant received from the Government by charging Rs. 2/- from each of its 61 members. It organised at college level paper reading on 'Recent Trends in India's Foreign Trade', essay

competitions on Economic Structure of Rajasthan, 20 Point Economic Programme in Rajasthan, and India's Fifth Five Year Plan. Extension lectures were also arranged : Professor S.C Tela addressed on 'An Approach to Economic Planning in India', Professor B.L. Dhakar spoke on 'An Appraisal of Fifth Five Year Plan', and Professor G.S. Sharma enlightened the audience about 'Social Justice Under Indian Constitution'. The Forum also arranged an All Rajasthan Inter-collegiate symposium on 'The Role of State in Economic Development' and conducted an inquiry about the 'Knowledge, Attitude and Practice of Family Planning in Kharchi Tehsil.'

55. Mohta College, Sadulpur

The Planning Forum of the college organised a wide variety of activities as : a socio-economic survey of village Radwa (Tehsil Rajgarh, District Churu); an educational tour to Khetri Copper Project which helped the members immensely is grasping the philosophy of a development project; a symposium on Philosophy of Planning, extension lecture on 'Medical Termination of Pregnancy : Its Social Implications', a debate on 'Is India Really over-populated ?' The Forum showed three Films : (i) Rice cultivation in Japan, (ii) Industrial Development of Russia and (iii) Bharat Darshan.

56. Government College, Sambharlake

The Forum of the college collected Rs. 160/- from its 80 members as their contribution, and received Rs. 750/- as donation from Shri Ramji Lal Modani of Naraina for organising the Modani Hindi Debate Competition. Besides organising All Rajasthan Modani Hindi Debate, the Forum conducted a Seminar on 'Bonus Issue' and held essay competition on 20 Point Economic Programme in Rajasthan. An educational tour was undertaken to Cotton Textile Industry of Kishangarh. Books were provided to the poor and needy students and literacy classes were started for the illiterate adults.

57. G. V. College of Arts & Science, Sangaria

The Planning Forum of the college convened a lively debate on the topic 'Only Economic Independence of Women can Eradicate the Evil of Dowry System'. Essay Competition was held on 'India in 1985' and general knowledge and intelligence tests were held. Members of the Forum did social service, they cheerfully cleaned, whitewashed and beautified the college campus.

58. S.B.D, Government College, Sardarshahar

With a view to generating Plan awareness and interest in the progress of the

country, members of the Forum prepared charts, diagrams and maps depicting Achievements of Emergency, Expenditure on the 4th and Fifth Five Year Plans in Rajasthan, 20 Point Programme in Rajasthan, Expenditure of the revised 5th Five Year Plan, and facts about Foreign Trade of India. A debating competition was held on 20 Point Economic Programme and an extension lecture on 'Importance of Planning', was arranged. The NSS wing of the college actively participated in the activities of the Planning Forum.

59. Government College, Sawaimadhopur

The Planning Forum increased its financial resources by realising Rs. 3/- as enrolment fee from each of its 100 members. Shri Than Singh, Additional District Development Officer in his inaugural address spoke on progress made by India after the proclamation of Emergency. An Inter-college essay competition was held on 'Population, Poverty and Future of India'. An extension lecture was delivered on 'Current International Monetary and Development System'.

60. S. K. Government College, Sikar

The members of S. K. Government College, Sikar, benefitted by a fruitful Programme of paper reading competition in which six papers on different problems including—Labours Participation in Management of Industries, Five Year Plan in Rajasthan, Beginning of a New Era in Rajasthan and 20 Point Economic Programme—were presented. Two extension lectures were also organised on current problems in Planning in India. Dr. B.C. Mehta, Reader in Economics, delivered two talks under the orientation lecture scheme organised by the Planning Forum Cell of the Directorate. Many Incharges of the nearby colleges attended the lecture.

61. Government College, Sirohi

Besides organising essay and debating competitions, and conducting general knowledge tests, the Planning Forum of the College arranged a symposium on 'Population Explosion and Need of Family Planning'. A seminar on 20 Point and 5 Point Programme, an extension lecture on 'Problems of Indian Labour' and literacy drive were the other significant activities carried out by the Forum.

62. Government College, Sriganganagar

With a sizeable strength of 230 members, the Planning Forum of the college arranged a lively discussion of the 20 Point Economic Programme, an extension lecture on 'Economic Planning Process in Rajasthan', celebrated 'Plan

Week' in January 1977, and conducted a survey with a view to evaluating the impact of Higher Education on Tribals in Ganganagar District. The Forum started Adult Literacy Centre in village Mirjewala, 35 illiterates were benefitted.

63. B.R.G. Government Girls College, Sriganganagar

The Planning Forum of the college undertook multifarious activities to promote interest amongst the girl candidates in the socio-economic development of the country. The Forum started its activities in collaboration with the NSS wing by planting trees and in subsequent months launched a crusade against illiteracy. An extension lecture on 'The Impact of 20 Point Economic Programme on Indian Economy' was also arranged.

64. S.G.N. Khalsa College, Sriganganagar

With a team of 42 members of the Forum the college organised a symposium on 'Unemployment Problem', a seminar on 'Population Problem' and Inter-college debate and essay competitions on 'India & Foreign Aid' and 'Plan Policies' respectively. A socio-economic survey dealing with 'Problem of Educated Entrepreneurs in Sriganganagar' was also undertaken.

65. M. D. Post-graduate College, Sriganganagar

An essay competition on 20 Point Economic Programme was held. Socio-economic surveys on Dowry System, Family Planning and Housing Problem were undertaken. The members of the Forum participated in competitions held at Alwar and Nagaur.

66. Mahatma Gandhi Evening College, Sriganganagar

The Planning Forum of the college realised Re. 1/- as enrolment fee from each of its 150 members. The Forum celebrated the Plan Week, arranged an exhibition showing economic development and progress made by India. Besides convening debating competition on the topic 'Economic Development of India is Possible only through Five Year Plans', a seminar was held on 'Contribution of Women in the Economic Development of India'.

67. Seth G. L. Bihani S.D. (P.G.) College, Sriganganagar

The Planning Forum of the college could not organise general activities but it succeeded in surveying the socio-economic conditions of the handicapped in Sriganganagar city. In the absence of any definite information about the total number

of physically handicapped in the city, some 70 handicapped were contacted at random.

68. Gyan Jyoti College, Srikaranpur

The Planning Forum of Gyan Jyoti College, Srikarnpur (Sriganganagar) organised many Inter-college activities, including a general knowledge test, a debate on 'Has Planning in India Helped in the Fast Economic Development of the Country', an essay competition on 'Contribution of Small Scale and Cottage Industries' and a seminar on 'Distribution of Income and Assets in India'. Another seminar on 'Has Planning in India Succeeded' was held in which the local students participated. Closing function was organised on 20th February, 1977 in which prizes and certificates were distributed to the winners.

69. G.H.S. Government College of Arts & Science, Sujangarh

The Forum of the college raised local funds by collecting Rs. 300 from 150 members. The Forum organised an All Rajasthan Hindi debate competition on the topic '25 Economic Programme will lead to Social Equality and Justice'. A survey with a view to assessing the 'knowledge attitude and practice of Family Planning in Village Malasisar (District Churu)' was undertaken.

70. Sona Devi Sethia Girls College, Sujangarh

40 dedicated members contributed Rs. 2/- each as enrolment fee for the Planning Forum activities. The college organised an essay competition on 'Contribution of Girls in Economic development of the Country', an Inter-collegiate debating competition on 'Social Equality and Justice can only be established with the Implementation of 20 Point Economic Programme'. An extension lecture was arranged on need of Family Planning, and an educational tour was undertaken to an industrial colony. Nearly 22 girls gathered first-hand information about the nature and problems of salt industry. Members of the Forum rendered social service by nursing the patients in an Eye Camp.

71. Government College, Shahpura (Distt. Bhilwara)

With the enrolled strength of 115, the Planning Forum undertook activities like an essay competition on 20 Point Economic Programme : Implementation and Achievements, extension lectures on 'Aims and Strategy of 5th Five Year Plan', 'Problem of Poverty and Inequality in India', 'International Monetary Problem'. Nearly 50 students and 3 teachers incharge visited Birla Cement Factory, Chittorgarh and Rajasthan Spinning Mills, Bhilwara. The participants minutely observed

on the spot the working and functioning of the factories and enquired about the labour management relationship and output etc. A survey was also undertaken with a view to assessing the knowledge, attitude and practice of Family Planning in Shahpura town.

72. Government College, Tonk

The Planning Forum of this College had 28 active members. It organised activities like an essay competition on 'Emergency and the Youth', a general knowledge test on 'Current Economic and Political Events and a survey work on 'Agricultural Inputs in Rajmahal'.

E. COLLEGES AFFILIATED TO THE UNIVERSITY OF JODHPUR

73. Lachoo Memorial College of Science, Jodhpur

The Planning Forum arranged talks on 'Planning and Economic Development', 'Unemployment Problem and Its Solution', and undertook educational tour to Jodhpur Woollen Mills. It also started literacy classes for the adults and held an essay competition on 'Economic Equality and Social Justice'.

74. Onkarmal Somani College of Commerce, Jodhpur

With a team of 31 members, the Planning Forum of the college organised a symposium on 25 years of Economic Planning in India, arranged extension lectures on the topics like 'Recent Tendencies in Indian Economy', 'Role of Commercial Banks in the Implementation of 20 Point Economic Programme', and the 'Problems of Small Scale Industries in India'. The members of the Forum made efforts to study the organization and working of some local dairies outside Jodhpur. The members of the Planning Forum prepared a questionnaire and distributed it to all the students of B.Com. (Final) in order to know their aptitude for higher education, and interest in establishing small scale industries.

F. COLLEGES AFFILIATED TO THE UNIVERSITY OF UDAIPUR

75. Bhopal Nobles College, Udaipur

The Planning Forum of the college organised a free film show for the benefit of the neighbourhood. Students and members of the staff, made efforts to educate people in the neighbourhood about the 20 Point Economic Programme, and arranged talks on Planning and Reconstruction, Problems Before Developing

Countries, and Role of International Monetary Institutions. A survey on Family Planning was also conducted.

76. Meera Girls College, Udaipur

With a team of 198 active members the Forum of the college arranged essay competitions on 'The 20 Point Economic Programme under the Fifth Five Year Plan' and 'The Impact of Inflation on the New Budget'. Shri Hari Deo Joshi, former C.M. of Rajasthan, inaugurated the Book Bank and Consumer Co-operative Store of the college run by the members of the Forum. A symposium was organised on 'The Role of Cooperation'. The members of the Forum participated in the debating competition convened by the University, and spoke on 'Consumer's Cooperation Have Helped in the Stablilisation of Prices in India'. The Forum also organised a talk on the Nationalisation of Banks.

77. Rajasthan College of Agriculture, Udaipur

Although the membership of the Forum was about 552, the Forum did not charge any membership fee. The Planning Forum activities were organized with grants by the Government. Books worth Rs. 200/- were added to the Planning Forum Information Centre. The Forum conducted a survey to study the problems of educated entrepreneurs in setting up private industries in Udaipur. Class debates were organized on the theme : 'The Very Basis of Economic Development in India is the Production of Consumer Goods Rather than PRODUCTION Goods'. The Forum started a literacy centre and conducted regular classes for Adults at village Takari. The members of the Forum offered their services in batches to educate the people to encourage the farming activities, crop, livestock and orchard competitions were organised and prizes were awarded. Activities like rat control in the field and treatment of some animal diseases were carried out.

78. Rajasthan Vidyapeeth, M.V. Shramjivee College, Udaipur

The Planning Forum of the college realised Re. 1/- from each of its 261 members. Among the activities of the Forum the most significant ones were : celebration of the Family Planning Day, paper reading on 20 Point Economic Programme, essay writing competitions on Agricultural Development in Rajasthan under 20 Point Economic Programme and Population Policy —Its Implementation & Achievements. On wall papers, the following informations were displayed : Indian Exports—Its Present Status and Trends, Progress of 20 Point Programme in Rajasthan, Progress of Public Sector in Rajasthan, Population and Family Planning Programme, Fifth Five Year Plan—Aims and Objectives. The Forum undertook a survey in order to ascertain the knowledge, attitude, and practice of Family Planning among 'Harijans' of Udaipur.

79. S. K. N. College of Udaipur (Department of Agricultural Economics)

As the Forum was established in 1976-77, it could not do much. It, however, initiated its activities by organising an essay competition. Plan Quiz contest, display of Plan literature in its Information Centre and by inviting eminent persons to deliver extension lectures on such themes as 'Economic Policy-Objectives & Assessment', 'The Role of Commercial Banks in Agricultural Development'. The Forum hopes to do solid work from the forthcoming session.

80. Vidya Bhawan Rural Institute, Udaipur

With a team of 48 members the Planning Forum of the Institute arranged paper reading on the following socio-economic aspects of Indian life—'Family Planning Policy in India,' 'ABC of 25 Point Programme' '100 Gains of Emergency in India', 'Problems of Under-developed Countries'. Members of the Forum undertook an educational trip to Ranipur. The Forum succeeded in involving the students and teachers of the Departments of Sociology, Pol. Science and Botany in the Planned Development of the Country. The Institute has a well-equipped Information Centre with up-to-date books on Economic Planning.

81. Udaipur School of Social Works, Udaipur

Though the strength of the Forum is 64, it has been doing commendable work. It undertook an educational tour to Hyderabad in order to show to the students, welfare agencies and Industries with special reference to the labour and industrial relations. The tour proved to be very useful in the sense that it enabled the students to gather first-hand information and practical knowledge of various vital activities and problems in the field and provided opportunities to discuss with executives of the Management and Incharges of various social welfare agencies. The students of Planning From took active part in the activities sponsored by the Preventive Medical Department of Medical College, Udaipur. Active interest was taken in the illiteracy eradication programme of the Adult Education Centre, and in the Prevention and Eradication of Cattle Diseases Programme of the Veterinary Department. Extension lectures were arranged on Agricultural and other allied problems. The Forum regularly displayed on the Notice Board the material recieved from the publicity department. The following eminent persons delivered talks : Dr. P. T. Thomas, Principal, Indore School of Social Works on 'Environment & Social Welfare', Shri K. M. Sahai, Director, Social Welfare Department, Government of Rajasthan on 'Welfare Policy and Administration & Provision Under Plans in Rajasthan', Shri R. M. Saxena, D. I. G., Jaipur on 'Probation System in Jaipur' and Dr. B. K. Tandon of University of Udaipur, on 'Economic Technique and Rural Development'.

Seminar during Plan Week Celebration.

Coordination with N. S. S.

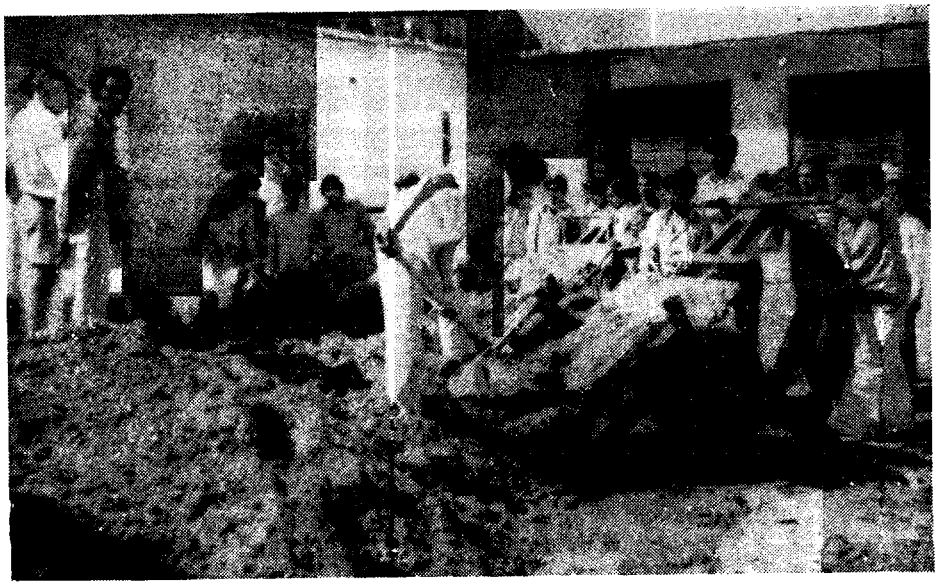

'Shramdan'–Coordination with N. S. S.

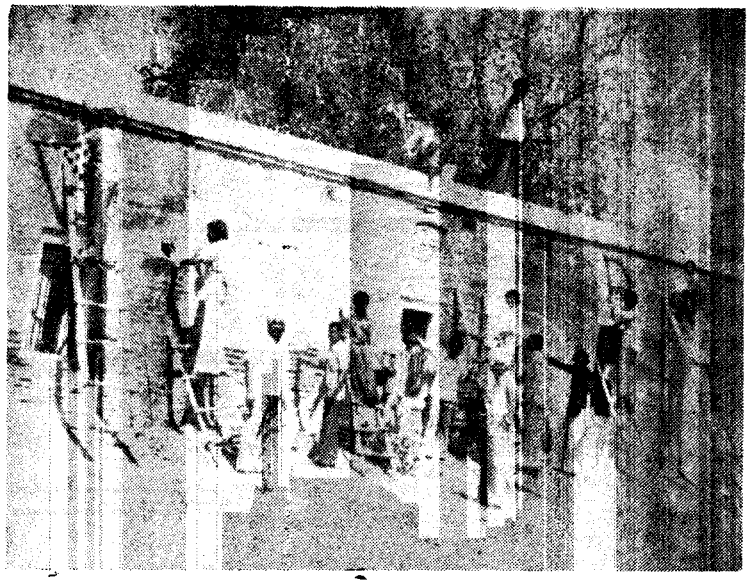

White washing campus walls—Close Coordination with NSS.

6

PLANNING FORUMS :

Broad Survey of Surveys 1976-77

We said elsewhere (Chapter Two) that the fourth and final stage of the conceptual development of the Planning Forums can be seen in the research work undertaken and survey studies conducted by the Planning Forums. This is both meaningful and significant. Conclusions of these studies can not only be of help to the District authorities but can also be of immense assistance to the Planning Commission and policy makers. Furthermore, such studies also train the students and teachers in techniques of research and survey and, to crown all, the socio-economic survey of a nearby village or slum promotes the identification of the college or the university with the development and progress of the community. In a word, such studies have their educative and social values.

Rajasthan has done a commendable and leading work in this field. Out of 103 Planning Forums some 36 Forums undertook survey studies. Population explosion being number one problem of our country, 16 Forums undertook survey work on Family Planning with a view to adjudging the nature and extent of 'knowledge, attitude and practice of Family Planning' among almost all the sections of community, teachers, labourers, 'Advasies', educated, uneducated, persons belonging to S. C./S. T., etc. 29 Forums carried on surveys on miscellaneous subjects. A broad survey of surveys lets us know the magnitude of the work done by our Forums :

A. SURVEYS CONDUCTED BY P. G. COLLEGES

1. Educated Unemployment In Ajmer : An Economic Survey

Planning Forum of **Government College, Ajmer** made a worthy attempt by undertaking an economic survey of the Educated Unemployment in Ajmer

City. A brief analysis of objectives, scope, method employed and conclusions arrived at are as follows :

Objectives : (i) To assess the nature and extent of unemployment; (ii) to review the efforts made so far to face the problem; and (iii) to select ways and means to solve the problem.

Scope : The survey covered only the Post-graduates, Professional Degree/ Diploma holders, registered with the District Employment Exchange, residing within Ajmer Municipal area.

Method : 120 persons were selected through stratified sample, 8 being unavailable, only 112 (79 males and 33 females) were interviewed.

Findings : The main findings of the survey are : (i) The average age of the female unemployed, is higher than that of the male unemployed (i.e., 27.5 and 24.3 years respectively). (ii) A majority of unemployed (79 out of 112) belonged to 22-28 years age group. (iii) Out of 112 unemployed, 67 were Post-graduates (36 Males and 31 Females) and 35 were technically qualified hands (all males). (iv) 31 unemployed (12 Males and 19 Females) had Professional Degrees such as B.Ed., LL.B., M.B.,B.S. (v) Out of 112 unemployed youths, 62 (39 Males and 23 Femals) had no job experience and the remaining 50 had some job experience. (vi) 69.36% of the unemployed (77% Males and 100% Females) depended upon members of the family for their subsistence, 8% on their past savings and 1 person had to borrow. (vii) The average monthly expenditure of an unemployed youth amounts to Rs. 117.40—Females on an average spend a greater amount (i. e. Rs. 149.20) than their male counterparts (i. e. Rs. 104.11). (viii) 16% unemployed got themselves registered in Employment Exchange at the suggestions of their friends, parents and relatives, whereas 84% at their own initiative. (ix) The job preferences as expressed by unemployeds were as follows:—

69.8% females preferred teaching profession, 18.2% clerical jobs and 12% other jobs. Among the unemployed males, 29% preferred clerical jobs, 25.5% technical work, 12.7% teaching and 13% engineering. 64% unemployed persons were willing to serve outside Ajmer (75.9% Males and 36.3% Females) and the remaining 36% did not want to leave Ajmer even if offered a job of their choice.

Suggestions : On the basis of the experience gained during the course of the survey, the Forum offered the following suggestions for solving the problem of educated unemployment in the country in general, and in the city of Ajmer in particular : (i) There should be proper man power planning not only at the State level but at the 'District and Panchayat Samiti' levels also. (ii) Guarantee of jobs should be given to the people by the Government. So long as the Government is unable to provide adequate opportunities for employment, an allowance should be

given to the unemployed as it is given in the case of unemployed Scheduled Castes/ Tribes. (iii) In order to motivate people to go outside Ajmer, particularly in rural and semi-urban areas, adequate pecuniary motivation should be given to the incumbents. (iv) Government should induce people for self-employment. (v) There should be a link between educational institution and employment exchange. A Guidance Bureau may be established for advising the institutions to adopt job oriented courses. (vi) Public opinion should be mobilised for the dignity of labour. and (vii) Whatever policies are framed by the Government to provide employment, they should be effectively implemented.

2. बीस सूत्री कार्यक्रम : ग्रामीण दृष्टिकोण – एक अध्ययन

बीस सूत्री कार्यक्रम के क्रियान्वयन के प्रति ग्रामवासियों के दृष्टिकोण एवं समस्याओं का अध्ययन करने के उद्देश्य से **दयानन्द महाविद्यालय, अजमेर** के योजना मंच ने अजमेर जिले के ही श्रीनगर गांव के निवासियों में सदैव निदर्शन पद्धति से चुने हुए 50 व्यक्तियों का सर्वेक्षण किया।

3200 की जनसंख्या वाला श्रीनगर गांव पंचायत समिति मुख्यालय हैं। गांव की 45% जनसंख्या अनुसूचित जाति एवं जन-जाति की है। अजमेर, किशनगढ़ एवं नसीराबाद से 10-10 मील की दूरी पर बसे इस गांव में दशाब्दियों से खनन कार्य मुख्य व्यवसाय बना हुआ है।

50 सूचकों में से 40 की आर्थिक स्थिति शोचनीय पाई गई। 66 प्रतिशत सूचक अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन-जातियों के और 50% सूचक युवा वर्ग के थे। 44% सूचक साक्षर थे। यह प्रतिशत समूचे भारत वर्ष की तुलना में ऊंचा है, लेकिन 44% में से 18% सूचक केवल मामूली पढ़ना लिखना जानते हैं या केवल हस्ताक्षर ही कर सकते हैं।

अध्ययन के विश्लेषण से पता लगता है कि युवा वर्ग की बुजुर्ग वर्ग की तुलना में बीस सूत्री कार्यक्रम की अधिक एवं पूर्ण जानकारी है। 20 प्रतिशत युवा वर्ग को इस कार्यक्रम की नगण्य जानकारी थी जबकि वृद्ध वर्ग में यह प्रतिशत 40 है। 60 प्रतिशत सूचकों के अनुसार इस कार्यक्रम से कम लाभ प्राप्त हुए हैं और केवल 10 प्रतिशत सूचकों के अनुसार यह कार्यक्रम बहुत लाभदायक है। 40 प्रतिशत वृद्ध वर्ग समझता हैं कि इससे कुछ लाभ नहीं है।

कृषि योग्य भूमि आवंटन कार्यक्रम को 42% सूचकों ने अधिक लाभकारी, 38% ने विशेष लाभकारी नहीं माना जबकि 20% ने इस कार्यक्रम के प्रति अनभिज्ञता प्रकट की। ग्रामवासियों द्वारा कृषि योग्य भूमि प्राप्त करने में विभिन्न कठिनाइयां अनुभव की गई हैं। कृषि योग्य भूमि आवंटन के प्रति युवा वर्ग वृद्ध वर्ग की अपेक्षा असंतुष्ट है। असंतोष के कारणों में प्रमुख हैं:— आवंटित भूमि का कृषि योग्य न होना, सिंचाई के साधनों का अभाव, भूमि का घर से दूर होना, खेतों का अपखण्डित एवं छोटा होना तथा अन्य साधनों का अभाव।

गांव में आवासीय भूखण्डों के वितरण को लगभग आधे सूचकों ने अत्यन्त आवश्यक एवं लाभकारी कार्यक्रम माना जबकि 24% सूचकों ने कार्यक्रम के प्रति अनभिज्ञता प्रकट की है और 6% इसे बेकार एवं 18% इस कार्यक्रम से विशेष लाभ नहीं मानते हैं। आवासीय भूखण्डों के सम्बन्ध में

व्यक्त की गई समस्याओं में प्रमुख समस्या है:—अनुपयुक्त भूखण्ड, गांव से दूर आवंटन, रिश्तेदारों से दूरी तथा मकान बनाने के लिये साधनों की कमी। भूखण्डों के आवंटन के समय आर्थिक, सामाजिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों का ध्यान रखा जाना चाहिए तथा भवन निर्माण हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जानी चाहिये। 20 सूत्री कार्यक्रम के भयंकर प्रचार के बावजूद 30% सूचकों को इसकी जानकारी ही नहीं थी और 16% सूचकों के अनुसार आवंटन में पक्षपात किया गया। 28% के अनुसार भूखण्ड अनुपयुक्त थे। यह असंतोष भूखण्डों का चुनाव करते समय गांव-वासियों की सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक विचारधारा की ध्यान में नहीं रखने से उत्पन्न हुआ।

बीस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत ऋणी एवं कमजोर वर्ग को राहत दिलाने हेतु ऋण-मुक्ति कार्यक्रम की प्रतिक्रिया ज्ञात करने पर मालूम हुआ कि 28% को तो इसकी जानकारी भी नहीं है, 48% को कोई लाभ नहीं है केवल 18% को ऋण से मुक्ति हुई और 6% के ऋण भार में कमी हुई। ऋण-मुक्ति कार्यक्रम की कम उपयोगिता के कारणों में प्रमुख कारण इस प्रकार बताये गये:—साहूकारों द्वारा कर्जा देना बन्द कर देना, अन्य संस्थाओं द्वारा कर्ज न दिया जाना, साहूकारों द्वारा अवैध तरीकों से ऋण वसूल करना तथा आपसी झगड़ों की वृद्धि।

अध्ययन में बुक बैंक कार्यक्रम की भी जानकारी प्राप्त कर उसका विश्लेषण किया गया। पंचायत समिति क्षेत्र में 70 बुक बैंक स्थापित किये गये हैं जिनमें कुल 5765 पुस्तकें थी। इस कार्यक्रम के बारे में पूछने पर ज्ञात हुआ कि 38% सूचक कार्यक्रम के प्रति अनभिज्ञ हैं और 12% की इससे कोई लाभ नहीं है, केवल आधे सूचकों को इस कार्यक्रम से कमी बेशी लाभ मिलता है।

निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि 20 सूत्री कार्यक्रम को लागू करने में उपयुक्त सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों की अवहेलना की गई तथा जनसाधारण को कार्यक्रम के क्रियान्वयन में सहभागी बनाने की अवहेलना करने के कारण ग्रामीण जनता कार्यक्रम को ऊपर से थोपा हुआ मानती है।

3. निजी उद्योगों को लगाने में शिक्षित उद्यमियों की कठिनाइयों का अध्ययन

योजना गोष्ठी **श्री जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीकानेर** ने निजी उद्योगों की लगाने में शिक्षित उद्यमियों की कठिनाइयों के अध्ययन का सर्वेक्षण किया।

राव जोधाजी के पुत्र राव बीकाजी द्वारा 13 अप्रैल, 1488 को स्थापित बीकानेर नगर राजस्थान के उत्तर पश्चिम में राष्ट्रीय राज-मार्ग संख्या 11 पर जयपुर से 377 किलो मीटर दूर बसा हुआ है। कम वर्षा, तापमान में अत्यधिक उच्चावचन, वनसम्पदा का सर्वथा अभाव, 27 व्यक्तियों का प्रति वर्गमील घनत्व, बालू रेत के टीलों का अत्यधिक बोलबाला, 350 फीट की गहराई पर पेय जल, इस क्षेत्र की प्रमुख विशेषताएं हैं। खनिज सम्पदा के मामलों में भी प्रकृति अति कृपण है। पशु सम्पदा में बीकानेर धनी है। लगभग 5 लाख भेड़ों एवं इतने ही अन्य पशुओं वाले इस जिले में पशु सम्पदा पर आधारित उद्योगों के विकास की सम्भावनाएं अच्छी हैं। यही कारण है कि दूध एवं ऊन के मामले में बीकानेर राजस्थान का अग्रणी बन गया है।

औद्योगिक विकास के लिये आवश्यक आर्थिक एवं आर्थिकेत्तर तत्त्वों में से कुछ तो बीकानेर में उपलब्ध हैं और कुछ का सर्वथा अभाव हैं। कृषि पदार्थ, उचित जलवायु, जन साधन, वन सम्पदा का यहां अभाव रहता है। कोयला, जिप्सम, मुलतानी मिट्टी, फेल्डस्पार व लाल पत्थर की यहां खानें हैं और उचित मात्रा में यहां दीर्घकाल से खनन कार्य होता आया है। कोयले के अतिरिक्त, शक्ति के साधन के रूप में भाखरा से विद्युत शक्ति उचित मात्रा में उपलब्ध होती है। नगर की जनसंख्या लगभग 2.5 लाख हैं। प्रशिक्षण सम्बन्धी शालाओं की कमी के कारण प्रशिक्षित श्रम का अभाव रहता है। अप्रशिक्षित श्रम उचित मात्रा में मिल जाता है। साहसियों की यह भूमि जननी हैं, लेकिन अधिकतर उद्यमी राजस्थान से बाहर अपनी निपुणता का प्रसार करते हैं और यह क्षेत्र उनके गुणों से वंचित रहता है। अन्य क्षेत्रों की भांति बीकानेर में भी सामाजिक, धार्मिक एवं संस्थागत तत्त्व आर्थिक विकास के अनुकूल नहीं हैं। इस क्षेत्र का औद्योगिक विकास गत दशाब्दी से ही आरम्भ हो पाया है।

औद्योगिक बस्ती नीति के अन्तर्गत राज्य सरकार ने 4.50 लाख रुपये से 30 इकाइयों वाली एक औद्योगिक बस्ती की स्थापना 1964 में की, जिसमें वर्तमान विनियोग 1.5 करोड़ रुपये का हो चुका है। सभी आयु वर्ग के उद्यमी औद्योगिक बस्ती में कार्यरत हैं और उद्यमियों की औसत आयु 37.5 वर्ष पाई गई, जिससे स्पष्ट होता हैं कि बीकानेर में युवा उद्यमी आगे बढ़ रहे हैं। कोई भी उद्यमी अशिक्षित नहीं था। दस उद्यमी स्नातक अथवा उच्च शिक्षा प्राप्त थे—एक उद्यमी हाई स्कूल से कम शिक्षा प्राप्त था। शेष स्नातक स्तर से कम शिक्षित थे। सर्वाधिक (15) उद्यमियों ने 1971 के पश्चात् ही उद्योग स्थापित किये हैं, इनमें से 7 इकाइयां तो 1976 में हीं स्थापित की गई हैं तथा शेष 1971 से पूर्व। सभी उद्योग हिन्दू मतावलम्बियों द्वारा स्थापित किये गये हैं। जैनी एवं पंजाबी उद्यमियों की संख्या अन्य लोगों की तुलना में अधिक है। तीन उद्यमियों के अतिरिक्त अन्य सभी इकाइयों के उद्यमी मूलत: बीकानेर के निवासी हैं। तीन उद्यमी दिल्ली, बिजयनगर एवं नागौर से आकर बसे हैं।

सर्वेक्षित इकाइयों में से 5 ऊन पर आधारित थीं जो ऊन की गाँठ बांधना, पिंदाई व कताई, नमदा, होजरी एवं ऊन रंगाई में कार्यरत थी। 55,000 गांठ ऊन का निर्यात करने वाला बीकानेर नगर ऊन के मामले में सबसे बड़ी मंडी के रूप में उभरा है, क्योंकि देश की कुल ऊन का 45% विक्रय यहीं होता है। लोहे की छड़, मशीनी औजार, ओटोमोबाइल पार्ट, फाउण्ड्री आदि में कार्यरत तीन इंजीनियरिंग उद्योगों को भी सर्वेक्षण में सम्मिलित किया गया। सभी उद्योगों की उत्पादन क्षमता 34 लाख रुपये वार्षिक है। जिप्सम, सेलेनाइट, फुलर्स अर्थ, चाइना क्ले आदि की उपलब्धता के कारण प्लास्टर आफ पेरिस, इन्सुलिन व अन्य वस्तुओं के निर्माण में सिरेमिक्स उद्योग की कई इकाइयां उत्पादनरत हैं, जिनमें 15 लाख रुपये के लगभग स्थाई पूंजी लगी हुई है। सोडियम सिलिकेट, गवारगम, मोमबत्ती व अन्य वस्तुओं के उत्पादन में लगी हुई 3 रसायन व पेन्ट पर आधारित इकाइयों का भी सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण में दो तेल, एक नमक एवं एक आयुर्वेद से सम्बन्धित इकाई को भी सर्वेक्षण में सम्मिलित किया गया।

कार्यशील एवं स्थायी पूंजी के रूप में सर्वेक्षित इकाइयां विभिन्न स्रोतों से पूंजी एकत्र कर उत्पादन करती हैं। इन सर्वेक्षित इकाइयों में कुल विनियोजित पूंजी (रु० 77.15 लाख) का 17.5% व्यापारिक बैंक, 16.7% राजस्थान वित्तीय निगम, 5.2% साहूकार, 17.9% मित्र व रिश्तेदार, 41.3% स्वयं की पूंजी एवं 1.4% अन्य साधनों से एकत्र की गई हैं। किसी सरकारी संस्था ने कोई ऋण नहीं दिया है। लघु उद्योग निगम, औद्योगिक वित्त निगम अथवा औद्योगिक विकास बैंकों ने भी कोई ऋण प्रदान नहीं किए हैं। व्यापारिक बैंक, रिश्तेदार एवं राजस्थान वित्तीय निगम पूंजी के प्रमुख स्त्रोत हैं। कुल विनियोजित पूँजी (95.60 लाख) में से 65.6% स्थिर पूंजी के रूप में (24% भवन एवं शैड, 35.7% मशीनरी तथा शेष भूमि एवं अन्य पर) और 34.4% कार्यशील पूंजी के रूप में लगी हुई हैं।

कठिनाइयां : शिक्षित उद्यमियों को बीकानेर में उद्योग स्थापित करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं : प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करने में ही अधिकांश उद्यमियों की कठिनाई अनुभव हुई है। इसमें समय आवश्यकता से अधिक लग जाता है। व्यापारिक बैंकों से ऋण प्राप्त करने में औपचारिकताओं का झंझट अधिक है। ब्याज की दर भी सभी स्त्रोतों में अधिक है और देशी बैंक व महाजनों से ऋण लेने पर विकास छूट नहीं मिल पाती है। दो-तीन इकाइयों को छोड़कर अन्य को भूमि एवं शैड प्राप्ति में कठिनाई नहीं हुई। इसी प्रकार मशीनरी एवं उपकरण प्राप्ति में भी कठिनाई नहीं थी। खनिज उद्योगों में रत इकाइयों को कच्चे माल की कमी, सरकार द्वारा कम कोटे का निर्धारण आदि की कठिनाई थी। सभी इकाइयों को विद्युत् एवं जल पूर्ति सम्बन्धी सुविधाओं के बारे में असन्तोष था। नया कनैक्शन लेने की कठिनाई, अनियमित पूर्ति, पावर कट, कम वोल्टेज आदि की शिकायत आम तौर पर सभी ने की। कानूनी अड़चनें, चुंगी दरों की झंझट, बिक्री सम्बन्धी कठिनाई आदि की समस्याऐं भी महत्त्वपूर्ण थीं। इस क्षेत्र में भौगोलिक परिस्थितियों के कारण कुछ समस्याएँ जटिलता लिये हुए हैं। वर्षा की कमी, कुओं में अधिक गहराई पर पानी, प्रतिकूल जलवायु, प्राकृतिक अनुदारता, इन कारणों में प्रमुख हैं। इनके अलावा प्रशिक्षण संस्थानों का अभाव, सरकार की अवहेलनापूर्ण नीति, पूंजीगत माल की कमी, यातायात सुविधाओं का अभाव, सम्भावित बाजारों के ज्ञान का अभाव, मांग की कमी आदि समस्याओं के कारण भी इस बस्ती का पूर्ण विकास नहीं हो पाया है।

सुझाव : सर्वेक्षण के दौरान उद्यमियों में से कुछ ने कोई सुझाव नहीं दिये, कुछ ने अनुपयुक्त सुझाव दिये एवं कुछ ने अच्छे सुझाव दिये। मुख्य सुझाव निम्नलिखित थे जिनको लागू करने से बीकानेर के औद्योगिक विकास की गति तीव्र हो सके। बीकानेर में कृषि का विकास किया जावे जिससे कि कृषि पर आधारित उद्योगों की स्थापना हो सके और बीकानेर की इस मामले में निर्भरता भी समाप्त हो सके। यातायात की सुविधाओं का विस्तार किया जावे। बस्ती की सड़कों का जीर्णोद्धार करने के साथ ही भटिंडा—बीकानेर रेल लाइन को बदला जावे। विकास संस्थान की स्थापना हो तथा औद्योगिक सेमीनार, सिम्पोजियम हों, उद्योग विभाग इस क्षेत्र से सम्बन्धित जानकारी का पता लगावे। औद्योगिक क्षेत्र में श्रम बस्ती का निर्माण कराया जावे। राष्ट्रीय बैंक,

सरकार, औद्योगिक बैंक आदि के माध्यम से कम ब्याज पर ऋण सुलभ कराया जावे। क्योंकि औद्योगिक बस्ती में अब खाली शैड नहीं है अतः बस्ती का विस्तार किया जावे। इस क्षेत्र की मुख्य आशा खनिजों पर आधारित उद्योग हैं, उनको बढ़ावा देने हेतु सभी सम्भव प्रयत्न सरकार को करने होंगे। जल व विद्युत् पूर्ति में कई कठिनाइयाँ हैं, जिन्हें स्थानीय अधिकारी बिना विशेष कठिनाई के दूर करके बीकानेर के औद्योगिक विकास में अपना योगदान दे सकते हैं। औद्योगिक बस्ती में ही एक गोदाम की स्थापना भी आवश्यक है। इनके साथ ही सरकार द्वारा उद्यमियों को दी जाने वाली सुविधाओं जैसे—भूमि, ऋण, यातायात, बिजली व पानी आदि का भली प्रकार प्रचार एवं प्रसार आवश्यक है, जिससे कि नये शिक्षित उद्यमियों को उद्योगों की स्थापना में आने वाली कठिनाइयां कम अनुभव हों।

4. चूरू में शिक्षित साहसियों द्वारा निजी उद्योग स्थापित करने में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन:—

वर्षा, औद्योगिक कच्चे माल एवं अन्य आधारभूत आवश्यकताओं की कमी के कारण चूरू कृषि एवं उद्योग दोनों की दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र कहा जाता है, इसी क्षेत्र के अध्ययनार्थ योजना वाक्पीठ **लोहिया कालेज, चूरू** ने उपर्युक्त विषय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से 15 साहसियों का चयन कर एक सर्वेक्षण किया।

सर्वेक्षित 15 उद्यमियों में से 7 माध्यमिक, 5 उच्च माध्यमिक, 2 स्नातक एवं 1 तकनीकी डिप्लोमा (डी०ई०एम०) स्तर तक की शिक्षा प्राप्त किये हुए थे। 93 प्रतिशत उद्यमी सामान्य शिक्षा प्राप्त व्यक्ति थे। 15 उद्यमियों में से 8 उद्यमी 30 वर्ष से कम आयु के नवयुवक, 4 उद्यमी 30 से 40 वर्ष के एवं 3 उद्यमी 40 वर्ष से ऊपर की आयु के थे। इनमें से 11 विवाहित एवं 4 अविवाहित थे। यद्यपि चूरू की कुल जनसंख्या में 20 प्रतिशत मुसलमान हैं, लेकिन 15 में से एक ही उद्यमी मुसलमान था। 15 में से 10 उद्यमी 1971 के बाद उद्योग स्थापित कर पाये हैं केवल एक उद्योग 1965 से पूर्व स्थापित किया गया हैं। इन उद्योगों में साबुन, फर्नीचर, रस्सी, बीड़ी, थैली, कुल्फी, बर्फ, सीमेन्ट की जाली आदि वस्तुएं बनाई जाती हैं।

उद्योगों की वित्तीय आवश्यकता में स्थाई पूंजी का योगदान सर्वाधिक होता है। 30,000/- रु. से कम स्थायी पूंजी की आवश्यकता वाले 11 उद्योग हैं। 50,000/- रु. तक की स्थाई पूंजी की आवश्यकता वाले 13 उद्योग हैं तथा 50,000/- से 75,000/- रु. तक की स्थायी पूंजी लगाये हुए उद्योगों की संख्या 2 है। बीड़ी उद्योग में स्थायी पूंजी सबसे कम एवं बर्फ उद्योग में सबसे अधिक स्थायी पूंजी लगी हुई थी। 5 उद्योगों को रु. 5000/-, 6 को रु. 10,000/-, 10 को रु. 25,000/- कार्यशील पूंजी की आवश्यकता है। 5 उद्यमियों को रु. 25000/- से अधिक पूंजी चाहिये। उद्योग की प्रकृति के अनुसार हीं विभिन्न इकाइयों को कच्चे माल पर विनियोग की आवश्यकता पड़ती है। 6 को रु. 10,000/- से कम, 8 को रु. 25,000/- से कम, 12 की रु. 40,000/- से कम तथा 3 को रु. 40,000/- से अधिक पूंजी कच्चे माल के लिए चाहिये।

आठ उद्यमियों ने एक अथवा अनेक स्रोतों से ऋण प्राप्त किये हैं। शेष 7 उद्योगों में सम्पूर्ण विनियोग स्वयं उद्यमी का ही है। राज्य वित्त निगम ने एक उद्यमी को ऋण दिया है। बैंक, सहकारी बैंक, ऋण के प्रमुख साधन हैं। सम्बन्धी, दोस्त एवं देशी साहूकारों से भी 4 उद्यमियों ने ऋण प्राप्त किये हैं। कुल ऋणों की मात्रा रु. 2.24 लाख है। ब्याज की दर 2.5 प्रतिशत से 15 प्रतिशत तक है। सबसे कम ब्याज सहकारी बैंक तथा सबसे अधिक ब्याज साहूकार लेते हैं। बैंक 13.5 प्रतिशत ब्याज लेते हैं। 15 में से केवल दो उद्यमियों ने ही अपने-अपने क्षेत्र में उद्योग स्थापित करने से पूर्व प्रशिक्षण प्राप्त किया था, शेष 13 अप्रशिक्षित उद्यमी हैं।

कठिनाइयां : उद्यमियों को उद्योग स्थापित करने में कई कठिनाइयां सामने आईं:—उचित प्रोजेक्ट, सलाह की कमी, वित्तीय सहयोग की कमी, ऊँची ब्याज पर ऋण मिलना, भूमि का अभाव, सस्ती किराये की भूमि न मिलना, अच्छे मिस्त्रियों का अभाव, कच्चे माल की कमी, अच्छे व प्रशिक्षित श्रमिकों की कमी, आदि प्रमुख कठिनाइयां थी। विद्युत शक्ति के सम्बन्ध में सभी साहसी असन्तुष्ट थे—कनैक्शन लेने में होने वाली कठिनाइयों से लेकर वोल्टेज के उच्चावाचन, लालफीताशाही व ऊंची विद्युत् दरों तक की समस्याओं को गिनाया गया। कतिपय उद्योगों की स्थानीय बाजार होने के कारण माँग की कमी का सामना करना पड़ता है।

सुझाव : वर्तमान परिस्थितियों में लघु उद्योगों के महत्त्व को देखते हुए उद्योग विभाग को चूरू जिले का औद्योगिक सर्वेक्षण कर कुछ सम्भावित उद्योगों का पता लगाकर उद्यमियों को उद्योग स्थापित करने में प्रोत्साहित करना होगा। यहां औद्योगिक बस्ती, अथवा औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना की आवश्यकता अनुभव की जाती रही है। लघु उद्योगों को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं का इस क्षेत्र में प्रचार एवं प्रसार आवश्यक है, जिससे कि राजस्थान के पूर्वोत्तरी क्षेत्र में स्थित इस नगर का शीघ्र विकास हो सके।

5. अनुसूचित जाति पर शिक्षा सुविधाओं व उच्च शिक्षा का प्रभाव

प्लानिंग फोरम, **राजकीय महाविद्यालय, श्री गंगानगर** के तत्वावधान में "श्री गंगानगर जिले में अनुसूचित जाति पर शिक्षा सुविधाओं व उच्च शिक्षा का प्रभाव" विषय पर एक सामाजिक एवं आर्थिक सर्वेक्षण किया गया।

इस समृद्धशाली क्षेत्र में यद्यपि अनुसूचित जाति के लोगों का प्रतिशत कम है, लेकिन फिर भी स्वतन्त्रोत्तर काल में इनके सर्वांगीण विकास के लिये किये गये प्रयत्नों के प्रभाव को उजागर करना सर्वेक्षण का प्रमुख उद्देश्य रहा है। सम्पूर्ण जिले में से दैव निदर्शन पद्धति से छांटे गये 500 सूचकों से सम्पर्क करने का उद्देश्य था लेकिन 360 प्रश्नावलियां ही भरी जाने के कारण सर्वेक्षण प्रतिवेदन 360 परिवारों के अध्ययन पर ही आधारित है।

360 में से 109 व्यक्ति मजदूरी, 104 कृषि, 33 जूतों का काम, तथा शेष अन्य कार्य करते हैं। राजकीय सेवा पर केवल 17 व्यक्ति निर्भर हैं। कृषि में लगे व्यक्तियों में से अधिकांश व्यक्ति कृषि मजदूर हैं। परिवार के मुखिया की औसत आयु 42.5 वर्ष है। केवल 21

व्यक्ति ही 60 वर्ष से अधिक आयु वाले हैं। लगभग 12% अनुसूचित जाति के लोग जिले के बाहर से आकर गंगानगर में रहने लगे हैं तथा जिले की सभी तहसीलों में इनका बिखराव है। अधिकांश व्यक्ति इसी जिले के मूल निवासी होने के कारण यहां की सभ्यता एवं संस्कृति से भली प्रकार परिचित हैं और इसी के अंग कहे जा सकते हैं।

परिवार के आकार का अध्ययन करने से एक रोचक बात का पता लगता है कि औसत आकार 7.5 सदस्य हैं, जो कि साधारण औसत से अधिक है, 5 सदस्यों वाले परिवारों की संख्या 93 तथा 10 या अधिक सदस्यों वाले परिवारों की संख्या 79 थी। संयुक्त परिवारों में बड़े सदस्यों की संख्या 8 से 10 तक है, लेकिन अन्य परिवारों में यह संख्या 3-4 ही है। बच्चों की संख्या भी इन परिवारों में से लगभग आधे परिवारों में 3 से अधिक है। 72 परिवारों में बच्चों की संख्या 5 से अधिक है। इससे ज्ञात होता है कि परिवार नियोजन कार्यक्रम का प्रभाव अभी सामने नहीं आ पाया है।

360 परिवारों में से 289 परिवारों के लड़के एवं 135 परिवारों की लड़कियां विद्या-अध्ययन कर रहे हैं। इस प्रकार स्त्री शिक्षा का प्रसार इस जाति के लोगों में अभी पूरी तरह नहीं हो पाया है। सर्वेक्षण से एक महत्त्वपूर्ण तथ्य प्रकट हुआ कि 260 में से 71 (20%) परिवारों में एक भी व्यक्ति शिक्षित या साक्षर नहीं था। केवल दो परिवारों में स्नातकोत्तर स्तर के सदस्य भी पाये गये तथा 18 परिवारों में स्नातक सदस्य थे। 222 परिवारों में प्राथमिक या इससे कम शिक्षित या केवल साक्षर लोग ही थे। वर्तमान में केवल 27 परिवारों (7.5%) के सदस्य ही महाविद्यालयी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और 177 परिवारों के सदस्य स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। लड़कियों को शिक्षा हेतु अपेक्षाकृत कम भेजा जाता है। केवल 80 परिवारों को ही महाविद्यालय शिक्षा की सुविधा निकटवर्ती क्षेत्रों में प्राप्त है, अन्य को इस सुविधा के लिये दूर जाना पड़ता हैं।

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की सुविधाएं प्रदान की जाती हैं, लेकिन सर्वेक्षित 360 परिवारों में से 141 परिवारों के सदस्यों को कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है; 66 को शुल्क मुक्ति, 33 को छात्रवृत्ति तथा अन्य की पुस्तक, छात्रावास व एक से अधिक सुविधाएं प्राप्त हैं। 27 परिवारों को बेरोजगारी भत्ता भी प्राप्त होता है लेकिन इनमें से अधिकांश परिवारों की राय थी कि यह भत्ता अधिक मिले, समय पर मिले और इसकी स्वीकृति की प्रणाली को सुधारा जावे। लगभग 50% परिवारों की राय थी कि वर्तमान शिक्षण सुविधाएं अपर्याप्त थीं तथा 110 परिवार उदासीन थे। केवल 80 परिवारों के अनुसार वर्तमान शिक्षण सुविधाएं पर्याप्त थी।

117 परिवारों की शिकायत थी कि शिक्षा सम्बन्धी सुविधाएं समय पर उपलब्ध नहीं होती तथा 103 परिवार मानते थे कि ये समय पर उपलब्ध हो जाती हैं, जबकि 140 कोई मत प्रकट नहीं कर सके। 228 परिवारों ने शिक्षा सुविधाओं में से विभिन्न मदों में सुविधा अथवा उनमें सुधार की मांग की यथा—शुल्क मुक्ति, छात्रावास, पुस्तकें, छात्रवृत्ति, कपड़े, हस्तकला शिक्षा अथवा इनमें से कई एक साथ।

सर्वेक्षण का प्रमुख उद्देश्य था अनुसूचित जाति पर शिक्षा के प्रभाव का मूल्यांकन करना। रोजगार के बारे में पूछने पर ज्ञात हुआ कि शिक्षा से गत पांच वर्षों में (95 परिवारों के अनुसार) स्थिति में सुधार हुआ है। 63 परिवार ऐसे भी थे, जिनकी स्थिति पहले से खराब हुई है। 4 परिवारों ने बताया कि उनकी स्थिति बहुत अच्छी हुई है। जबकि 198 की स्थिति यथावत् थी। रोजगार में प्राथमिकता के कारण शिक्षा एवं रोजगार की उपलब्धि में उच्च धनात्मक सम्बन्ध पाया गया। रहन-सहन पर शिक्षा के प्रभाव के बारे में पूछने पर 90 परिवारों (25%) ने बताया कि रहन-सहन का स्तर बढ़ा है जबकि 31 परिवारों के अनुसार इसमें गिरावट आई हैं। 239 परिवार या तो स्थिति को यथावत् मानते हैं अथवा वे उदासीन हैं। शिक्षा एवं रहन-सहन के स्तर में धनात्मक सम्बन्ध पाया गया। अधिकांश परिवारों (234 परिवार) के खान-पान में शिक्षा से कोई परिवर्तन नहीं आया जबकि 93 ने सुधार और 33 ने गिरावट अनुभव की।

शिक्षा से अनुसूचित जाति के लोगों की आकांक्षाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि 80 परिवार अभी भी उदासीन हैं। 106 परिवार कृषि शिक्षा, 87 परिवार प्रशासन, 58 मेडीकल, 53 बी०एड० तथा शेष कानून, इंजिनियरिंग आदि में अपने बच्चों को भेजना चाहते हैं।

एक अपने आपमें महत्त्वपूर्ण एवं रोचक तथ्य उजागर हुआ कि 360 में से 208 परिवार (58%) सरकारी नौकरी पसन्द करते हैं जबकि 62 परिवार कृषि, 23 परिवार उद्योग एवं शेष परिवार अन्य धन्धों में रुचि रखते हैं। शारीरिक उद्यम वाले कार्य के स्थान पर नौकरी पसन्द करना शिक्षा के एक प्रभाव को व्यक्त करता है।

सर्वेक्षित 360 परिवारों में से 279 का किसी राजनैतिक, सामाजिक अथवा धार्मिक संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं था। शेष ने समाजवादी पार्टी, अथवा साम्यवादी पार्टी से अपना सम्बन्ध दर्शाया। 125 परिवारों ने बताया कि 20 सूत्री कार्यक्रम से उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ हैं और 199 परिवारों की इस कार्यक्रम से कतिपय लाभ प्राप्त हुए यथा—ऋण-मुक्ति, भू-आवंटन, ऊंची मजदूरी आदि। 157 परिवार अपनी स्थिति से असन्तुष्ट एवं 185 परिवार सन्तुष्ट पाये गये।

सामाजिक प्रथाओं और बुराइयों के बारे में पूछने पर अधिकांश पर्दा प्रथा, परिवार नियोजन, बाल विवाह एवं संयुक्त परिवार प्रथा के पक्ष में और छुआछूत, जाति-पांति और अन्तर्जातीय विवाह के विपक्ष में पाये गये। स्पष्ट है शिक्षा प्रसार सामाजिक बन्धनों को बड़ी सीमा तक तोड़ने में असमर्थ रहा है। बाल-विवाह, पर्दा प्रथा और संयुक्त परिवार प्रथा के पक्ष में होना इन लोगों की रूढ़िवादिता को व्यक्त करता है फिर भी शिक्षा का सामाजिक, आर्थिक, रहन-सहन, खान-पान तथा अन्य दशाओं पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है।

6. Socio-Economic Analysis of Physically Handicapped

Planning Forum of **Seth G. L. Bihani, S. D. Post-graduate College, Sriganganagar** did a commendable work by undertaking a Socio-economic

Survey of Our Physically Handicapped Brothers and Sisters of Sriganganagar City.

Methodology : The dedicated workers of the Forum adopted the Census Method of the survey technique. As no office in Sriganganagar was in a position to provide the exact number of handicapped the students went to the bus stands, factories, railway stations, temples, mosques, gurdwaras. They went around all the local markets to search out and locate the handicapped. They could collect the date for about 70 handicapped and divided the information thus gathered into two main economic groups the earning hand and non-earning hands.

Findings : (i) Out of the total lot interviewed 46% constituted earning hands. Among them 26% are those whose monthly income is less tham Rs. 150/- per month; 17% were earning within the range of Rs. 60 to Rs. 150/- per month, and 6% were earning between Rs. 30/- to Rs. 60/- and the remaining 3% could hardly earn Re. 1/- to Rs. 30/- per month. (ii) 54% of the handicapped were not earning anything, and depended on the support of their families. Out of this lot, 10 to 20% were students and rest of them were beggars. They were illiterates and considered begging an easy job. (iii) Handicapped were of different nature; 22.8% were blind—one of them was a first class Post-graduate in two subjects; 54.3% were crippled—half of them had only one leg, 8.6% were deaf and dumb; 4.3% of the total handicapped were humped (iv) The handicapped had their own definite, views about the society. They complained against the callous attitude of the doctors in the local civil hospital and gave vent to their feeling against the bureaucracy also. Although most of them had developed a spirit of resignation, some of them expressed desire for education and cherished to have artificial limbs, some wanted handicapped allowance, and a few, some sort of employment in private and/or Government offices. Almost all of them stood in need of proper medical aid and care. They also sought travelling facilities in bus, and trains. (v) Their attitude towards society was indifferent—21.4% of the handicapped indicated that the society lend them co-operation; 15.7% of the total lot felt that they are looked down upon in the society; 28.6% of the handicapped complained against the apathetic attitude of the soeiety and 34.3% of the handicapped remained silent when asked to express their views about society.

Conclusion : On the basis of the study, the surveyors felt that the handicapped lead a very miserable life, and are ignored in various ways by the society. The social reformers should rise to the occasion and convince the masses to do something for their handicapped brothers aud sisters. It is also suggested, that the responsibility of those handicapped who have none to look after them should be the responsibility of the Government.

B. INVESTIGATIONS UNDERTAKEN BY GIRLS' COLLEGES

7. Statistical Information About Ajmer District

Planning Forum **Savitri Girls College, Ajmer** by conducting a comprehensive study of economic aspects of Ajmer District, made available the latest statistical information on Ajmer District. This District Statistical Encyclopaedia was got printed for the use of officials, planners, policy makers and students. It contains the statistical information on the following aspects : District population, income (year and source-wise), number of banks, production of electricity, roads, rails, detailed information about the crop, year and Tehsilwise production of agricultural products, data about M. F. & A. L. Scheme, Small Savings drive, industries, minerals available in the district, number of scholarships distributed, number of registered unemployed, information about S.C /S.T. persons, educational institutions, government employees, expenditure incurred on Animal Husbandry, M.F. & A.L. agency and loans advanced by the commercial banks, etc.

8. राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के कर्मचारियों में परिवार नियोजन के प्रति दृष्टिकोण :

आपात्काल की बढ़ती हुई परिस्थितियों में राजस्थान विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के परिवार नियोजन के प्रति दृष्टिकोण के अध्ययन करने के उद्देश्य से **विश्वविद्यालय राजस्थान कालेज, जयपुर** के योजना मंच ने दैव प्रतिचयन के आधार पर चुने हुए 50 कर्मचारियों का अध्ययन किया। चूंकि 10 के उत्तर असंतोषजनक थे अतः विश्लेषण 40 कर्मचारियों के ही उत्तर पर निर्भर हैं।

सर्वेक्षण में 300 रु. से 1500 रु. प्रतिमाह आय वाले कर्मचारियों को सम्मिलित किया गया। 700 रु. प्रतिमाह तक आय वाले कर्मचारियों की संख्या 21 तथा अधिक आय वाले कर्मचारियों की संख्या 19 है। सर्वेक्षित 40 कर्मचारियों में से 24 की आयु 32 वर्ष तक है तथा 5 कर्मचारियों की आयु 40 वर्ष से अधिक है तथा 11 कर्मचारी 32 से 40 वर्ष तक की आयु वाले हैं। तीन अथवा कम बच्चों की संख्या वाले कर्मचारियों की संख्या 31 है अर्थात् केवल 9 परिवार ऐसे थे, जिन्हें परिवार नियोजन की तत्काल आवश्यकता थी। 35 कर्मचारी परिवार को सीमित रखने के पक्ष में थे। सीमित परिवार के पक्ष में होने के कारण थे – बच्चों से आर्थिक भार में वृद्धि (18 कर्मचारी), सन्तानोत्पत्ति में समयान्तराल रखना (7 कर्मचारी), स्वतंत्रता की कमी (7 कर्मचारी), डाक्टर की सलाह (2 कर्मचारी) तथा पति की इच्छा (1 कर्मचारी) तथा अन्य कारण (5 कर्मचारी)।

शिक्षित नगरवासियों का सर्वेक्षण होने से यह तथ्य सामने आया कि सभी कर्मचारियों को परिवार नियोजन के तरीकों की जानकारी थी। सर्वाधिक लोकप्रिय साधन नसबन्दी, निरोध, लूप तथा गोलियां थी अन्य साधनों की जानकारी अत्यल्प लोगों को ही थी। इस जानकारी का प्रमुख स्रोत जन प्रचार माध्यम ही थे। स्पष्ट है शिक्षित नगरवासियों में जन प्रचार माध्यम एक सफल साधन है।

परिवार नियोजन साधनों के प्रयोग के बारे से पूछने पर झुँझलाहट भरे उत्तर प्राप्त हुए। सम्भवतः कर्मचारी इस बात को गुप्त एवं व्यक्तिगत रखना पसन्द करते हैं। 25 प्रतिशत ने तो बन्ध्याकरण करा लिया हैं तथा अधिकांश निरोध का प्रयोग करते हैं। शेष 30 में से 17 कर्मचारी भविष्य में परिवार नियोजन के इन्हीं लोकप्रिय साधनों का प्रयोग करते रहेंगे। जो लोग इनका प्रयोग नहीं करना चाहते, उनके अभी इच्छित संतानोत्पत्ति नहीं हुई है।

अधिकांश कर्मचारी 3 बच्चों वाले परिवार के पक्ष में थे—कतिपय कर्मचारियों ने 2 या 4 बच्चों को पसन्द किया। तीन बच्चों में भी अधिकांश कर्मचारी 2 लड़के एवं एक लड़की के संयोग को श्रेष्ठ मानते हैं—इससे स्पष्ट होता है कि आज भी समाज में लड़की को उचित महत्व एवं स्थान प्राप्त नहीं है। सर्वेक्षण से आय एवं बच्चों की संख्या में कोई सह सम्बन्ध ज्ञात नहीं हो सका।

9. सामोला ग्राम का सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण

योजनापीठ, **जी. डी. कन्या महाविद्यालय अलवर** की छात्राओं ने नवीन आर्थिक कार्यक्रम के सन्दर्भ में ग्रामीण आर्थिक एवं सामाजिक जीवन का अध्ययन करने के उद्देश्य से पंचायत समिति उमरैन के सामोला ग्राम का सर्वेक्षण किया।

105 परिवारों के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सामोला ग्राम में भी पूरी अर्थ-व्यवस्था की भांति लगभग 80 प्रतिशत लोग कृषि पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर हैं, इनमें लगभग 7 प्रतिशत परिवार भूमिहीन कृषक भी हैं। ग्रामीण विद्युतीकरण के बावजूद विद्युत का घरेलू प्रयोग (प्रकाश हेतु भी) अभी आरम्भ नहीं हुआ है, केवल 6 परिवार पक्के मकानों की सुविधा का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

ग्राम के 68 प्रतिशत पुरुष एवं 6 प्रतिशत स्त्रियां साक्षर हैं लेकिन फिर भी आधुनिक खाद, बीज, संयन्त्र आदि का प्रयोग पूरा नहीं हो रहा है। 91 प्रतिशत गोबर की खाद का प्रयोग करते हैं। ग्रामीण प्रति व्यक्ति आय बहुत कम होने से कुछ लोग अलवर शहर के कारखानो में अस्थायी श्रमिक के रूप में काम करने हेतु जाते हैं।

केवल 24 प्रतिशत ग्रामवासियों को बीस सूत्री नवीन आर्थिक कार्यक्रम का ज्ञान था। लगभग 60 प्रतिशत ग्रामवासी ऋण ग्रस्त पाये गये और अधिकांश ग्रामवासी सामाजिक बन्धनों के कारण ऋण लेते पाये गये। 21 प्रतिशत परिवार ही येन-केन-प्रकारेण कुछ बचत कर पाते हैं। गत वर्ष अतिवृष्टि से फसल को बहुत नुकसान हुआ। यद्यपि 40 प्रतिशत परिवार सहकारी संस्थाओं के सदस्य हैं, फिर भी सक्रिय लोगों की संख्या अत्यल्प है। अधिकांश ग्रामवासी परिवार नियोजन कार्यक्रम, राष्ट्रीय नियोजन एवं उनकी सफलताओं के बारे में अनभिज्ञ थे। ग्रामवासियों ने सर्वेक्षण के दौरान सामोला में सड़क, विद्युत, सिंचाई के साधन, स्कूल की सुविधाओं में वृद्धि की आवश्यकता पर बल दिया।

10. भरतपुर नगर में परिवार नियोजन विधियों की जानकारी, प्रवृत्ति एवं प्रयोग की जांच :

योजना पीठ, **रामेश्वरी देवी कन्या महाविद्यालय, भरतपुर** ने नगर के कोने-कोने से सूचना एकत्र कर परिवार नियोजन विधियों की जानकारी, प्रवृत्ति एवं प्रयोग की जांच करने के उद्देश्य से

107 व्यक्तियों का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षित व्यक्तियों में 9 के अतिरिक्त शेष सभी शिक्षित परिवार थे। 32 हाई स्कूल, 33 स्नातक, 26 स्नातकोत्तर, 4 एम.बी.,बी.एस. तथा तीन तकनीकी स्तर तक शिक्षित थे। सर्वेक्षित व्यक्तियों में से 60 के 3 अथवा कम जीवित सन्तानें थीं तथा 14 परिवारों के 4, 19 परिवारों के 5 एवं शेष के जीवित संतानों की संख्या 6 से 9 तक थी।

सर्वेक्षित व्यक्तियों में से 91 सीमित परिवार के पक्ष में थे और शेष 16 (14.9%) बड़े परिवारों के पक्ष में थे। 20 व्यक्तियों ने सीमित परिवार के पक्ष में कोई कारण नहीं दिया जबकि 48 ने अधिक बच्चों की आर्थिक भार बताया। शेष 23 ने अन्य दूसरे कारण बताये जैसे—स्वतंत्रता का हनन, खराब स्वास्थ्य, डाक्टर की राय, मकान की कमी, पति को इच्छा, नौकरी-पेशा, गर्भावस्था के दुख:, प्रजनन की पीड़ा आदि। परिवार नियोजन की विधियों के बारे में पूछने पर ज्ञात हुआ कि बन्ध्याकरण और निरोध ही लोकप्रिय साधन हैं। 63 व्यक्तियों को इनकी जानकारी है। गोली, लूप व अन्य माध्यमों/विधियों की जानकारी बहुत कम लोगों को है। इन व्यक्तियों को यह जानकारी विभिन्न माध्यमों से प्राप्त हुई। 28 व्यक्ति किसी विशेष माध्यम का उल्लेख नहीं कर पाये, लेकिन 4 को नेताओं द्वारा, 13 की परिवार नियोजन कार्यकर्ताओं द्वारा, 11 को प्रचार माध्यमों द्वारा, 17 को डाक्टर द्वारा व शेष 18 को अन्य माध्यमों से परिवार नियोजन सम्बन्धी जानकारी हासिल हुई। सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि 20 व्यक्तियों ने बन्ध्याकरण करा लिया था और 24 व्यक्ति निरोध का प्रयोग कर रहे थे, 41 ने परिवार नियोजन के साधनों के प्रयोग के बारे में कोई उत्तर नहीं दिया जबकि शेष 22 व्यक्ति अन्य साधनों का प्रयोग कर रहे थे। परिवार नियोजन विधियों का प्रयोग न करने के कारण केवल 15 व्यक्तियों ने बताये। प्रमुख कारण थे—अज्ञानता, भाग्यवादिता, धार्मान्धता आदि। 50 व्यक्तियों ने भविष्य में भी परिवार नियोजन विधियों के प्रयोग की हाँ भरी है, जबकि इन विधियों की जानकारी 66 व्यक्तियों को थी और 19 व्यक्तियों ने परिवार नियोजन विधियों को प्रयोग में नहीं लाने की बात कही। उन 50 व्यक्तियों में से जिन्होंने परिवार नियोजन विधियों के प्रयोग की हाँ भरी, 13 ने बन्ध्याकरण, 19 ने निरोध, 4 ने लूप, 4 ने गोली व शेष ने अन्य विधियों को पसन्द किया। परिवार नियोजन को न अपनाने के कारणों में कम बच्चों का होना, मित्र व पड़ोसियों से आलोचना का डर व इन विधियों से घृणा मुख्य थे। सर्वेक्षित परिवारों में से 85 ने 2 अथवा 3 बच्चों को बच्चों की आदर्श संख्या बताया। एक परिवार ने 8 बच्चों का होना आदर्श परिवार के लिये आवश्यक बताया। शधिकांश व्यक्तियों ने 2 लड़के एवं एक लड़की के जोड़े की पसन्द किया। 34 व्यक्तियों की पसन्द थी—एक लड़का एवं एक लड़की। अन्य ने विभिन्न संयोगों को पसन्द किया।

शिक्षित मध्यम वर्ग का सर्वेक्षण बताता हैं कि शिक्षा एवं परिवार नियोजन के प्रति जागरुकता, उसका प्रयोग एवं प्रवृत्ति के बीच उच्च सह सम्बन्ध है।

11. कोटा नगर में परिवार नियोजन के ज्ञान, प्रवृत्ति एवं अभ्यास से सम्बद्ध सर्वेक्षण :

योजना मंच, **जानकी देवी बजाज कन्या महाविद्यालय, कोटा** के 23 सदस्यों के दल ने कोटा नगर के 245 परिवारों से सम्पर्क कर परिवार नियोजन के ज्ञान, प्रकृति एवं अभ्यास का एक सर्वेक्षण किया।

सर्वेक्षण प्रतिवेदन में परिवार नियोजन के पक्ष एवं विपक्ष में अति सुन्दर एवं अकाट्य तर्क प्रस्तुत करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि वर्तमान सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों में राष्ट्रीय जनसंख्या समस्या का समाधान आवश्यक है और इसी कारण परिवार नियोजन एक आवश्यकता बन गई है। छोटे परिवारों के पक्ष में रानी विक्टोरिया, डा० मेरी सप्तम् तथा अमेरिका की मारगेट सेंगर के भी विचार प्रस्तुत किये गये। सर्वेक्षण से पता चला कि अशिक्षा एवं संस्कार परिवार नियोजन के पक्ष में महत्वपूर्ण बाधाएं हैं।

1967-68 से 1975-76 के वर्षों में कोटा में औसतन लगभग 2,000 नसबन्दी की गई, लेकिन 1976-77 के वर्ष में केवल जनवरी, 1977 तक 24,834 नसबन्दी की जा चुकी थी। यह सब कुछ परिवार नियोजन अभियान, परिवार नियोजन पखवाड़े, प्रेरणा राशि आदि के कारण सम्भव हुआ।

कोटा नगर के 17,841 सन्तानोत्पति योग्य जोड़ों में से 245 जोड़ों का अध्ययन किया गया, जिनमें से 213 सवर्ण हिन्दू, 2 गैरसवर्ण हिन्दू एवं 30 अन्य धर्मावलम्बी पाये गये। 232 जोड़ों में से एक अथवा दूसरा साथी हाई स्कूल तक अथवा अधिक शिक्षित था। केवल एक जोड़ा अशिक्षित था। 195 जोड़ों का मासिक व्यय रु. 500 अथवा अधिक और 45 जोड़ों का मासिक व्यय रु. 200 से रु. 500 के बीच था।

सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि 78 प्रतिशत परिवार अधिक संतानों को आर्थिक भार मानते हैं तथा शेष स्वास्थ्य की दृष्टि से, आवास गृह की कमी की दृष्टि से, चिकित्सक की सलाह से प्रेरित होकर, प्रसव काल की वेदना के कारण अथवा दो संतानों में यथेष्ट समयान्तराल के उद्देश्य से परिवार नियोजन को अपनाकर परिवार को सीमित रखना चाहते हैं।

शत प्रतिशत परिवारों को बन्ध्याकरण, 84 प्रतिशत को निरोध की जानकारी थी, जबकि अन्य साधनों की जानकारी बहुत कम लोगों को थी। अधिकांश जोड़ों को परिवार नियोजन की जानकारी राजकीय प्रचार माध्यम एवं परिवार नियोजन केन्द्र से प्राप्त हुई। संतति निग्रह विधियों के प्रयोग के बारे में पूछने पर ज्ञात हुआ कि 57% सूचनादाताओं ने बन्ध्याकरण करा लिया है तथा 27 प्रतिशत सूचनादाता निरोध और 16 प्रतिशत सूचनादाता अन्य विधियों का प्रयोग करते हैं। 16 प्रतिशत युवक परिवार नियोजन के किसी भी माध्यम को अभी नहीं अपना रहे हैं इनमें से 3 वांछित सन्तानों की संख्या न होने से, 8 पुत्र के अभाव से, 4 धार्मिक कारण से परिवार नियोजन की नहीं अपनाना चाहते थे। एक परिवार संतति निग्रह विधियों को हानिप्रद एवं एक परिवार इन्हें महंगा होने के कारण नहीं अपना रहा है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि अधिकांश परिवार संतति निग्रह के पक्ष में हैं, उसकी विधियों की जानकारी रखते हैं और बन्ध्याकरण तथा निरोध सबसे सुगम, सरल एवं लोकप्रिय विधियां हैं।

12. Educational Aspirations of the Scheduled Caste Students :

Planning Forum of **Sri Sathya Sai College, Jaipur** conducted a survey of the occupational aspirations of the Scheduled Caste students with a view to examining

the relationship between their gradually ameliorating socio-economic status and aspirations. The study was confined to the school going Scheduled Caste students residing in a 'Harijan Basti' near Brahmpuri. Out of 400 Harijans residing in that 'Basti', the surveyors selected 20 students who were in the last years of their schooling, and selection was made on purposive basis through 'quota sampling'. In order to analyse the nature of aspirations minutely, the material regarding the background of the students in terms of age, course of study, parent's education, family income etc. was taken into consideration. The semographic characteristics of the S.C. was also kept in mind (According to 1971 census the S.C. population in India is 14.60% of the total population, while in the State of Rajasthan, it is 15.82% of the total population of the State. Thus their population is little more than the national average. The literacy in Rajasthan according to 1971 census is 28.74% for males and 8.46% for the females).

Findings : (i) Girls were not found continuing study beyond the Primary level. (ii) Cent per cent mothers and 55% fathers of the Scheduled Caste Students were illiterates–25% fathers had only Primary level schooling, only 20% fathers continued education upto Middle School standard. (iii) Almost all the parents had been earning their living by traditional methods. (iv) only 20% students considered their economic status comfortable but the remaining 80% felt economic constraints. (v) 40% students did not want to continue their education beyond Higher Secondary—some 30% wanted to study upto Degree level and the rest 30% upto the Post graduate level. (vi) 90% students showed no inclination to take up the jobs of their parents; 60% wanted to join Government Service, 10% wanted to enter politics and undertake the work of social reforms; 5% were keen to run trade and commerce; curiously enough none showed inclination for farming, nursing, police and military professions. (vii) 75% were aware of the fact that certain quota of posts is reserved for them in Government Service and the remaining 25% were quite unaware of this. Judged as a whole, their ambitions and aspirations were not very high. The reasons are not far to seek: lack of motivation, suppression and oppressions of centuries, lack of vocational guidance, illiteracy of their parents, poor socio-economic conditions, belief in fate etc. were primarily the causes responsible for their low occupational aspirations.

13. श्रीगंगानगर के प्रजनन योग्य 100 परिवारों का परिवार नियोजन से सम्बद्ध ज्ञान, प्रवृत्ति और प्रयोग का सर्वेक्षण

चौधरी बालूराम गोदरा राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर की योजना गोष्ठी ने श्रीगंगानगर के प्रजनन योग्य 100 परिवारों का परिवार नियोजन का ज्ञान, प्रवृत्ति और प्रयोग सम्बन्धी सर्वेक्षण किया। गंगा नहर के कारण कृषि एवं आर्थिक दृष्टि से उन्नत इस जिले में जाट, विश्नोई एवं सिक्ख लोगों का आधिक्य है। नगर में लगभग 90,000 जनसंख्या निवास करती है।

शिक्षा की दृष्टि से सम्भवत: यह नगर राजस्थान के अग्रगणी नगरों में से हैं। सर्वेक्षण में सभी आय वर्ग के सूचना दाताओं को सम्मिलित किया गया है। 55% सूचनादाता रु. 300 से रु. 600 मासिक आय वर्ग के थे। अधिकांश मामलों में इस क्षेत्र में विवाह के समय आयु अन्य क्षेत्रों की तुलना में ऊंची थी। सर्वेक्षित 100 पुरुषों में से 10 तथा स्त्रियों में से 25 अशिक्षित थे, अन्य प्राथमिक स्तर से स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षित थे। 55% पुरुष तथा 20 स्त्रियाँ हायर सैकण्डरी से अधिक और 35% पुरुष तथा 55% स्त्रियाँ हायर सैकण्डरी से कम शिक्षित थीं।

62% प्रतिशत परिवार अधिक बच्चों को आर्थिक भार मानते हैं, 25% कम बच्चों की देखभाल ठीक से हो पाती है, 10% मामलों में पुरुष कम बच्चे चाहते हैं तथा 3% अन्य कारणों से छोटा एवं सीमित परिवार को पसन्द करते हैं। अन्य स्थानों के सर्वेक्षण के विपरीत श्रीगंगानगर में बच्चों की प्रसव पीड़ा को कष्टकारक किसी ने भी नहीं माना है। इसी प्रकार किसी भी सूचनादाता ने यह नहीं माना कि बच्चों से स्वतंत्रता समाप्त होती है।

सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि 38% सूचनादाता बन्ध्याकरण द्वारा, 45% निरोध के प्रयोग द्वारा अन्य साधनों से परिवार को नियोजित करने का प्रयास कर रहे हैं। 2% सूचनादाता अभी परिवार नियोजन में विश्वास नहीं रखते। निरोध का प्रयोग करने वालों में अधिकांश सन्तानोत्पति में अन्तराल के उद्देश्य से ऐसा करते हैं। लूप, गोली को कई दम्पतियों ने हानिकारक माना, जबकि डायफ्राम अलोकप्रिय साधन था।

परिवार नियोजन की जानकारी का मुख्य स्रोत परिवार नियोजन कार्यकर्ता (40%), मित्र एवं सम्बन्धी (30%), डाक्टर (20%), प्रचार माध्यम एवं अन्य (10%) थे। श्रीगंगानगर जिले में प्रचार माध्यम की असफलता इससे स्पष्ट झलकती है।

75% दम्पतियों के अनुसार परिवार में बच्चों की आदर्श संख्या 3 तथा 20% के अनुसार यह संख्या 2 और 5% के अनुसार 1, 4 अथवा 6 भी थी।

परिवार नियोजन को न अपनाने के कारणों में रिश्तेदारों एवं पड़ोसियों की आलोचना, बच्चों को ईश्वरीय देन मानना, बड़े परिवारों की महत्वकांक्षा, खर्चीले साधन आदि हैं। इनका निवारण शिक्षा प्रसार एवं सरकार द्वारा परिवार नियोजन को लोकप्रिय बनाने के प्रयत्नों द्वारा ही सम्भव है।

14. उदयपुर स्थित पानेरियों की भादड़ी ग्राम के 100 पानेरी परिवारों के परिवार नियोजन ज्ञान, पद्धति एवं प्रयोग का सर्वेक्षण :

मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर की 50 छात्राओं ने पानेरियों की भादड़ी ग्राम के 100 पानेरी परिवारों का परिवार नियोजन ज्ञान, पद्धति एवं प्रयोग विषय पर सर्वेक्षण किया। शिक्षा के प्रचार के कारण अधिकांश परिवारों में बच्चों की संख्या 3-4 पाई गई। कतिपय परिवारों में बच्चों की संख्या 6 से 10 तक भी पाई गई। आधे से अधिक परिवारों द्वारा परिवार नियोजन सम्बन्धी साधनों का उपयोग किया जाता है। शेष ने अपना आपरेशन करवा रखा है। उदयपुर नगर के निकट (15 किलोमीटर) स्थित होने के कारण इस गांव में परिवार नियोजन, रहन-सहन,

सफाई आदि के प्रति बहुत अधिक जागरुकता पाई गई। परम्परागत रूढ़िवादी पद्धतियों से ग्रस्त ग्रामवासियों का प्रमुख व्यवसाय कृषि ही है।

C. Investgations Undertaken by Degree Colleges :

15. ग्राम लोधा में परिवार नियोजन की जानकारी, सम्मान व व्यवहार सम्बन्धी समीक्षा :

योजना मंच, **राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा** के सदस्यों ने बांसवाड़ा से तीन किलोमीटर दूर महाविद्यालय के दत्तक ग्राम लोधा में परिवार नियोजन की जानकारी, ज्ञान व व्यवहार सम्बन्धी सर्वेक्षण किया। 875 एकड़ वाले व 101 परिवारों (569 जनसंख्या) वाले ग्राम में 92 परिवारों से सम्पर्क किया गया। जिनमें से 73 प्रतिशत (68) परिवारों की मासिक आय रु. 100 व 300 के बीच है, 12 प्रतिशत परिवारों की आय रु. 300 व 400 के बीच हैं और 8.7 प्रतिशत परिवारों की मासिक आय रु. 400 से अधिक है। 5.4 प्रतिशत परिवार ऐसे भी हैं, जिनकी मासिक आय रु. 100 से भी कम है।

92 में से 43 परिवार, परिवार नियोजन की विधियों से अवगत थे, इनमें से 42 बन्ध्याकरण, 3 निरोध, 2 गोली व 2 विलम्ब से सम्भोग की जानकारी रखते थे। ये जानकारी मुख्यत: गांव के नेता (17 को), सरकारी कर्मचारी (14 को), मित्रों व रिश्तेदारों से (6 को) प्राप्त हुई। शेष को यह जानकारी चिकित्सकों, परिवार नियोजन कार्यकर्ता, प्रचार माध्यमिक आदि से प्राप्त हुई। 49 परिवारों में से केवल 21 परिवार ही परिवार नियोजन विधियों का प्रयोग करते हैं, इनमें से भी 18 ने बन्ध्याकरण करा लिया है तथा शेष 3 में से एक निरोध व दो विलम्ब से सम्भोग विधि अपनाते हैं। अन्य परिवारों द्वारा परिवार नियोजन पद्धति न अपनाने के कारणों में कम सन्तान होना, बड़ा परिवार रखने को इच्छा होना, आलोचना का भय, वृद्धावस्था, संतान को ईश्वरीय देन मानना आदि प्रमुख बताये गये।

60 प्रतिशत परिवारों ने परिवार नियोजन करने को स्वीकारा है, क्योंकि उनकी दृष्टि से अधिक बच्चे आर्थिक भार हैं एवं आजादी की कम करते हैं। सर्वाधिक लोकप्रिय साधन बन्ध्याकरण है। 92 दम्पतियों में से 44 ने परिवार में संतानों की आदर्श संख्या 3 (2 लड़के व 1 लड़की) बतायी। 22 दम्पतियों ने चार संतानों को (2 लड़के व 2 लड़कियां) आदर्श संख्या बताया हैं। शेष 26 ने 4 से अधिक बच्चों का होना पसन्द किया।

शिक्षा प्रसार, शिशु कल्याण, प्रचार साधनों का अधिक प्रयोग, कानूनी बाध्यता एवं बल प्रयोग की कमी होने पर ही परिवार नियोजन कार्यक्रम सफल हो सकेगा। परिवार में संतानों को आदर्श संख्या हमारी सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिये। उसके लिये कानूनी बाध्यता जैसी कोई चीज नहीं होनी चाहिये।

16. बाड़मेर नगर के 90 परिवारों का परिवार नियोजन : ज्ञान, प्रवृत्ति एवं प्रयोग सम्बन्धी सर्वेक्षण :

योजना गोष्ठी, **राजकीय महाविद्यालय, बाड़मेर** ने बाड़मेर नगर के चयनित 90 परिवारों का परिवार नियोजन, ज्ञान, प्रवृत्ति एवं प्रयोग सम्बन्धी सर्वेक्षण किया। आधे परिवारों की आय रु.300 तक एवं 16

परिवारों की आय रु. 600 मे अधिक है। केवल प्रजनन योग्य आयु वाले जोड़ों को ही सर्वेक्षण में सम्मिलित किया गया। आधे परिवारों में पुरुषों की आयु 25 से 35 वर्ष के बीच थी। 33 परिवारों में पुरुष की आयु 35 वर्ष व 49 वर्ष के बीच पाई गई। महिलाओं की आयु का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि निम्न आयु वर्ग मे महिलाओं की संख्या उच्च आयु वर्ग की तुलना में (पुरुषों की तुलना में भी) अधिक है। इससे स्पष्ट होता हैं कि लड़कियों की शादी आज भी पुरुषों की तुलना में छोटी उम्र में ही हो जाती है। गोने के समय 90 परिवारों में से 51 परिवारों के लड़के व 17 परिवारों की लड़कियों की आयु 18 वर्ष या इससे अधिक थी।

सर्वेक्षित परिवारों में से 47 सरकारी नौकर, 26 स्वतंत्र व्यवसायी व 17 मजदूर थे। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि नौकरी पेशा वर्ग के औसत बच्चों की संख्या व्यवसायी की तुलना में कम और स्वतंत्र व्यवसायी परिवार के औसत बच्चों की संख्या मजदूर की तुलना में कम थी।

शिक्षा एवं बच्चों की संख्या का सम्बन्ध ज्ञात करने पर ज्ञात हुआ कि अशिक्षित परिवारों में बच्चों की संख्या शिक्षित परिवारों की तुलना में अधिक थी। लगभग 25% पुरुष अशिक्षित, 28% हायर सैकण्डरी, 25% हायर सैकण्डरी से कम एवं शेष हायर सैकण्डरी से अधिक शिक्षित थे।

69 प्रतिशत परिवारों में तीन अथवा कम बच्चे पाये गये दो परिवारों के बच्चों की संख्या 7 से भी अधिक पाई गई। 53.3 प्रतिशत परिवार अधिक बच्चों की आर्थिक भार मानते हैं और 20 प्रतिशत का मानना है कि बच्चे कष्टदायक होने के साथ ही पारिवारिक स्वतंत्रता को सीमित करते हैं, शेष 24 परिवारों ने परिवार सीमित रखने के अन्य अनेक कारण बताये।

83.3 प्रतिशत (90 में से 75) परिवारों को परिवार नियोजन साधनों के बारे में जानकारी थी। इनमें से 29 को बन्ध्याकरण, 18 की निरोध, 11 को सम्भोग में अन्तराल, 5 को लूप व शेष को अन्य साधन अधिक प्रिय थे। परिवार नियोजन की जानकारी का स्रोत डाक्टर (27), प्रचार माध्यम (13), परिवार नियोजन कार्यकर्ता (10), मित्र व सम्बन्धी (12) व शेष को नेता, सरकारी कर्मचारी या अन्य साधन पाये गये। आश्चर्य की बात है कि परिवार नियोजन कार्यकर्ता 90 में से 10 परिवारों तक ही पहुँच पाये हैं। 90 में से केवल 51 (56.7%) युगल परिवार-नियोजन हेतु किसी न किसी साधन का प्रयोग करते हैं। 19 ने बन्ध्याकरण 17 ने निरोध व 15 ने अन्य दूसरे साधनों का प्रयोग बताया है। 14 युगल इच्छित बच्चों की संख्या प्राप्त न होने के कारण परिवार नियोजन साधनों का प्रयोग नहीं कर रहे थे। किसी भी व्यक्ति ने परिवार नियोजन कार्यक्रम को धर्म विरुद्ध नहीं माना था। कुल 6 परिवारों ने परिवार नियोजन के साधनों की भविष्य में प्रयोग करने की मनाही की, क्योंकि वे बड़े परिवार की आकांक्षा रखते थे या सन्तान को ईश्वरीय देन मानते थे या रिश्तेदारों अथवा पड़ोसियों की आलोचना से डरते थे या इन साधनों को खर्चीला मानते थे या प्रतिबन्धात्मक उपयोग से संतुष्टि में कमी मानते थे।

60 प्रतिशत परिवारों ने बच्चों की आदर्श संख्या 3, 16.67 प्रतिशत ने 2, 9 प्रतिशत ने 4 तथा शेष ने 4 से अधिक बताया। दो परिवार ऐसे भी थे, जिन्होंने आदर्श परिवार में बच्चों की संख्या 6 से भी अधिक बताई।

17. बिजयनगर के छात्रों का सामाजिक व आर्थिक सर्वेक्षण :

स्थानीय महाविद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक व आर्थिक परिवेश एवं उस पर उच्च शिक्षा के प्रभाव का गहराई से अध्ययन करने के उद्देश्य से **श्री प्राज्ञ महाविद्यालय, बिजयनगर** (अजमेर) की योजना गोष्ठी ने छात्रों का सामाजिक एवं आर्थिक सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण के निष्कर्षों से महाविद्यालय प्रशासन की नीति निर्धारण में सहयोग मिलने की आशा थी।

महाविद्यालय के 210 विद्यार्थियों में से 72.86 (153) विद्यार्थी ही सर्वेक्षण में सम्मिलित हो पाये, शेष ने प्रश्नावली भर कर नहीं लौटाई। महाविद्यालय में केवल 3 छात्राएं अध्ययनरत हैं। तथा 48.37 प्रतिशत छात्र नगरपालिका क्षेत्रों के रहने वाले हैं। 92.81% विद्यार्थी अविवाहित हैं तथा 10.13% विद्यार्थी आत्म निर्भर होने के पूर्व ही विवाहित हो जाते हैं। महाविद्यालय में 57.52% छात्र हिन्दू एवं 36.6% छात्र जैन हैं। अनुसूचित जाति एवं जन-जाति के छात्रों की संख्या केवल 2% हैं। अधिकांश छात्रों के माता-पिता कम शिक्षित हैं। स्नातक एवं स्नातकोत्तर माताओं एवं पिताओं की संख्या नगण्य है, अधिकांश पिता माध्यमिक स्तर के एवं अधिकांश माताएं प्राथमिक स्तर तक ही शिक्षित हैं।

1,000 रु. प्रति वर्ष से कम आय वाले परिवार का कोई छात्र महाविद्यालय में अध्ययनरत नहीं हैं। 72.53% छात्र रु. 2,000 से रु. 7,500 प्रति वर्ष आय वर्ग वाले परिवारों से सम्बन्धित है। तथा 10,000 रु. से अधिक आय वाले परिवारों के छात्रों का प्रतिशत 12.42 हैं। 43.4% छात्र व्यवसायिक, 22.22% छात्र कृषि एवं 22.22% छात्र राजकीय सेवा में संलग्न परिवारों से सम्बन्धित हैं। 57 छात्र माता-पिता के साथ रहते हैं तथा 17 छात्र स्थानीय संरक्षकों के पास रहते हैं और 47 छात्र रोज आस पास के गांवों से मुख्य रूप से साईकिल द्वारा अध्ययन हेतु आते हैं, केवल 32 छात्र किराये के कमरों में निवास करते हैं। माता-पिता के पास रहने वाले छात्र 100 रु. प्रतिमाह तक व्यय करते हैं। किराये के कमरे लेकर रहने वाले छात्रों में से 10 को छोड़कर शेष रु. 200 प्रतिमाह तक व्यय करते हैं। माता-पिता के पास रहने वाले उच्च वर्ग के कुछ छात्र रु. 200 प्रतिमाह से भी अधिक व्यय करते हैं।

60.13% छात्रों ने खेलकूद, 18.43% छात्रों ने प्रातः भ्रमण में अभिरुचि प्रदर्शित की है। बालचर, व्यायाम, छात्र सेवा तथा शैक्षणिक परिषदों में बहुत कम छात्रों ने रुचि दिखाई है। 28.76% छात्रों ने चित्रकला, 32.03% छात्रों ने संगीत तथा 30.71% ने सांस्कृतिक, साहित्यिक, फोटोग्राफी आदि के लिये अभिरुचि व्यक्त की।

महत्वाकांक्षाओं के बारे में पूछने पर केवल 90.85% छात्रों ने ही उत्तर दिया, शेष छात्र सम्भवतः भावी जीवन के उद्देश्य निश्चित नहीं कर सके हैं। वकालात की कोई छात्र अपना लक्ष्य नहीं बनाना चाहता है। 13.73% छात्र चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट बनना चाहते हैं तथा 52.57% छात्र (73) राजकीय सेवा करना पसन्द करते हैं। 25.49% छात्र व्यवसाय में रुचि रखते हैं। मुख्य बात यह है कि कृषि क्षेत्र के विद्यार्थी कृषि को भावी जीवन में अपनाना पसन्द करते हैं।

महाविद्यालय प्रशासन, पुस्तकालय, खेलकूद तथा शिक्षा पद्धति (आंतरिक मूल्यांकन पद्धति सहित) के बारे में छात्रों ने महत्वपूर्ण एवं आवश्यक सुझाव प्रस्तुत किये। महाविद्यालय प्रशासन ने इन सुझावों के अनुरूप कार्यवाही की है, इससे ही सर्वेक्षण की सार्थकता प्रतीत होती है।

18. बीस सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के अन्तर्गत चालू की गई 'बुक बैंक' योजना की क्रियान्विति एवं सफलता का अध्ययन :

योजना गोष्ठी, **चिड़ावा महाविद्यालय, चिड़ावा** (झुंझुनू) ने बीस सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के अन्तर्गत चालू की गई "बुक बैंक" योजना की चिड़ावा नगर में क्रियान्विति एवं सफलता का अध्ययन किया।

चिड़ावा नगर में कुल 17 शिक्षण संस्थाएं हैं, इनमें 9 प्राथमिक विद्यालय, 3 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 3 माध्यमिक विद्यालय एवं 2 महाविद्यालय हैं। बाल निकेतन विद्यालय, चिड़ावा के अतिरिक्त सभी आठ प्राथमिक विद्यालयों में बुक बैंक योजना के अन्तर्गत कुल 1269 छात्रों में से 425 छात्रों को पुस्तकें, कापियां, स्लेट एवं पैन्सिल आदि का वितरण किया गया। बुक बैंक योजना को नागरिक सम्मेलन, नगरपालिका, स्थानीय नागरिक, सरकार एवं स्वयं छात्र भी सफल बनाने के लिये कृत संकल्प पाये गये। अर्थाभाव एवं फटी पुस्तकों का लाना मुख्य समस्यायें थीं, जिनके कारण योजना का सुचारू क्रियान्वयन संभव नहीं हो रहा हैं।

1526 विद्यार्थियों वाले तीन उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 517 छात्रों को 1062 पुस्तकें वितरित को गईं। इन सभी स्कूलों में निर्धन एवं सहायता कोष नहीं हैं, अतः बुक बैंक निर्धन छात्रों को राहत पहुँचाने के लिए एक आदर्श योजना सिद्ध हुई, परन्तु अर्थाभाव के कारण यह योजना और भली प्रकार लागू नहीं हो सकी है।

ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा को सस्ता, सुलभ व आकर्षक बनाने की आवश्यकता पर बल दिया जाता रहा है, जिससे कि ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा का प्रसार हो सके। चिड़ावा में स्थित तीन उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 1684 विद्यार्थियों में से 19.9% छात्रों को बुक बैंक योजना के अन्तर्गत लाभ प्रदान किया गया। इन तीनों विद्यालयों के पास 988 पुस्तकें बुक बैंक में जमा हैं। राज्य सरकार, छात्र सहायता, नागरिक सम्मेलन, व नगर पालिका आदि से योजना को सहयोग प्राप्त होता रहा है, जिनसे 2222.80 रु० नकद प्राप्त हुए।

चिड़ावा में दो महाविद्यालय हैं। एक रायबहादुर सेठ सूरजमल शिव प्रसाद वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय तथा दूसरा चिड़ावा कालेज, चिड़ावा इनमें क्रमशः 9 एवं 667 छात्र विद्याध्ययन कर रहे हैं। संस्कृत महाविद्यालय में 511 तथा चिड़ावा कालेज में 1781 पुस्तकें बुक बैंक में हैं तथा लगभग 90% विद्यार्थियों को इनसे लाभ मिल रहा है। निर्धन छात्र सहायता कोष, सोमानी एजूकेशन सोसायटी, नगर पालिका, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त सहयोग से बुक बैंक योजना की प्रगति आशातीत रही है और पिछड़े वर्ग के छात्रों एवं गरीब छात्रों को पूरे सैट विद्याध्ययन हेतु प्रदान किये जाते रहे हैं।

विद्या प्रसार में बुक बैंक के महत्त्व को कम नहीं किया जा सकता तथा इस ओर चिड़ावा नगर की शिक्षण संस्थाएं सराहनीय कार्य कर रही हैं। आवश्यकता इस बात की है कि चिड़ावा में सहायक

बुक डिपो की स्थापना की जावे, विद्यार्थियों का सहयोग मिले, पुस्तकें रखने के लिये अलमारियों का प्रबन्ध हो, तथा धनी वर्ष अधिक चन्दा एवं अनुदान प्रदान करें।

19. चित्तौड़गढ़ के ओछड़ी ग्राम के 150 परिवारों का परिवार नियोजन सर्वेक्षण :

योजना गोष्ठी, **राजकीय महाविद्यालय, चित्तौड़गढ़** ने शहर से तीन मील दूर ओछड़ी ग्राम के 200 में से 150 परिवारों का परिवार नियोजन सर्वेक्षण कर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि 150 में से 120 परिवारों द्वारा परिवार नियोजन पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। 130 परिवारों सें सें 90 नसबन्दी, 20 लूप, 10 निरोध और 10 गोलियों का प्रयोग करते हैं, स्पष्ट है नसबन्दी परिवार नियोजन का पर्याय बनता जा रहा है।

एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि 130 में से 100 परिवारों ने बच्चों को आर्थिक भार मानकर परिवार नियोजन को अपनाया जबकि 35 ने प्रचार माध्यम, डाक्टर के परामर्श तथा 5 ने रुग्णावस्था के कारण परिवार नियोजन को अपनाया। परिवार नियोजन को अपनाने वालों में से सर्वाधिक व्यक्ति पचास 30 से 40 वर्ष को आयु के तथा केवल बीस व्यक्ति 50 वर्ष को आयु से ऊपर थे। 30 व्यक्तियों ने 30 वर्ष की आयु से पूर्व ही परिवार नियोजन करना आरम्भ कर दिया है। सर्वेक्षित परिवारों में से केवल 24 परिवार ऐसे थे, जिन्होंने 3 अथवा कम बच्चे होने पर ही परिवार नियोजन को अपनाया। 40 के 3 से 5 बच्चे। 35 के 5 से 7 बच्चे एवं 31 के 7 से अधिक बच्चे थे।

परिवार नियोजन न अपनाने के जो प्रमुख कारण बताये गये वे थे—धर्मान्धता, रूढ़िवादिता, सन्तान को ईश्वरीय देन मानना अथवा सन्तानों की संख्या कम होना। कुछ परिवार पुत्रोत्पत्ति की आशा में परिवार नियोजन के साधनों का प्रयोग नहीं कर रहे हैं, 25% परिवार बड़े परिवारों के पक्ष में हैं और इसी कारण परिवार नियोजन के पक्ष में नहीं हैं।

सर्वेक्षण कर्त्ताओं ने कुछ सुझाव प्रस्तुत किये। सर्वाधिक महत्वपूर्ण सुझाव था प्रचार माध्यमों के द्वारा सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यकर्ता परिवार नियोजन के प्रति जन साधारण में जागरूकता उत्पन्न करें और साथ ही शिक्षा प्रसार विशेषकर स्त्री शिक्षा पर अधिक बल दिया जावे, क्योंकि शिक्षा प्रसार से रूढ़िवादिता एवं धर्मान्धता समाप्त होगी।

20. भण्डाना (दौसा तहसील) को एक आदर्श ग्राम के रूप में विकसित करने हेतु गोद लेकर सर्वेक्षण करना :

राष्ट्रीय सेवा योजना और गोष्ठी के समन्वय एवं सहयोग का अनुपम उदाहरण **राजकीय महाविद्यालय, दौसा (जयपुर)** द्वारा भण्डाना (दौसा तहसील) को एक आदर्श ग्राम के रूप में विकसित करने हेतु गोद लेना है। इस गाँव में प्रो० अशोक बापना के संयोजन में गोष्ठी के सदस्यों ने साक्षरता, यातायात, स्वास्थ्य, कृषि उन्नयन, ग्रामीण ऋण, सहकारिता आदि के सर्वेक्षण का कार्य किया है। विकास समारोह के अवसर पर "ग्राम विकास के विविध आयाम" नामक 74 पेज की एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया गया, जिसका सम्पादन प्रो० योगेशचन्द्र शर्मा एवं सह-सम्पादन प्रो० अशोक बापना ने किया। स्मारिका में ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा, पशु-पालन, पेय-जल, बैंकिंग आदि समस्याओं पर विभिन्न विद्वानों के विचार एवं अनुभवों के साथ सुझाव भी प्रस्तुत किये गये हैं।

स्मारिका में भूतपूर्व केन्द्रीय योजना राज्यमंत्री श्री शंकर घोष के "योजना और अर्थव्यवस्था

वर्तमान चुनौतियाँ" विषय पर भाषण, प्रो० सी० एस० बरला, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के "राजस्थान में कृषि विकास मूल्याँकन एवं सीमाएं" विषय पर भाषण, विकास अधिकारी, स्टेट बैंक आफ इण्डिया के लेख एवं अन्य इसी प्रकार के लेख प्रकाशित किये गये हैं। साथ ही गोष्ठी के गत वर्ष के कार्य-कलापों का विस्तृत विवरण भी प्रस्तुत किया गया है। यह कार्य सराहनीय तो है ही साथ ही अन्य महाविद्यालयों के लिये अनुकरणीय भी है।

21. 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम तथा डीडवाना तहसील में ग्राम्य विकास : एक सर्वेक्षण :

राजकीय बांगड़ महाविद्यालय, डीडवाना के आयोजन मंच ने 18 माह के 20 सूत्री कार्यक्रम के क्रियान्वयन से डीडवाना क्षेत्र में ग्राम्य विकास पर बड़े प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से एक सर्वेक्षण किया। देव निदर्शन तथा सौद्देश्य निदर्शन पद्धति से छांटे गये पांच गांवों में 120 व्यक्तियों से साक्षात्कार किया गया।

प्रति परिवार सदस्यों की संख्या राष्ट्रीय आदर्श से अधिक पाई गई। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लोगों की संख्या केवल 19% है, जबकि राजस्थान में यह प्रतिशत 28 है। इन पांचों गावों में साक्षरता का औसत 28.8 है, जो कि राष्ट्रीय औसत के निकट है। पायली ग्राम में यह सर्वाधिक 41.4 है, जबकि अन्य चार गांवों में से तीन में 22.24 तथा चौथे में 32.2 है। गरीबी, समयाभाव, अरुचि, आलस्य एवं पथ प्रदर्शन की कमी अशिक्षा के प्रमुख कारण पाये गये।

कृषि इस क्षेत्र का प्रमुख व्यवसाय है, लेकिन मजदूरी, नौकरी, सुनारी जैसे कार्य भी सामान्य हैं। 120 में से चार व्यक्ति भूमिहीन किसान हैं, जिन्हें 20 सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत भी भूमि आवंटित नहीं की गई। इसी प्रकार 10 व्यक्तियों के पास निवास हेतु भूखण्ड नहीं है तथा बीस सूत्री कार्यक्रम में भूमि आवंटित नहीं की गई है।

62 परिवारों की आय रु० 3000 वार्षिक से कम तथा 42 परिवारों की आय रु० 3000 तथा रु० 5000 वार्षिक के बीच है। कृषि कार्य में संलग्न 95 परिवारों में से 58 परिवारों के पास 20 से 49 बीघा भूमि प्रति परिवार हैं तथा 18 परिवारों के पास 20 बीघा से कम भूमि प्रति परिवार है।

इस क्षेत्र में जयपुर-नागौर आंचलिक ग्रामीण बैंक खुल जाने के बावजूद भी बहुत कम लोगों ने इस सुविधा का लाभ उठाया है। छोटी खाटू में 11 व्यक्तियों ने बैंक, सरकार व व्यापारिक बैंकों से ऋण प्राप्त किये हैं। अन्य 14 व्यक्तियों ने साहूकार व मित्रों से ऋण प्राप्त किये है। ऋण मुक्ति अधिनियम के बावजूद भी कई व्यक्ति ऋण मुक्त नहीं हो पाये हैं। 20 सूत्री कार्यक्रम की जानकारी सभी को दी तथा सार्वजनिक वितरण व्यवस्था में सभी ने सुधार अनुभव किया। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि 20 सूत्री कार्यक्रम की जितनी उपलब्धियों का वर्णन प्रेस, आकाशवाणी तथा सरकारी कागजों में हुआ उसकी अपेक्षा में छोटे गांवों में उपलब्धि न्यून रही।

22. देवली के कृषकों पर हरित क्रांति कृषि समस्याओं, कृषि सम्बन्धी पड़तों की मांग व पूर्ति का सर्वेक्षण :

योजना गोष्ठी, **नेहरू महाविद्यालय, देवली (टोंक)** के तत्वावधान में देवली के कृषकों पर पड़े

हरित क्रान्ति के प्रभावों का, कृषि सम्बन्धी समस्याओं का एवं कृषि सम्बन्धी पड़तों तथा बीज, उर्वरक, औजार, ट्रैक्टर, सिंचाई के साधन आदि की मांग व पूर्ति का अध्ययन करने के उद्देश्य से "देवली में कृषिगत पड़तों की मांग व पूर्ति का एक सर्वेक्षण" किया।

1971 की जन-गणना के अनुसार 9341 जनसंख्या वाले इस ग्रामीण कस्बे के 776 कृषकों में से न्यादर्श पद्धति द्वारा 77 कृषकों से ही सम्पर्क किया जा सका। देवली में 2249 हैक्टर कृषि योग्य (218 सिंचित एवं 2031 असिंचित) तथा 485 हैक्टर कृषि अयोग्य भूमि हैं।

सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि 29.7% जोतों का आकार 2 से 5 हैक्टर तथा 26.5% जोतों का आकार 1 से 2 हैक्टर के बीच है। केवल 12.5% कृषकों के पास ही 10 हैक्टर से अधिक भूमि है। 54 कृषकों के पास स्वयं की भूमि, 9 के पास हिस्सेदारी भूमि एवं एक कृषक के पास दान की भूमि थी। किराये की भूमि किसी भी कृषक के पास नहीं थी। परिवार के सदस्यों की औसत संख्या 9.5 थी तथा यह पाया गया कि छोटे परिवारों के पास छोटी ही जोत है, यह सम्भवतः इस बात का प्रतीक है कि परिवार के साथ जोत का भी उप-विभाजन होता जाता है।

गेहूँ, जौ व चना रबी की तथा ज्वार, मक्का, तिल व मूंगफली खरीफ की प्रमुख फसलें हैं। इनके अतिरिक्त गन्ना, मिर्च, चना व बाजरा भी उत्पन्न किये जाते हैं। अधिक अन्न उत्पन्न करने वाले बीज केवल 22 हैक्टर भूमि पर बोये गये जिनका औसत उत्पादन साधारण उत्पादन की तुलना में लगभग तीन गुना था। सर्वेक्षण से पता लगा कि 77% कृषक अपने उत्पादन का शत-प्रतिशत और 23% कृषक अपने उत्पादन का 50% स्वयं के उपभोग के लिये रखते हैं। इस कारण बिक्री योग्य अतिरिक्त बहुत कम बच पाता है।

देवली में पशु संख्या 2,749 हैं, जबकि सर्वेक्षित 64 परिवारों के पास 468 पशु हैं। 72% के पास स्वयं की गाय, 63% के पास स्वयं के बैल और 48% के पास स्वयं की भैंस हैं। इस क्षेत्र मे भेड़, बकरी आदि कम पाले जाते है।

कृषि उत्पादन एवं कृषि आदानों (Inputs) के बीच कृषिपण्डित एक कार्यात्मक सम्बन्ध मानते है। 26% कृषक श्रम पर कोई राशि व्यय नहीं करते थे और 56% कृषक 200 रु. वार्षिक से भी कम व्यय करते थे, जबकि 18% कृषक 200 रु. से अधिक व्यय करते थे, इनमें भी केवल 3% 500 रु. से अधिक व्यय करते थे। स्पष्ट हैं कि जोत के छोटे होने एवं परिवार के बड़े होने से अतिरिक्त श्रमिकों की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

सिंचाई के साधनों की कमी के कारण ही भारतीय कृषि मानसून का जुआ है। देवली में 218 हैक्टर भूमि को 2 तालाब, 138 कुए एवं 60 पड़त कुए सींचते हैं। इनमें भी 66% कृषक सिंचाई पर कुछ भी अतिरिक्त व्यय नहीं करते जबकि शेष 34% लगभग 200 रु. वार्षिक व्यय करते हैं। कुछ कृषक वित्तीय कठिनाईयों के कारण नये कुए खुदवाने में असमर्थ हैं।

आधुनिक अधिक उपज देने वाले बीजों पर देवली के कृषकों का ध्यान पूरा नहीं गया है। 16% कृषक स्वयं के बीजों का, 33% बाडी के बीजों का प्रयोग करते हैं। केवल 17% कृषक

200 रु. से अधिक राशि प्रति वर्ष बीजों पर व्यय करते हैं और शेष 34% कृषक 200 रु. से भी कम राशि बीजों के क्रय पर व्यय करते हैं। गत वर्ष देवली में लगभग 600 क्विंटल बीज का वितरण सहकारी समिति एवं ग्राम सेवक द्वारा किया गया।

सर्वेक्षण के दौरान अत्यन्त खेदजनक तथ्य सामने आया कि 47% कृषक किसी प्रकार का भी खाद प्रयुक्त नहीं करते, जबकि केवल 14% कृषक आधुनिक रसायनिक खाद प्रयुक्त करते हैं और शेष 39% कृषक आधुनिक व परम्परागत खादों का प्रयोग करते हैं। सिंचाई के साधनों के अभाव के कारण आधुनिक रसायनिक खाद का प्रयोग कम किया जाता हैं और जो प्रयोग किया जाता है, वह भी छोटी जोत एवं सिंचित क्षेत्र की सुविधा वाले किसानों द्वारा 47%। कृषक खाद पर कोई राशि व्यय नहीं करते, 28%, 200 रु. वार्षिक तक तथा शेष 25%, 200 रु. वार्षिक से अधिक करते हैं।

भारतीय कृषि जितनी पुरानी है, कृषि यंत्र भी उतने ही पुराने। देवली ग्राम पंचायत के अनुसार ग्राम में 37 ट्रेक्टर हैं, जबकि सर्वेक्षित परिवारों में से केवल 1 के पास ट्रैक्टर, 1 के पास विद्युत पम्प, दो के पास डीजल पम्प व एक के पास फार्म मशीन है। शेष सभी कृषक हल, चरस, कुन्नी आदि परम्परावादी औजारों से कृषि कार्य करते हैं। 56% कृषकों ने कृषि यंत्रों के क्रय अथवा मरम्मत पर इस वर्ष कोई व्यय नहीं किया। 30% ने 200 रु. वार्षिक से कम और शेष 14% ने 200 रु. से अधिक वार्षिक व्यय किया। 500 रु. से अधिक व्यय करने वाला केवल एक कृषक था। कृषि आधुनिकरण पर निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि बहुत कम व्यव किया जाता है।

ग्राम सेवक द्वारा उपलब्ध कराये जाने पर केवल 25% कृषक ही कीटनाशक औषधियों का प्रयोग करते हैं। पंचायत समिति द्वारा क्रियान्वित किये गये कृषि विस्तार कार्यक्रम (जिसमें 480 कृषकों को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षत किया गया) के बावजूद अधिकांश कृषकों ने भूमि सुधार, भू-संरक्षण, उन्नत बीज, कीट नाशक औषधि, रसायनिक खाद आदि का एक प्रकार से परहेज किया।

कृषि साख की उचित सुविधा का प्रबन्ध करके भारतीय कृषि की कई समस्याओं एवं कमियों का निराकरण किया जा सकता है। सर्वेक्षित कृषकों में से 41% कृषकों ने कोई ऋण नहीं ले रखा था। बैंक व सहकारी समिति से ऋण लेने वालों का प्रतिशत केवल 19 ही था। शेष ने साहूकार, मित्र व रिश्तेदारों से ऋण ले रखे थे। ऋणों की मात्रा 200 रु. से 5,000 रु. तक थी, केवल एक कृषक ने बैंक आफ बड़ौदा से 5,000 रु. से अधिक (40,000 रु.) ऋण ले रखा था। ऋण लेने में जटिलताएं, देरी, असुविधा व लौटाने में आवश्यक नियमितता के कारण कृषक बैंक व सहकारी समिति को पसन्द नहीं करते हैं।

सर्वेक्षण के निष्कर्मों के आधार पर कहा जा सकता हैं कि बनास नदी पर बाँध बनाकर सिंचाई सुविधा बढ़ाई जावे। आधुनिक खाद, बीज, यंत्र आदि के बारे में प्रशिक्षण देकर उन्हें सुलभ किया जावे। भू-संरक्षण, मेड़बन्दी व चकबन्दी की कार्यवाही शीघ्र की जावे तथा साख सुविधाओं को सुलभ कराया जावे।

23. जैसलमेर के 45 परिवारों का परिवार नियोजन से सम्बद्ध सर्वेक्षण :

परिवार नियोजन के बारे में लोगों के ज्ञान, अभिवृति एवं व्यवहार का अध्ययन करने के

उद्देश्य से **एस. बी. कोठारी राजकीय महाविद्यालय, जैसलमेर** की योजना गोष्ठी ने जैसलमेर के परिवारों में से देव निदर्शन विधि द्वारा छाँटकर 45 परिवारों का सर्वेक्षण किया।

सर्वेक्षित परिवारों के प्रति परिवार औसत जीवित सन्तान 3 थीं। पुरुषों की वर्तमान औसत आयु 38 वर्ष तथा विवाह के समय औसत आयु 23 वर्ष थी, स्त्रियों के मामले में यह आयु क्रमशः 30 वर्ष एवं 17 वर्ष पाई गई। सर्वेक्षित परिवारों में से 22 वेतनभोगी, 12 व्यापारी, 9 मजदूर तथा 2 कृषक परिवार थे। इन सब का औसत मासिक व्यय 216 रु. पाया गया। 10 परिवारों में पुरुष एवं 40 में स्त्रियां अशिक्षित पाई गईं, शेष में से 2 स्नातकों के अतिरिक्त अन्य सभी पुरुष सैकण्डरी अथवा कम स्तर तक शिक्षित थे।

45 परिवारों में से 22, परिवार को सीमित रखने को पक्ष में थे, क्योंकि अधिक बच्चे आर्थिक भार होते हैं (12), स्वास्थ्य खराब रहता है (5) अथवा प्रसव पीड़ा से बचना चाहते हैं (3) दो पुरुषों ने नसबन्दी करा ली थी। 30 परिवार परिवार नियोजन की जानकारी रखते हैं इस प्रकार 8 परिवार नियोजन की जानकारी रखते हुए भी इसके पक्ष में नहीं हैं। बन्ध्याकरण एवं निरोध सर्वाधिक लोकप्रिय साधन हैं, क्योंकि 66.7% को इन्हीं साधनों का ज्ञान है। शेष को लूप, संयम एवं अन्य साधनों की जानकारी हैं। इन परिवारों में से 11 को प्रचार माध्यम 7, को डाक्टर से, 7 को मित्रों एवं सम्बन्धियों एवं अन्य को ग्रामीण नेता अथवा परिवार नियोजन कार्यकर्ता से जानकारी मिली है। 15 परिवार अभी भी परिवार नियोजन विधियों के प्रति अनभिज्ञ हैं।

परिवार नियोजन की जानकारी रखने वाले 30 परिवारों में से केवल 20 परिवार ही परिवार नियोजन को अपना रहे हैं, इनमें 10 ने बन्ध्याकरण करा लिया है, 6 निरोध का प्रयोग करते हैं तथा शेष 4 अन्य विधियों का प्रयोग करते हैं। ये परिवार अधिकतम् 4 वर्ष एवं न्यूनतम चार माह से किसी न किसी विधि को अपना रहे हैं।

परिवार नियोजन विधियों को नहीं अपनाने वाले 25 परिवारों में से 17 को इच्छित बच्चे नहीं है। तथा शेष इसे धर्म के विरुद्ध मानते हैं, ईश्वरीय देन मानते हैं, भगवान् भरोसे हैं अथवा आलोचना से घबराते हैं। लगभग सभी परिवार 3 बच्चों वाले परिवार को आदर्श परिवार मानते हैं इनमें भी 2 लड़के एवं एक लड़की के जोड़ को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं।

सर्वेक्षण के दौरान पता लगा कि सभी परिवार इस मामले में जोरजबरदस्ती का विरोध करते हैं। इस आन्दोलन को भविष्य में स्वेच्छिक एवं गुणात्मक दृष्टि से चलाया जाय तो परिणाम अधिक अनुकूल होंगे।

24. जीतावाला (जयपुर) ग्राम की पिछड़ी, अनुसूचित एवं जन-जातियों को उपलब्ध रोजगार सम्बन्धी शैक्षणिक सुविधाओं का अध्ययन :

योजना मंच, **अग्रवाल महाविद्यालय, जयपुर** के सदस्यों ने राष्ट्रीय मार्ग संख्या 11 पर आगरा की ओर जयपुर से 13 किलो मीटर दूर स्थित जीतावाला ग्राम की पिछड़ी, अनुसूचित एवं जन-जातियों को उपलब्ध रोजगार सम्बन्धी शैक्षणिक सुविधाओं का अध्ययन किया। पिछड़ी अनु-

सूचित एवं जन-जातियों के लिये शिक्षा, रोजगार, छात्रवृत्ति एवं अन्य क्षेत्र में 14 से 28 प्रतिशत स्थान सुरक्षित तो हैं लेकिन देखना यह है कि वर्तमान शिक्षण सुविधाएं उनकी व्यवसायिक आवश्यकताओं के अनुकूल हैं अथवा नहीं।

अशिक्षा, जातिवाद, छूआछूत आदि रूढ़िवादी परम्पराओं से ग्रसित जीतावाला ग्राम में 58 प्रतिशत लोग अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन-जातियों के हैं, इनमें भी मुख्य मीणा, कोली, बलाई, सांसी व कुम्हार हैं। संख्या की दृष्टि से ब्राह्मणों का स्थान प्रथम, बलाईयों का द्वितीय एवं साँसियों का तृतीय है। सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप एक अनोखी बात यह पाई गई कि अनुसूचित जाति एवं जन-जातियों में भी साँसी जाति को निम्न समझा जाता है तथा इनके साथ अन्य जातियां लगभग वैसा ही व्यवहार करती हैं, जैसा कि तथाकथित सवर्ण लोग अनुसूचित जाति एवं जन-जाति के लोगों के साथ करते हैं।

जीतावाला गांव में 30.4 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हैं और केवल 10 प्रतिशत व्यक्ति शिक्षित हैं। स्त्री शिक्षा का अत्याधिक अभाव हैं। शिक्षा के अभाव का मुख्य कारण शिक्षा के प्रति रुचि एवं सुविधा की कमी है। सैकण्डरी एवं उच्च शिक्षा के लिये छात्रों को बाहर जाना पड़ता है।

इन जातियों से सम्बन्धित स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों की छात्रवृत्ति एवं बुक बैंक की सुविधा प्राप्त है लेकिन इनकी आवश्यकता एवं संख्या की तुलना में ये सुविधाएं बहुत कम हैं।

सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप दूसरी प्रमुख बात यह पाई गई कि शिक्षा का व्यवसायिक आवश्यकताओं से कोई सम्बन्ध नहीं हैं, इससे ग्रामवासी शिक्षा के प्रति उदासीन हो जाते हैं।

ग्राम जीतावाला में शिक्षा के पिछड़े होने के कारण हैं—स्थानाभाव, सामान्य शिक्षा का अभाव, शिक्षा का व्यवसाय से सम्बन्ध न होना, कृषि प्रशिक्षण केन्द्रों का अभाव, वित्तीय कठिनाई, सांप्रदायिक भावना का पाया जाना, प्रौढ़ शिक्षा का अभाव आदि।

गांवों में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, विद्युत, पशु चिकित्सा, कृषि विपणन एवं वितरण सम्बन्धी सुविधाओं की भयंकर कमी है। इन आधारभूत सुविधाओं का समुचित प्रबन्ध होने से ही इस गांव का तीव्र विकास सम्भव है।

शिक्षा को अधिक प्रभावशाली एवं लाभकारी बनाने के लिये आवश्यक है कि शिक्षा को व्यवसायोन्मुखी बनाया जावे, छात्रवृत्तियां अधिक दी जावें, सामान्य शिक्षा के माध्यम से छूआछूत व जाति-पाति की भावना को दूर किया जावे, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की सफलता से लागू किया जावे' प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना की जावे, सस्ते मूल्य पर शिक्षा सामग्री प्रदान की जावे, स्कूल को कम से कम सैकण्डरी स्तर तक क्रमोन्नत किया जावे। इस ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के व्यवसायोन्मुख होने से ग्रामीण कुटीर उद्योगों का विकास हो सकेगा। विशेष उल्लेखनीय उद्योग हैं—कपड़ा बुनना, जूते बनाना, कुक्कट पालन एवं डेयरी उद्योग। कृषि की प्रधानता को ध्यान में रखते हुए इस क्षेत्र में कृषि प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की आवश्यकता को कम नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार के केन्द्र में स्थानीय कृषकों की आधुनिक कृषि पद्धतियों, आधुनिक कृषि यंत्रों, रसायनिक खाद एवं उन्नत

बीजों की व्यवहारिक उपयोगिता एवं जानकारी दी जा सकती है, जिससे कृषक इन्हें अपनाकर अपना, स्वयं का एवं राष्ट्र का हित वर्धन कर सकें।

25. A Survey to inquire about the 'Knowledge' Attitude and Practice of Family Planning' among the labour class of Khadi Bagh Chomu Samod (Distt. Jaipur) :

With a team of 20 students the Planning Forum of **R. L. Saharia College, Kaladera** interviewed 51 labourers of different productive age group, 24 belonged to 26-45 years age group, 11 to 26-35 and 13 to 34-45 years age group. The average age at the time of marriage for males was 16 years and for females 15.

Findings : The survey indicated that (i) the present generation is keen to have a small family.It was also found in the literates and educated youth that small Family norms are gaining ground. Amongst those surveyed 84% of the labourers seemed to be in favour of small families, because most of them felt, that a greater number of children would imply economic burden. 14% of them were of the view that children are troublesome and restrict their freedom. They also felt that a larger number of children would adversely affect the health of the mother and also create accomodation problem. (ii) 73% were found to be aware of Family Planning methods and used 'Nirodh'. Sterlisation was also popular among them. About 60% respondents came to know about these methods from leaders and the publicity media, 20% from doctors, and 11% from Government servants. (iii) Only 43% of the people were actually practising the Family Planning methods, although 84% were in favour of using these methods. (iv) The ideal number of children favoured in a family was between 3 and 4 (the exact average being 3.76).

Conclusion : The team of surveyors arrived at the following conclusions : compulsion and coersion should find no place in this delicate field of human relations, eradication of illiteracy, economic upliftment of the masses, and extensive publicity of the family welfare programme would alone lead to smaller families. Also that health, maternity and child care should be made integrated part of the Family Planning programme.

26. करौली उप-खण्ड की विकास समस्याओं का अध्ययन :

योजना परिषद्, **राजकीय महाविद्यालय, करौली** (सवाईमाधोपुर) ने करौली उप-खण्ड की विकास समस्याओं का अध्ययन करने हेतु 17-2-77 को एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें नगर के गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त उद्योग विभाग, सार्वजनिक निर्माण विभाग, सिंचाई विभाग, महाविद्यालय एवं विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। विचार गोष्ठी में निम्न तथ्य सामने आये :—वन एवं खनिज सम्पदा से भरपूर इस उप-खण्ड का विकास कुटीर एवं लघु उद्योगों की तीव्र स्थापना पर निर्भर करता है। इस क्षेत्र की कृषि भूमि उपजाऊ हेतु, लेकिन पठारी क्षेत्र होने के कारण कृषि योग्य भूमि, कुल भूमि का केवल 25% ही है। तीव्र आर्थिक प्रगति के लिये

करौली को रेल से जोड़ना और चम्बल पर पुल का निर्माण कराना अत्यावश्यक है। स्थानीय बैंक एवं उद्योगपतियों के सहयोग से ही इस क्षेत्र का तीव्र आर्थिक विकास संम्भव है।

27. ग्राम बाटड़ानाऊ के 150 परिवारों में परिवार नियोजन जानकारी, दृष्टिकोण एवं व्यवहार सम्बन्धी सर्वेक्षण :

प्लानिंग फोरम, **भगवानदास तोदी महाविद्यालय, लक्ष्मणगढ़** के सदस्यों ने ग्राम बाटड़ानाऊ के 150 परिवारों का संगणना विधि से परिवार नियोजन जानकारी, दृष्टिकोण एवं व्यवहार सम्बन्धी सर्वेक्षण किया। 90 प्रतिशत परिवार कृषि पर निर्भर पाये गये तथा 60 प्रतिशत परिवारों की मासिक आय 200 रु. तक थी, जबकि 20 प्रतिशत परिवारों की मासिक आय 300 रु. से अधिक थी।

ग्रामवासी परिवार नियोजन को बन्ध्याकरण एवं नसबन्दी का पर्याय समझते हैं, लूप से नाम मात्र का परिचय है, अन्य विधियों से वे अपरिचित हैं। 30% परिवार ही परिवार नियोजन विधियों का प्रयोग करते हैं, इनमें भी नसबन्दी प्रमुख एवं निरोध गौण साधन हैं। बहुत से ग्रामवासी नसबन्दी की हेय दृष्टि से देखते हैं। अधिकांश ग्रामवासियों ने दो पुत्र एवं एक पुत्री वाले परिवार को आदर्श परिवार बताया। कुछ ही परिवारों ने 5 से 6 बच्चों वाले परिवार को श्रेष्ठ बताया।

शिक्षा के प्रसार की कमी के कारण परिवार नियोजन के प्रति अभी पूरी जन-जागृति नहीं हो पायी है, जबरन नसबन्दी के भय के कारण बहुत से ग्रामवासी सही जानकारी देने से हिचकिचाते थे। अशिक्षा के कारण सैक्स सम्बन्धी बातों को बुरा माना जाता है। इस बात की आवश्यकता अनुभव की गई कि बच्चों के साथ मां के स्वास्थ्य की देख-रेख एवं उनके भरण-पोषण सम्बन्धी सुविधाओं का विस्तार किया जावे, जिससे परिवार नियोजन कार्यक्रम, नस काट कार्यक्रम ही बन कर न रह जावे।

28. 'A Family Planning survey of 50 Families of Mukundgarh Town :

Planning Forum, **Sharada Sadan College, Mukundgarh** (Rajasthan) undertook the task of surveying 50 families of child bearing age group (15 to 49 years). They adopted purposive sampling method to inquire about the knowledge, attitude and practice of Family Planning. Out of 50 families surveyed, 18 were illiterate, 7 literate and the rest of the 25 were educated. Average number of children per family in these three categories were 4.72, 4.4 and 4.1 respectively. It was lower in families where the parents were enlightened and educated.

About 78% persons had knowledge about the Family Planning Programme and methods. Out of 39 families, 24 got such knowledge from publicity media, 2 from village leaders, 4 from family planning workers, 3 from Government servants and 6 from friends, relatives and family doctors. Only 50% illiterates were

found familiar with family planning devices and the rest of the 50% were quite unaware Thus there is a strong case to popularise and implement this programme more effectively among the illiterates. Out of 50 families that were contacted, it was found that 33 were using one or the other method for limiting the size of their families, 21 got themselves sterilised, 7 used 'Nirodh' and 5 other devices. There were 5 such families as did not observe family planning measures. The following seemed to be the reasons behind, that birth of a child is a God gift, family planning methods are harmful and absence of a male child. The number of families that were boycotting this programme was highest amongst the illiterate group. Surveyors found a high degree of positive co-relation between literacy and adoption of Family Planning Programme.

29. नसीराबाद छावनी क्षेत्र के 100 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का परिवार नियोजन से सम्बन्धित सर्वेक्षण :

योजना गोष्ठी, **राजकीय महाविद्यालय, नसीराबाद** (अजमेर) ने नसीराबाद छावनी क्षेत्र के 120 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का परिवार नियोजन की दृष्टि से छटी लोकसभा चुनाव के समय सर्वेक्षण किया, जिससे कि निर्भीक एवं दो टूक स्पष्ट उत्तर प्राप्त हो सके। सर्वेक्षित परिवारों में से 50 प्रतिशत परिवारों की आय 600 रु. मासिक से कम एवं शेष की 600 रु. मासिक से अधिक थी। 5 परिवारों की आय 1,000 रु. मासिक से अधिक थी। जबकि किसी भी परिवार की आय 200 रु. से कम नहीं थी। सर्वेक्षण में 80 पुरुष एवं 40 महिलाओं को सम्मिलित किया गया।

सर्वेक्षित 80 पुरुषों में से लगभग आधे 25 व 35 वर्ष के बीच की आयु के, 14, 35 से 40 वर्ष की आयु के तथा शेष 40 वर्ष से ऊपर की आयु के थे। इसी प्रकार 40 स्त्रियों में 30 की आयु 25 व 35 वर्ष के बीच थी। 56 पुरुषों का विवाह 24 वर्ष की आयु से पूर्व तथा 40 में से 34 का विवाह इस आयु से पूर्व हो गया था। 10 पुरुष एवं 18 स्त्रियों का विवाह 20 वर्ष की आयु से पूर्व ही हो गया था। 69 शिक्षक स्नातक स्तर तक शिक्षित थे तथा 36 स्नातकोत्तर एवं 15 शिक्षक स्नातकोत्तर से भी उच्च शिक्षा प्राप्त थे।

सर्वेक्षण में सम्मिलित लोगों में से 64 प्रतिशत का परिवार सीमित था, 43 परिवारों में चार अथवा चार से अधिक बच्चे थे। जिन परिवारों में पुत्र की प्राप्ति शीघ्र हो गई, उन्होंने परिवार नियोजन को शीघ्र अपना लिया तथा सभी ने परिवार में पुत्र होना आवश्यक माना। आधे परिवारों ने 2 पुत्र व एक पुत्री के परिवार को आदर्श माना। एक पुत्री वाले परिवार को किसी ने पसन्द नहीं किया, 27 परिवारों ने एक पुत्र व एक पुत्री के संयोग को पसन्द किया।

सीमित परिवार को पसन्द करने के कारणों में बच्चों का आर्थिक दृष्टि से भार होना (75%), बच्चों का कष्टदायक होना (9%), छोटा परिवार होना (5%) व अन्य कारण (11%) प्रमुख थे।

सर्वेक्षित सभी परिवारों को परिवार नियोजन की जानकारी तो थी, लेकिन केवल 98 दम्पत्ति ही इनका प्रयोग कर रहे थे, इनमें से 70 ने बन्ध्याकरण, 25 ने निरोध व 3 ने अन्य साधन को अपनाने की बात कही। जानकारी का प्रमुख स्रोत परिवार नियोजन कार्यकर्ता एवं प्रचार माध्यम थे, कुछ को (40) मित्रों, डाक्टरों तथा सरकारी कर्मचारियों से इस बारे में जानकारी प्राप्त हुई। अधिकांश दम्पत्ति गत तीन वर्षों से भी अधिक समय से परिवार नियोजन विधियों का प्रयोग कर रहे है। जिन्होंने वन्ध्याकरण कराया है, उनमें से अनेक ने गत वर्ष ही अप्रत्यक्ष दबावों के कारण ऐसा करवाया है।

जिन 22 परिवारों ने इन तरीकों को नहीं अपनाने की बात कही है, उनमें से बीस ने इच्छित सन्तानोत्पत्ति होते ही परिवार नियोजन अपनाने का आश्वासन दिया हैं। दो व्यक्तियों ने सन्तान को ईश्वर की देन माना है, अतः वे परिवार नियोजन के पक्ष में नहीं हैं। परिवार नियोजन की सहमति देने वाले 20 व्यक्तियों में से 16 बन्ध्याकरण के पक्ष में थे तथा शेष निरोध अथवा गोली के प्रयोग के पक्ष में।

सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि आय और सन्तानों की संख्या में कोई सह-सम्बन्ध नहीं है, जबकि शिक्षा और छोटे परिवार में घनिष्ठ उच्च सम्बन्ध है, शिक्षित लोग परिवार नियोजन के प्रति जागरूक हैं और अधिकांश लोग बच्चों को आर्थिक भार मानने के कारण परिवार नियोजन को अपनाना चाहते हैं। इसी कारण इसमें जोरजबरदस्ती एवं कानूनी दबाव की आवश्यकता नहीं है।

30. नाथद्वारा नगर के 100 शिक्षकों का परिवार नियोजन सम्बन्धी ज्ञान, प्रकृति एवं व्यवहार का अध्ययन :

योजना गोष्ठी, **सेठ मथुरादास बिनानी राजकीय महाविद्यालय, नाथद्वारा** के सदस्यों ने नाथद्वारा नगर के एक सौ शिक्षकों का परिवार नियोजन सम्बन्धी ज्ञान, प्रवृत्ति एवं व्यवहार का अध्ययन करने की दृष्टि से एक सर्वेक्षण किया। आपात्काल में व्याप्त आतंक एवं भय के वातावरण के कारण विभिन्न समुदायों के अध्ययन के स्थान पर शिक्षकों का सर्वेक्षण किया गया। इस प्रकार प्रस्तुत सर्वेक्षण प्रतिवेदन केवल एक वर्ग से सम्बन्धित है।

सूचनादाताओं में से सभी को नसबन्दी, निरोध, लूप, कोइटस एवं योन सहवास में देरी एवं संयम की विधियों द्वारा परिवार नियोजन की सम्भावनाओं का पूर्ण ज्ञान था। गोली, जैली एवं डायफ्राम का ज्ञान बहुत कम लोगों को था। 97 प्रतिशत सूचनादाता सीमित परिवार के पक्ष में थे, शेष 3 प्रतिशत सूचनादाताओं ने इसे ईश्वरीय इच्छा पर निर्भर बताया। अधिकांश सूचनादाताओं का मत था कि अधिक सन्तानों से आर्थिक भार तो बढ़ता ही है, साथ ही पत्नी का स्वास्थ्य और यौवन भी बिगड़ जाता है।

सर्वेक्षित शिक्षकों में से 3 परिवार नियोजन के साधन नहीं अपनाते, शेष में से 31 नसबन्दी, 38 निरोध, 8 लूप, 12 संयम तथा 8 अन्य साधनों का प्रयोग करते हैं। सबसे लोकप्रिय,

सस्ता, सुगम एवं सरल साधन निरोध पाया गया। 31 नसबन्दियों में से 20 नसन्दी गत कुछ माह में ही कराई गई। इनमें से अधिकांश सूचनादाताओं का कहना था कि सरकारी अप्रत्यक्ष दबाव के कारण ही उन्होंने नसबन्दी कराई। स्त्रियां ट्यूबक्टामी के पक्ष में कम पाई गई, क्योंकि वे मानती थीं कि इससे स्वास्थ्य में गिरावट आती है, केवल 11 प्रतिशत सूचनादाताओं ने स्वेच्छा से नसबन्दी जून, 1975 से पूर्व कराई थी।

दो से अधिक सन्तानों वाले 12 शिक्षक परिवार नियोजन विधियों की जानकारी रखते हुए भी इनका प्रयोग नहीं करते थे, क्योंकि उनकी मान्यता थी कि संतानोत्पत्ति संयोग एवं ईश्वरीय इच्छा है अथवा इन विधियों के प्रयोग से संभोग में अप्राकृतिकता आ जाती है। कुछ सूचनादाता बच्चों को किसी प्रकार का भार नहीं मानते। अधिकांश शिक्षकों ने परिवार में बच्चों की आदर्श संख्या तीन बताई, जिसमें दो पुत्र व एक पुत्री का संयोग सर्वश्रेष्ठ बताया। कुछ परिवारों के सन्तानों की संख्या इसी कारण अधिक हो गई कि उन्होंने दूसरे पुत्र के उत्पन्न होने तक परिवार नियोजन को नहीं अपनाया।

परिवार नियोजन कार्यक्रम के बारे में दबाव को त्यागकर शिक्षा, संचार साधन को बढ़ावा देने का सुझाव योजना गोष्ठी के सदस्यों ने प्रस्तुत किया। क्योंकि परिवार नियोजन एवं नसबन्दी एक दूसरे के समानान्तर समझे जाने लगे हैं, अतः इस अभियान को परिवार कल्याण कार्यक्रम के नाम से चलाया जाना उचित होगा।

31. धमोतर ग्राम के 111 परिवारों का परिवार नियोजन से सम्बन्धित ज्ञान, दृष्टिकोण एवं क्रियान्वयन का सर्वेक्षण :

योजना गोष्ठी, **राजकीय महाविद्यालय, प्रतापगढ़** (चित्तौड़गढ़) ने प्रतापगढ़ से लगभग 18 किलोमीटर दूर स्थित धमोतर ग्राम के 111 परिवारों का परिवार नियोजन के ज्ञान, दृष्टिकोण एवं क्रियान्वयन के बारे में एक सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षित व्यक्तियों में से विवाह के समय 78 की आयु 20 वर्ष से कम, 6 की आयु 10 वर्ष से कम, 111 की आयु 31 वर्ष से कम थी। 33 की आयु 21 व 30 वर्ष के बीच थी। 111 सर्वेक्षित व्यक्तियों में से 45 कृषक, 30 नौकरी पेशावर, 21 व्यवसायी, 12 बेकार एवं 3 अन्य धन्धों में संलग्न थे। 9 परिवारों की आय 100 रु. मासिक से कम, 15 परिवारों की 100 रु. से 200 रु. के बीच, 19 परिवारों की 200 रु. से 300 रु., 16 परिवारों की 300 रु. से 500 रु. तथा 16 परिवारों की 500 रु. से अधिक आय थी, जबकि 36 परिवारों ने अपनी आय सम्बन्धी आँकड़े नहीं दिये। 111 सर्वेक्षित व्यक्तियों में से 13 अशिक्षित, 43 प्राथमिक स्तर तक, 36 सैकण्डरी तक, 18 स्नातक स्तर तक, एवं एक स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षित था। इस प्रकार अधिकांश व्यक्ति शिक्षित पाये गये।

परिवार की नियोजित रखने के पक्ष में 100 तथा विपक्ष में 11 व्यक्ति पाये गयें। 60 परिवार बच्चों को आर्थिक भार मानने के कारण, 6 परिवार दो सन्तानों के बीच अन्तर रखने के

कारण, 12 स्वास्थ्य एवं पीड़ा सम्बन्धी कारणों से प्रेरित होकर एवं शेष अन्य कारणों से परिवार नियोजन का सहारा लेते हैं।

111 सर्वेक्षित परिवारों में से 35 परिवार, परिवार नियोजन विधियों का प्रयोग नहीं करते हैं तथा 68 निरोध और 8 नसबन्दी विधि के द्वारा परिवार को नियोजित रख रहे हैं। परिवार नियोजन विधियों को अपनाने वाले 76 परिवारों में से अधिकांश परिवार गत एक वर्ष से ही इन विधियों का प्रयोग कर रहे हैं, केवल 7 परिवार गत 5 वर्ष से भी अधिक समय से परिवार नियोजन अपनाये हुए हैं। अधिकांश परिवार भविष्य में भी परिवार नियोजन को अपनाने के पक्ष में थे। उन 11 परिवारों में से जो परिबार नियोजन के माध्यम अपनाने के पक्ष में नहीं हैं, 9 इन तरीकों से घृणा करते हैं और 2 परिवार इन विधियों के प्रयोग से पीड़ित अनुभव करते हैं। परिवार नियोजन विधियों की जानकारी का मुख्य स्रोत मित्र व सम्बन्धी, प्राचार माध्यम, सरकारी कर्मचारी एवं परिवार नियोजन कर्मचारी, डाक्टर व ग्रामीण नेता हैं।

51 परिवारों ने 3 बच्चों को, 44 परिवारों ने 4 से 6 बच्चों की और 9 परिवारों ने 7 से 9 बच्चों को परिवार में बच्चों की आदर्श संख्या बताई। 3 परिवारों ने 10 से 15 बच्चों को आदर्श संख्या माना हैं और 4 परिवार इस बारे में अभी निश्चित निर्णय नहीं कर पाये हैं।

सर्वेक्षित परिवारों में से अधिकाँश परिवार शिक्षित हैं, अतः परिवार नियोजन के प्रति न केवल जागरुक हैं, वरन् इसका प्रयोग भी करते हैं।

32. सवाईमाधोपुर जिले का सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वेक्षण :

योजना मंच, **राजकीय महाविद्यालय, सवाईमाधोपुर** ने सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सवाईमाधोपुर जिले का सर्वेक्षण किया। ऐतिहासिक गौरवशाली शौर्यगाथाओं वाले रणथम्भोर दुर्ग के कारण विख्यात सवाईमाधोपुर जिला 10593 कि. मी. क्षेत्र में फैला है, इसकी जनसंख्या 1971 में 11,93,528 थी। 1647 गांव, 6 कस्बे, 10 पंचायत समिति, 387 पंचायत, 11 तहसील, 6 नगरपालिकाएं एवं 4 उपखण्ड वाले इस जिले में लगभग 20 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जाति एवं 30 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जन-जाति की है। कुल जनसंख्या का 84.74 प्रतिशत ग्रामीण एवं 32.27 प्रतिशत कार्यशील हैं।

सवाईमाधोपुर जिले में 5,88,756 हैक्टर भूमि पर खेती की जाती है, इसमें 1,09,020 हैक्टर भूमि सिंचित है। प्रमुख फसलों में गैंहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा व मूंगफली आते हैं। कृषि उन्नति के लिये गत वर्षो में काफी सराहनीय कार्य किया गया है। ग्रामीण विद्युतिकरण योजना भी चालू की गई हैं।

लगभग पन्द्रह लाख पालतू पशुओं से सम्पन्न इस जिले में छोटे आकार के ऊबड़-खाबड़ खेत होने से खेती के लिये पशुओं का महत्व बराबर बना हुआ है।

जिले में 2 सीमेन्ट की वृहद् फैक्ट्रियां, 4 औद्योगिक बस्तियाँ, 293 लघुउद्योगों की पंजीकृत इकाईयां, 60 तेल मिलें, 70 हाथकरघा उद्योग की इकाईयाँ तथा कतिपय गलीचा उद्योग एवं रसायनिक औद्योगिक इकाईयां कार्यरत हैं।

609 ग्राम सेवा सहकारी समितियों सहित केन्द्रीय बैंक तथा भूमि विकास बैंक कृषि व सम्बन्धित उद्योगों की वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति में लगे हुए हैं। अन्य व्यापारिक बैंक भी जिले के व्यापारिक एवं औद्योगिक विकास में अपना सहयोग दे रहे हैं।

865 किलो मीटर सड़क, 178 किलो मीटर रेल तथा 1261 वाहनों वाले इस जिले में यातायात के साधन अपर्याप्त हैं।

1656 नगर व ग्रामीण बस्तियों में से 174 बस्तियां विद्युतिकृत हैं। खनिज सम्पदा में धनी इस जिले में विद्युत विस्तार की बहुत अधिक आवश्यकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न स्तरों पर विकास के बावजूद जिले में साक्षरता राजस्थान के औसत से कम हैं। 24 नगर व कस्बों में जलदाय योजनाओं के माध्यम से पेय जल वितरण का कार्य किया जा रहा है। सवाईमाधोपुर जिले की जनसंख्या की आवश्यकताओं के अनुरूप यहां स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाएं नहीं हैं। शिक्षा, पीने के पानी और चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार आवश्यक है। यद्यपि नियोजन कार्यालय में 7048 व्यक्ति ही बेरोजगार हैं, परन्तु लगभग 30 प्रतिशत व्यक्ति अर्द्धबेकारी के शिकार हैं। इसके लिये लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास तो हो ही साथ ही औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र भी खोले जाने चाहिये।

जिले की अधिकांश जनसंख्या अभी भी छुआछूत, संयुक्त परिवार प्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, जन्म-मरण के समय किये जाने वाले रीति रिवाजों व अन्य धार्मिक अन्ध-विश्वासों से ग्रसित है। हिण्डोन एवं करौली में विशाल स्तर पर आयोजित धार्मिक मेलों के अतिरिक्त अन्य कई स्थानों पर धार्मिक एवं व्यापारिक पशु मेलों का आयोजन किया जाता है।

सवाईमाधोपुर जिले के तीव्र आर्थिक विकास के लिये भूमि सुधार, कृषि का आधुनिकीकरण सिंचाई के साधनों का विकास आवश्यक है। तीव्र विद्युतिकरण एवं लघुउद्योगों का तीव्र विकास हुए बिना यह जिला पिछड़ा रह जावेगा। इसके साथ ही यातायात शिक्षा तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं का विस्तार भी आवश्यक है तभी कृषि, उद्योग, वनसम्पदा, पर्यटन एवं लोक संस्कृति की दृष्टि से बेजोड़ यह जिला उन्नति कर सकता हैं।

33. Knowledge, Attitude and Practice of Family Planning in Kharchi Tehsil (Pali)

The Planning Forum, **Shri Jain Terapanthi College, Ranawas** (Pali-Marwar) conducted a survey of Kharchi Tehsil, in order to have knowledge about attitude, opinions and practice of Family Planning. Out of 150 villages of Kharchi Tehsil, the

surveyors selected 42 villages, and could study 120 families on the basis of random sampling method. The observations of the study thus made have been analysed under two broad heads (i) social characteristics of the respondents and (ii) knowledge, attitude and practice of family planning among the respondents belonging to the three different generations.

Social characteristics :

(i) It has been found that nearly cent per cent of the total respondents belong to Hindu religion and the majority of respondents belong to higher castes.

(ii) All the three generations lived together under the same roof, had common property and were bound together by close blood relationship.

(iii) Regarding distribution of the respondents, the groups were as follows : 55% were above 60 years, 25% were in the age group of 40–50 years and 20% of these in the age group of 10 to 20 years.

(iv) Among the first two generations all the respondents were married.

(v) 96% of the total respondents from the first generation were married before the age of 20 years, whereas 75% of the total respondents belonging to second generation were married before the age of 20. Out of total, 33 married before the age of 22 years and 13 after the age of 22 years.

(vi) So far as education of the respondents was concerned, wide gap was found among the three generations.

Almost all persons were illiterate in the first generation, whereas 50% from the second and 30% from the third generation were illiterates.

(vii) More than 80% of the respondents from the first generation had more than seven children, where as 65% from the second generation had less than seven. Only 15 respondents of the third had 2 children each.

(viii) About 90 out of total respondents were without any occupation and out of 120 who were employed, 57 were from the first generation and 45 from the second generation and 18 from the third generation.

(ix) Income is based on the basis of family income and it includes the income of three generations and other family members. Out of 210 persons interviewed, 150 had income less than Rs. 350/- per month, 32 had less than 700/- per month, and 28 had income of Rs. 1000/- and above per month.

Conclusions :

Several difficulties were experienced because of the coersion and force employed in the execution of this programme. People were scared and they refused to

give information at any cost. The surveyors had to take great pains into convincing the respondents about their mission. They, however, succeeded in getting information from 210 respondents. Analysis of the finding reveals that :

(i) The majority of the respondents belonging to all the three generations knew about family planning and some of them knew about its symbol and slogan too.

(ii) About the knowledge of different methods it was observed that the second generation had more knowledge than the other two generations.

(iii) Only 40% of the total group expressed acceptance of the programme, the rest of them expressed resentment.

(iv) The mass media posters appeared to be the most important common source of information, about the programme.

(v) The social workers also proved helpful but they were not known to the majority of the respondents.

(vi) The most common method known to them was Condom (Nirodh) and they regarded it as most effective, if used properly.

(vii) A majority of respondents favoured ideal period of spacing. Not much difference of opinion was found between the three generations.

(viii) About the marriageable age of girls, the first generation differed with the other two generations. The youngsters stressed that the marriageable age for girls should be raised from 19 to 22, while the respondents of the first generation were in favour of marriages much before that.

(ix) About the size of family all respondents were in favour of a smaller family. Their concept of an ideal family, was parents with few children, out of which two or three should be male children.

(x) Many respondents regarded education as the ideal source of information about family planning.

(xi) Though only 40% of the respondents expressed their positive feeling for the acceptance of the idea of family planning, yet all of them admitted, that it leads to happy life, better and higher standard of living, better upbringing of the children and maternal care.

34. शाहपुरा कस्बे के दम्पत्तियों में परिवार नियोजन सम्बन्धी जानकारी, प्रवृत्ति एवं प्रयोग की सही स्थिति का अध्ययन :

शाहपुरा कस्बे के दम्पत्तियों में परिवार नियोजन सम्बन्धी जानकारी, प्रवृत्ति एवं प्रयोग की

सही स्थिति का अध्ययन करने के उद्देश्य से योजना गोष्ठी, **राजकीय महाविद्यालय, शाहपुरा** ने एक सर्वेक्षण किया।

शाहपुरा कस्बे के 16 वार्डों में बसी आबादी में से सन्तानोत्पति कर सकने योग्य दम्पत्तियों में से दैव निदर्शन द्वारा 300 दम्पत्तियों से सम्पर्क किया गया, लेकिन विश्लेषणार्थ 200 सूचनावलियां ही उपलब्ध हो सकी। सर्वेक्षित युगलों में 47 पुरुष एवं 147 स्त्रियां अशिक्षित पाई गई। अधिकांश स्त्रियों ने अशिक्षित अथवा कम शिक्षित होने से अपने पति की राय से पूर्ण सहमति व्यक्त की और अपनी स्वयं की भिन्न राय व्यक्त करने से मना कर दिया।

93 परिवारों के दो तक, 58 परिवारों के 3 से 4, 29 परिवारों के 5 से 6 तथा 20 परिवारों के 7 अथवा अधिक सन्तानें थी, इस प्रकार लगभग 25 प्रतिशत युगल ऐसे थे, जिनके कुल संतानों की संख्या 5 अथवा अधिक थी। 72.5 प्रतिशत युगल ऐसे थे, जिनका मासिक व्यय रु० 100/- से रु० 400/– तक और सन्तान संख्या 5 से 6 तक पाई गई। 55 युगलों के (जिनका मासिक व्यय 400/– रु० से अधिक था) सन्तान संख्या 4 तक पाई गई। अधिकांश युगल मानते हैं कि अधिक सन्तान आर्थिक भार का कारण हैं।

200 में से 193 युगल परिवार नियोजन सम्बन्धी विभिन्न साधनों से परिचित थे एवं इन सभी को नसबन्दी एवं निरोध का पूर्ण ज्ञान था। लूप (48%) व अन्य साधनों (23%) से कम लोग परिचित पाये गये। बिना विशेष प्रयत्न के ही विज्ञापन साधन, डॉक्टर एवं परिवार नियोजन कार्यकर्ताओं से इन दम्पत्तियों को इन साधनों के बारे में ज्ञान प्राप्त हो गया।

यद्यपि 193 युगल परिवार नियोजन विधियों से परिचित हैं, परन्तु 145(72.5%) ही परिवार को सीमित रखने के पक्ष में हैं, क्योंकि अधिकांश युगल अतिरिक्त सन्तान को आर्थिक भार मानते हैं। परिवार नियोजन न अपनाने वाले 55 युगलों में से 17 पुत्रोत्पत्ति का इन्तजार कर रहे हैं, शेष 38 दम्पत्तियों का मानना है कि सन्तान ईश्वरीय देन है, यह अधार्मिक हैं अथवा उन्हें समाज में आलोचना का भय है।

सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप ज्ञात हुआ कि 102 अथवा 51 प्रतिशत युगल नसबन्दी करा चुके हैं। इनमें से भी अधिकांश ने गत वर्ष के सघन परिवार नियोजन कार्यक्रम के दबाव में नसबन्दी कराई है। 102 में से 6 ने स्त्री नसबन्दी माध्यम की व 96 ने पुरुष नसबन्दी माध्यम को अपनाया है। 40 युगल निरोध एवं 3 लूप निवेशन द्वारा परिवार को सीमित रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। इन 43 परिवारों में सन्तानों की संख्या 3 अथवा कम है और इसी कारण नसबन्दी जैसे स्थाई साधन का सहारा इन्होंने नहीं लिया है।

19.5 प्रतिशत युगल परिवार में 2 बच्चे तक ही पसन्द करते हैं, जबकि 57 प्रतिशत एक आदर्श परिवार में बच्चों की संख्या 3–4 मानते हैं। 23.5 प्रतिशत युगल 5 अथवा अधिक बच्चे होने पर भी परिवार नियोजन के पक्ष में नहीं हैं। इसका मुख्य कारण अशिक्षा, निर्धनता व सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताएं कही जा सकती हैं।

सर्वेक्षणकर्ताओं का सुझाव था कि स्त्री शिक्षा के प्रसार में राष्ट्रीय जनसंख्या समस्या का समाधान आसानी से हो सकता है।

35. पालड़ी गांव (सिरोही) के निवासियों में 50 सन्तानोत्पत्ति योग्य व्यक्तियों का परिवार नियोजन से सम्बद्ध जानकारी का अध्ययन:

सिरोही नगर में 15 किलोमीटर दूर स्थित 2,000 की जनसंख्या वाले पालड़ी गांव के गांव-वासियों में से सन्तानोत्पत्ति योग्य 50 व्यक्तियों का सर्वेक्षण **राजकीय महाविद्यालय, सिरोही** के प्लानिंग फोरम ने मार्च, 1977 में परिवार नियोजन की जानकारी तथा प्रयोग का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया। सर्वेक्षित व्यक्तियों में से 66 प्रतिशत व्यक्ति 25 से 45 वर्ष की आयु वर्ग के तथा 20 प्रतिशत 45 से 55 वर्ष की आयु वर्ग के और 14 प्रतिशत 15 से 25 वर्ष की आयु वर्ग के थे। 28 प्रतिशत सूचनादाता अशिक्षित पाये गये, 50 प्रतिशत का शैक्षणिक स्तर माध्यमिक स्तर पाया गया, 12 प्रतिशत हाईस्कूल पास थे और 10 प्रतिशत केवल साक्षर। विभिन्न शैक्षणिक स्तर के व्यक्तियों के परिवार नियोजन सम्बन्धी विचारों का विश्लेषण रूचिकर एवं महत्वपूर्ण होना स्वाभाविक है। 18 प्रतिशत सूचनादाता अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन-जाति के, 2 प्रतिशत मुसलमान, 30 प्रतिशत ब्राह्मण तथा शेष 50 प्रतिशत अन्य सवर्ण हिन्दू जातियों के थे।

सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि 16 प्रतिशत सूचनादाताओं को परिवार नियोजन विधियों की जानकारी नहीं थी। युवा वर्ग इस कार्यक्रम के प्रति अधिक उत्साही एवं सजग नजर आया। शिक्षा के स्तर एवं परिवार नियोजन की जानकारी के बीच उच्च घनिष्ठ सह-सम्बन्ध पाया गया, क्योंकि 96 प्रतिशत शिक्षित एवं 52% अशिक्षित व्यक्तियों को परिवार नियोजन विधियों की जानकारी थी। परिवार नियोजन विधियों से अनभिज्ञ लोगों में मुख्यत: अनुसूचित जन-जाति एवं रैबारी, सुथार, प्रजापत आदि हिन्दू सवर्ण व्यक्ति सम्मिलित हैं।

सरकारी प्रचार माध्यम, मित्र तथा सम्बन्धी और परिवार नियोजन कार्यकर्ता, परिवार नियोजन विधियों की जानकारी के प्रमुख स्रोत हैं। निरोध और बन्ध्याकरण परिवार नियोजन विधियों के सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम है (80.7%)। शेष व्यक्तियों को लूप, देरी से सम्भोग व अन्य साधनों का भी ज्ञान था।

परिवार नियोजन की विधियों की जानकारी रखने वालों में से 73.8% व्यक्ति ही इनका प्रयोग करते हैं, इनमें भी लगभग 80% की आयु 45 वर्ष से कम है। अशिक्षितों में 88% जानकार व्यक्ति ही परिवार नियोजन प्रसाधनों का प्रयोग करते हैं, यह सम्भवत: पांच सूत्री कार्यक्रम के दबाव एवं भय का परिणाम है अन्यथा तो शिक्षा के विस्तार एवं परिवार नियोजन कार्यक्रम की जानकारी एवं उसके प्रयोग के बीच घनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया है। एक महत्त्वपूर्ण तथ्य सर्वेक्षण के परिणामस्वरूप उजागर हुआ हैं कि परिवार नियोजन का विचार अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन-जातियों में लोकप्रिय नहीं हो पाया है, क्योंकि इनमें से 40% व्यक्ति जानकारी रखते हुए भी परिवार नियोजन कार्यक्रम को नहीं अपना रहे हैं।

छोटे परिवार के पक्ष में कारण बताते हुए 52% सूचनादाताओं ने अधिक बच्चों को आर्थिक भार माना, 29% के अनुसार अधिक बच्चे परेशानी पैदा करते हैं तथा 19% परिवार डॉक्टर की राय, स्वास्थ्य सम्बन्धी कारण अथवा दो बच्चों के बीच अन्तर रखने के उद्देश्य से छोटा परिवार पसन्द करते हैं।

परिवार नियोजन की जानकारी रखते हुए भी इसे प्रयोग में न लाने वाले 11 परिवारों में से 6 के अभी इच्छित सन्तानोत्पत्ति नहीं हुई। दो पुत्र की आशा में तथा तीन के कई वर्षों से सन्तानोत्पति नहीं होने के कारण परिवार नियोजन नहीं अपना रहे थे। 6 व्यक्तियों ने सन्तानोत्पत्ति को ईश्वरीय देन, एक ने परिवार नियोजन को धर्म के विरुद्ध एवं दूसरे ने हानिकारक माना।

60 प्रतिशत सूचनादाताओं के अनुसार चार अथवा अधिक बच्चों वाला परिवार आदर्श परिवार कहा जा सकता है, 22 प्रतिशत व्यक्ति 3 बच्चों के परिवार को आदर्श परिवार मानते हैं। कृषक परिवार साधारणतया अधिक बच्चे पसन्द करते हैं, जबकि श्रमिक परिवार साधारणतया 2 अथवा तीन बच्चों से अधिक को पसन्द नहीं करते हैं। स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति का व्यवसाय विशेष में व्यस्त होने का उसके आदर्श परिवार सम्बन्धी दृष्टिकोण पर प्रभाव पड़ता है। सर्वेक्षणकर्ता परिवार नियोजन की 'केफेटेरीया' पद्धति के पक्ष में थे।

36. राजमहल गांव (टौंक) का महाविद्यालय के छात्रों में शोध प्रवृत्ति एवं पाठ्येत्तर गतिविधियों के प्रति रुचि जागृति हेतु सर्वेक्षण :

योजना गोष्ठी, **राजकीय महाविद्यालय, टौंक** के सदस्यों ने जयपुर–कोटा मार्ग पर टौंक से 51 किलोमीटर दूर बनास नदी पर बसे राजमहल ग्राम का छात्रों में शोध प्रवृत्ति एवं पाठ्येत्तर गतिविधियों के प्रति रुचि जागृत करने के उद्देश्य से एक सर्वेक्षण किया। प्रश्नावली पद्धति के माध्यम से राजमहल की शिक्षा, कृषि, श्रम, उत्पादन, बिक्री, सिंचाई, उर्वरक आदि से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया गया।

महत्वपूर्ण बात यह है कि गांव के 60 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हैं। प्रति परिवार सदस्य संख्या 6 है। अधिकांश परिवार कच्चे मकानों में ही गुजारा करते हैं। 150 किसान परिवारों के पास 1520 एकड़ भूमि वाले इस गांव में लगभग 500 एकड़ चरागाह भूमि है और प्रति किसान कृषि योग्य भूमि 6.8 एकड़ ही है। खरीफ और रबी दोनों फसलों में लगभग आधी भूमि की केवल कुओं द्वारा सिंचाई की जाती है। कुल उत्पादन का लगभग दो तिहाई भाग रबी तथा एक तिहाई खरीफ से प्राप्त होता है।

अभी हरित क्रान्ति इस गाँव से बहुत दूर प्रतीत होती हैं। केवल 10% किसान आधुनिक उन्नत बीजों का प्रयोग करते हैं, 16% किसान रासायनिक खाद का प्रयोग करते हैं, 33% कीटनाशक औषधियाँ काम में लेते हैं और केवल 3% जुताई के लिये ट्रैक्टर काम में लेते हैं और वे भी किराये के। भूमि की कमी के कारण अधिकांश किसान श्रम की दृष्टि से आत्मनिर्भर हैं।

90 प्रतिशत किसानों का ऋणी होना उनकी गरीबी का प्रतीक है, लेकिन 72 प्रतिशत किसानों ने विभिन्न सहकारी समितियों से ऋण प्राप्त किये हैं, साहूकारों से केवल 12 प्रतिशत ने ही ऋण पाया है, सम्भवतः साक्षरता ने सहकारी आन्दोलन को सफल बनाने में योगदान दिया है।

कुल उत्पादन (लगभग 1362 क्विंटल) का लगभग एक चौथाई बिक्री योग्य अतिरेक है, जिसका 60 प्रतिशत देवली एवं दूनी की मण्डियों में जाता है, बाकी 40 प्रतिशत साहूकारों एवं स्थानीय क्रेताओं को बेच दिया जाता है।

पूँजी की कमी से ग्रसित, कृषि प्रधान, साक्षर गाँव में कृषि की प्राचीन पद्धति ही काम आती है। उचित मात्रा में भूमि की कमी, आधनिकीकरण का अभाव और यातायात के साधनों का अभाव, उत्पादन की कमी और साहूकारों के प्रभाव को बढ़ावा देता है।

आवश्यकता इस बात की है कि गांव को सड़क से जोड़कर साख, सुविधा, उन्नत बीज, रासायनिक खाद, उचित सिंचाई के साधन व कृषि के आधनिकीकरण का प्रबन्ध किया जावे। सहकारिता व बैंक सुविधा का प्रबन्ध इस गांव के तीव्र विकास के लिये एक आवश्यक शर्त है।

37. माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, उदयपुर

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, उदयपुर के प्लानिंग फोरम ने थोड़े समय में सीमित साधनों से उदयपुर शहर में हरिजन परिवारों में परिवार नियोजन सम्बन्धी ज्ञान, दृष्टिकोण एवं व्यवहार का अध्ययन किया। उदयपुर जिले का जनसंख्या की दृष्टि से राजस्थान में दूसरा तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां स्थान है। भीलों की नगरी उदयपुर की चमनपुरा, ठक्कर बाबा, अम्बा माता तथा अलिपुरा बस्तियों में 100 से 150 परिवार प्रति बस्ती निवास करते हैं। देव-निदर्शन पद्धति द्वारा इन बस्तियों में से 30 (15 पुरुष व 15 स्त्रियों को) व्यक्तियों को चुना गया। अधिकांश सूचक 25-35 वर्ष आयु वर्ग के थे और शिक्षा की दृष्टि से 55% अशिक्षित 35% प्राईमरी स्तर तक शिक्षित थे, केवल 10% सूचक हाई स्कूल से अधिक शिक्षित थे। कोई भी स्त्री प्राईमरी स्तर से अधिक शिक्षित नहीं थी। लगभग 53% हरिजनों ने अपना परम्परागत व्यवसाय छोड़ दिया है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में इस प्रकार की व्यवसायिक गतिशीलता कम पाई गई। 57% हरिजन परिवारों की मासिक आय 250/- रु० से कम तथा 26% परिवारों की मासिक आय 250/- रु. से 350/- रु. के बीच थी। लगभग 80% सूचकों का विवाह एवं गौना 20 वर्ष की आयु के पूर्व ही हो गया था, केवल 6 पुरुष हरिजन ऐसे थे, जिनका विवाह 20 वर्ष की आयु के बाद ही हुआ। अधिकांश परिवार 4 अथवा कम बच्चों वाले परिवार को आदर्श मानते है, 9 परिवार 4 से अधिक बच्चों को अच्छा मानते हैं। 6 परिवार तो 6 से भी अधिक बच्चों को स्वीकार करते हैं क्योंकि उनकी दृष्टि से बच्चे भगवान की देन हैं।

सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि 60% सूचनादाता सीमित परिवार में विश्वास करते हैं। सीमित परिवार को पसन्द करने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण आर्थिक परेशानी एवं स्वतन्त्रता में बाधा

है। स्थानाभाव एवं अधिक कार्य भी महत्त्वपूर्ण कारण हैं। 60% को परिवार नियोजन पद्धतियों का ज्ञान था। प्रचार माध्यम एवं मित्र, सगे सम्बन्धी परिवार नियोजन सम्बन्धी जानकारी के प्रमुख स्रोत थे। निरोध तथा लूप सर्वाधिक लोकप्रिय तरीके हैं। 56·7% सूचनादाता परिवार नियोजन के तरीकों का प्रयोग करते हैं और उनमें भी लगभग 80% निरोध का प्रयोग करते हैं। परिवार नियोजन पद्धतियों का प्रयोग सर्वेक्षण से एक वर्ष पूर्व से ही किया जाने लगा है, जो इस बात का प्रमाण है कि आपात्काल में हुई ज्यादतियों के कारण इन पद्धतियों को अपनाया गया हैं। 40 प्रतिशत सूचनादाता परिवार नियोजन न अपनाने का कोई कारण नहीं बता सके और 30% के बच्चों की संख्या इच्छित से कम थी और 16% इस पद्धति को धर्म के विरुद्ध मानते थे और इसी कारण इन पद्धतियों को अपनाने के पक्ष में नहीं थे। कुछ ने जीवन साथी के विरोध, इन उपायों से घृणा एवं पुत्र प्राप्ति की आशा को भी इन पद्धतियों को न अपनाने का कारण बताया।

LIST OF SURVEYS CONDUCTED

by

THE PLANNING FORUMS DURING 1976-77

S.No.	*Name of the College*	*Topic of Survey*
1.	Government College, Ajmer	— Educated Unemployment in Ajmer
2.	D.A.V. College, Ajmer	— 20 Point Programme–A study of Rural Attitude—Village Shrinagar
3.	Savitri Girls College, Ajmer	— Some Statistical Information of Ajmer District
4.	G.D. Girls College, Alwar	— Socio-economic survey of Samola village
5.	Government College, Banswara	— Family Planning
6.	Government College, Barmer	— Family Planning
7.	Govt. Girls College, Bharatpur	— Family Planning
8.	Banasthali Vidya Peeth, Banasthali	— Economic survey of Tonk.
9.	Post-graduate Jain College, Bikaner	— Problems of Educated Entrepreneurs in Setting up Private Industries.
10.	Chirawa College, Chirawa	— Survey of Book Bank Scheme in Chirawa
11.	Government College, Chittorgarh	— Family Planning

S.No.	Name of the College	Topic of Survey
12.	Government Lohia College, Churu	— A Study about the Problem of Educated Entrepreneurs Setting up Private Industries
13.	Nehru College, Deoli	— Demand and Supply of Agricultura Inputs
14.	Bangur College, Didwana	— 20 Point Economic Programme and Rural Development in Didwana
15.	S.U.P. College, Falna	— Family Planning
16.	Government College, Sriganganagar	— Impact of Education Facilities and Higher Education on Scheduled Castes in Sriganganagar
17.	B.G. Government Girls' College, Sriganganagar	—Family Planning
18.	G.L. Bihani College, Sriganganagar	— Socio-economic analysis of physically Handicapped.
19.	Rajasthan College, Jaipur	— Family Planning
20.	Agrawal College, Jaipur	— Vocational Educational Facilities Available to S.C. and S.T. students of a village—Jeetwala
21.	Satya Sai College for Women Jaipur	— A study of Occupational Aspirations of S.C. students
22.	R.L. Saharia College, Kaladera	— Family Planning
23.	G.D.B. Girls College, Kota	— Family Planning
24.	B.D. Todi College, Laxmangarh	— Family Planning
25.	Sharda Sadan College, Mukandgarh	— Family Planning
26.	Government College, Nasirabad	— Family Planning
27.	Government College, Nathdwara	— Family Planning
28.	Government College, Pratapgarh	— Family Planning
29.	Pragya Mahavidyalaya, Bijainagar	— Socio-economic Survey of Students of the College
30.	Government College, Sawaimadhopur	— Socio-economic Survey of Sawaimadhopur District

S.No.	*Name of the College*	*Topic of Survey*
31.	Government College, Shahpura	— Family Planning
32.	Government College, Sirohi	— Family Planning
33.	Government College, Tonk	— Economic Survey of a village— Rajmahal
34.	Meera Girls College, Udaipur	— Socio-economic survey of Madari village
35.	Government College, Jaisalmer	— Family Planning
36.	Shri Jain Terapanthi College, Ranawas (Pali)	— Family Planning
37.	Shramjeevi College, Udaipur	— Family Planning

Note :—The exact topic of Family Planning given to various colleges was 'Knowledge, Attitude and Practice of Family Planning.'

7

PLANNING FORUMS :

News, Views And Reviews

In a democratic set up where the creative energies of the people have to be roused by persuasion and discussion, policies are to be framed and implemented after taking into consideration the will of the majority and also the wishes of the intelligent minority, the views of the experts, supervising authorities, the public and the press about educational movement matter a great deal; for they turn out to be incalculable help in stock-taking, in making periodic assessment of the work undertaken and progress achieved. By and large, the general activities and survey work of our Planning Forums have won appreciation from different quarters. The public and the press, administrators, participants and incharges, planners and research scholars almost all have commended educative value of the movement. Some of their observations about the role, impact and very functioning of the Planning Forums, reproduced below not only make an interesting reading but also throw side lights on the usefulness of the scheme.

FROM THE PRESS

"स्थानीय महाविद्यालय (अलवर) के योजना मंच की ओर से 25 छात्रों ने निकटवर्ती ग्राम बूर्जा का 30 व 31 अक्टूबर को सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण किया। योजना मंच के द्वारा ग्राम बूर्जा को अपनाने का निर्णय किया गया है। मंच ने इस गांव में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र भी आरम्भ किया है।"

—हिन्दुस्तान (दैनिक)
3 नवम्बर, 1976

"महाविद्यालय (राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़) सामाजिक सप्ताह के दौरान आयोजित प्रदर्शनी में स्पात, कोयला, पैट्रोलियम पदार्थ, सीमेन्ट, सूती कपड़ा, चीनी आदि मूलभूत उद्योगों की प्रगति का 1975-76 का लेखा जोखा रेखा चित्रों द्वारा किया गया जिसके अवलोकन पश्चात् स्थानीय नागरिकों एवं छात्रों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।"

—दैनिक नवज्योति
जयपुर, 5 फरवरी, 1977

"स्थानीय महात्मा गांधी महाविद्यालय में योजना सप्ताह का उद्घाटन प्रशासक, नगर परिषद् श्री रामेश्वर सिंह द्वारा किया गया। श्री सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कार्यक्रम की सराहना की। ....योजना सप्ताह 18 जनवरी से 25 जनवरी तक मनाया जावेगा।"

—गंगानगर पत्रिका
श्रीगंगानगर, 20 जनवरी, 1977

"स्थानीय राजऋषि महाविद्यालय के प्लानिंग फोरम के तत्वावधान में कल अखिल भारतीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। पक्ष और विपक्ष में कोई 20 प्रतियोगी छात्रों ने विषय पर गम्भीर और जोरदार चर्चा की।"

—राजस्थान पत्रिका
जयपुर, 3 नवम्बर, 1976

"अजमेर के राजकीय कॉलेज के प्लानिंग फोरम की ओर से आयोजित इस सर्वेक्षण से पता चलता है कि प्रति बेरोजगार अपने पर औसत रु० 149-24 मासिक खर्च करता है। ....सर्वेक्षण में यह पता लगाने की कोशिश की गई है कि बेरोजगारी का कारण क्या है तथा बेरोजगारी की आर्थिक स्थितियां क्या हैं....."

—राजस्थान पत्रिका
जयपुर, 13 जुलाई, 1977

"प्लानिंग फोरम (राजकीय महाविद्यालय, श्री गंगानगर) द्वारा आयोजित प्रदर्शनी को सैंकड़ों विद्यार्थियों व अन्य अनेक व्यक्तियों ने देखा व उसकी सराहना की।"

—सीमा सन्देश
श्रीगंगानगर, 19 जनवरी, 1977

FROM DELHI

Professor L.R. Shah, Programme Adviser, Ministry of Education and Social Welfare, Government of India, New Delhi wrote to Mrs. K. Thanvi, Deputy Director, College Education, Rajasthan, Jaipur.

".....I thank you again for taking such a keen interest in the programme and in making Planning Forum in the colleges of Rajasthan live units....."

Shri N.K. Mahajan, Under Secretary, Ministry of Education and Social Welfare, Government of India also sent his views :—

"I write to acknowledge the receipt of a set of survey reports done by Planning Forums in Rajasthan. We find the matter interesting. It is hoped that the information contained in these survey reports is made use of for more effective planning at grass root level".

FROM SCHOLARS

"I have found it (the report on "an Economic survey of Famine in Beawar sub-Division" presented by Prof. S.L. Lodha and Prof. B.K. Khunteta under the auspices of Planning Forum, S. D. Govt. College, Beawar) very exhaustive and informative study..... I feel this document will be of great use to policy makers in fighting famine. I congratulate for writing such a valuable document."

Prof. Horbhajan Singh
Punjab Agricultural University,
Ludhiana.

"I was delighted to go through the report (as mentioned above) which attempts to analyse and discover the various factors responsible for the stagnation or decay in the village economy of the region and the malaise of persistent poverty. The authors have given useful suggestions for drought proofing the area..... The report needs to be studied by all those who are trying to develop agriculture in the region and revolutionise agricultural methods against heavy odds."

Shri B. L. Jain
Assistant Chief Officer,
Reserve Bank of India,
Jaipur.

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा जगत में अनेक परिवर्तन हुए। योजना मंच उसी कड़ी में एक अनूठा प्रयोग है, जिसने शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों को समाज के साथ जुड़ने का एक उत्तम अवसर प्रदान किया। कुछ योजना-मंच समुदाय सेवा के अभिन्न अंग बन गए जबकि अनेक योजना मंचों को अभी इस क्षेत्र में प्रभावी भूमिका का निर्वाह करना है। योजना-भावना का प्रचार, प्रसार, सर्वेक्षण, गोष्ठियां, व्याख्यान, कमजोर वर्गों के उत्थान में भागीदारी आदि अनेक प्रवृत्तियां मंचों के कार्य-कलापों में महत्त्वपूर्ण रही हैं। वर्तमान संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रम के क्षेत्र में सर्वेक्षण, शोध, मूल्याँकन, साहित्य सृजन, प्रत्यक्ष—केन्द्र संचालन आदि कार्य-कलापों का संचालन-सम्पादन योजना मंच बखूबी कर सकते हैं। योजना मंच शैक्षिक एवं व्यावसायिक संगठनों से मिलकर अनेक प्रायोजनाओं की सफलता में अपनी महती भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं। आवश्यकता है शिक्षकों द्वारा नेतृत्व प्रदान करने की—छात्रों में अभिक्रम जगाने की।

अजितकुमार जैन,
सचिव,
राजस्थान आर्थिक परिषद्

FROM PRINCIPALS

"Surely information, imagination and initiative will make the students of today adapt citizens of tomorrow. But mere dissemination of knowledge by a few occasionally, a debate or survey by a few, under a teacher, as is the usual feature, may not be of any great benefit in this direction. Activities involving actual planning and organising by great number of students is essential for effective functioning... It would do well to divert the money to actual work.

Miss Mukerjee,
Principal,
Sri Sathya Sai College for Women,
Jaipur

देश में महाविद्यालय व विश्वविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक व बौद्धिक स्तर को उन्नत करने एवं व्यवहारिक जीवन में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु सक्षम बनाने के लिए प्रत्येक महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में आयोजन-परिषद् कार्यरत हैं। शैक्षिक स्तर को उन्नत करने हेतु परिषद् के तत्वावधान में विस्तार व्याख्यान चार्टस् व डाइग्रामस् तैयार करना आदि कार्यक्रम सम्पन्न किये जाते हैं। इसी प्रकार बौद्धिक स्तर की उन्नत करने हेतु निबंध प्रतियोगिताएं, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, विचार गोष्ठियां, सेमिनार आदि आयोजित किये जाते हैं जिनके माध्यम से छात्रों की वाक शक्ति का विकास होता है।

इसी प्रकार व्यावहारिक जीवन में रचनात्मक गतिविधियों की दृष्टि से आर्थिक व सामाजिक सर्वेक्षण व भ्रमण आदि का भी आयोजन है। ज्ञान वृद्धि की दृष्टि से आयोजन परिषद् का पुस्तकालय व वाचनालय तथा सूचना केन्द्र भी महत्त्वपूर्ण हैं।

उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा का सकता है कि हर महाविद्यालय में आयोजना परिषद् का गठन अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

एन० के० महेश्वरी
श्री ओंकारमल सोमानी कॉलेज ऑफ कामर्स,
जोधपुर

Planning Forums in Colleges are an admirable medium of effective communication about Five Year Plans, our country has launched for the uplift of the teaming millions. As members of the Planning Forum, students get an opportunity of discussing the Plans in the back-drop of prevailing conditions and become acutely aware of the magnitude of problems facing the country, attempt at their solution and vision of the future. But the greatest good that a Planning Forum can do is the feed-back it can give to the planners after an objective evaluation of the impact of the plan on a given area. I am afraid this possibility has not been fully exploited so far, and much more needs to be done in this direction, Professors in charge of Planning Forums have also to see that they become a dynamic institution and not a mere formality content with the utilisation of grants. A properly run Planning Forum can well become the seed-bed of a glorious revolution.

S. P. Jain
Government College,
Behror (Alwar)

FROM ADMINISTRATORS

The introduction of the scheme of Planning Forums in our seats of higher learning is quite purposeful. Conceived as a broad framework within which the vital socio-economic issues and the annual plans of our country are to be studied and analysed, their merits and demerits to be dissected, priorities and processes to be discussed and learnt by our students under the guidance of teachers, the Planning Forums are very good tranining grounds. To the extent the Planning Forums succeed in inculcating the habit of long range planning—a very delicate task indeed—the Forums will serve the purpose for which they are meant.

Shivnath Singh Kapoor,
Joint Director,
College Education, Rajasthan,
Jaipur

As a student of commerce I have been closely watching, for the last two decades, the activities of Planning Forums. The movement of Planning Forum, as I could understand, has wide socio-economic and political implications. Whereas the students of commerce and economics tend to emphasise its purely economic aspect, the students of other subjects believe in its educative value. Although both the sections of the student community are right in their assessment of the movement of Planning Forum, to my mind, this educational movement is a much more complex phenomenon subsumming both these aspects and perhaps more. The proper functioning of Planning Forums in our educational institutions vividly illustrates in a micro setting many macro socio-economic issues, aspects and processes. Pledged as we are to democratic, secular and socialistic planning where the creative energies of the students in particular and those of the public in general are to be roused by persuasion and discussion, Planning Forums can be very good means, media and platforms for accomplishing the optimum socio-economic development of the country.

P. L. Chaturvedi
Deputy Director,
College Education,
Rajasthan, Jaipur

FROM INCHARGES

Working as an incharge of the Planning Forum I found it a very useful Association. In fact a lot of our students are in dark about the economic conditions of our country. They even do not know about the Planning machinery in the country. By arranging extension lectures, symposiums, debates and essay competitions we impart valuable information about these problems to our students. I feel Forum can work more effectively if we are provided with the facilities of finance, conveyance and accommodation.

Mrs. Sawaran Lata Baijal,
Sri Sathya Sai College, Jaipur

साधारणतया मंच का तात्पर्य ऐसे स्थान से लिया जाता है, जहां से केवल भाषण दिये जा सकते हों लेकिन योजना मंच विद्यार्थियों के लिये बहुमुखी प्रतिभा जुटाता है। वाद-विवाद, निबन्ध, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताएं, योजना पुस्तकालय, प्लान-कार्नर जैसी 'कैम्पस्' की सीमाओं से आबद्ध क्रियाओं से लेकर सर्वेक्षण एवं भ्रमण जैसे ज्ञानवर्द्धन कार्यक्रमों का यह अनूठा संगम है। आर्थिक क्रियाएं ही व्यक्ति, समाज व देश को संचालित करती हैं अतः यह आवश्यक है कि राष्ट्र का भावी नागरिक राष्ट्रीय आर्थिक गतिविधियों से सूचित रहे। योजना मंच इस कार्य को भली प्रकार निभा रहे हैं। योजना मंच पर हुए राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रतिनिधित्व करने के अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि उससे योजना मंचों को समुचित दिशा मिली है।

सोहनलाल लोढ़ा,
सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय,
ब्यावर

Looking to the usefulness, the Planning Forums ought to be assigned more positive and concrete role than merely organising debates, lectures, symposiums and arranging few such competitions. Under the new approach to the Planning viz. 'Area Planning' it would become essential for the colleges to take up surveys of nearby areas in order to find out regional potentialities. Such findings would surely help the planner in implementing the new developmental programmes. To organise the work of the Planning Formus more effectively proper co-ordination at the college level and between colleges and the Directorate is essential. Grants should also be made available well at the beginning of the session.

Ashok Bapna
Government College,
Dausa

FROM STUDENTS

मेरे महाविद्यालय के योजना मंच द्वारा आयोजित प्रतिस्पर्द्धाओं में भाग लेने के कारण मैंने अनुभव किया कि राष्ट्रीय नियोजन, आर्थिक विकास एवं अन्य समस्याओं के प्रति मेरा ज्ञान बढ़ा है। इसके साथ ही योजना मंच द्वारा समय-समय पर आयोजित सर्वेक्षणों में भाग लेने से ग्रामीण समस्याओं को निकटता से पहचान सका हूं। मेरी राय में योजना मंच छात्र एवं नियोजन को निकट लाने में बड़ी सीमा तक सफल हुए हैं।

जोगाराम
एम० ए० अर्थशास्त्र,
स० ध० राजकीय महाविद्यालय,
ब्यावर

योजना मंच, कामर्स कॉलेज, जयपुर से गत तीन वर्ष से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित रहने पर कह सकता हूँ कि इससे छात्रों में योजनाओं के प्रति जागरुकता बढ़ी है लेकिन इसकी प्रवृत्तियों की असीम सम्भावनाओं का अभी तक उपयोग नहीं हो पाया है। बदले हुए सन्दर्भ में योजना मंच राष्ट्रीय समाज सेवा तथा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान कर सकते हैं। आवश्यकता है छात्रों एवं अध्यापकों में आवश्यक लगन की।

महेशकुमार गुप्ता,
तृतीय वर्ष वाणिज्य,
कामर्स कॉलेज,
जयपुर

8

PLANNING FORUMS :

Achievements

It is commonly agreed that the scheme of Planning Forums has immense potential of instilling awareness among all sections of the people not only about the goals and gospel of economic planning but also about the job-oriented economic policies and priorities. Intended as they were/are to give serious thought to the planning needs and problems, the Forums can and are expected to make people receptive to new ideas, to the processes of economic change and socio-economic dynamics of a developing country. In a word, the Planning Forums aim at harnessing the teachers and students, and through them the public at large in a joint endeavour to help the developmental process.

Any scheme or movement howsoever good its aims and objectives may be, can make a worthwhile impact on the basis of its concrete contributions to the community. It is heartening to report that as the movement of Planning Forums has recently stepped into the twentythird year of its career in Rajasthan, it has been successful in setting certain examplary and worth emulating traditions by organising and coordinating meaningful programmes of academic, extra-curricular and co-curricular nature in, out and around the portals of our educational institutions. There are distinct signs that the organisation has struck firm roots and is likely to grow into a vital movement of creating an awareness for the planned development of the country among the youths, especially the student community and through them among the common man.

In this chapter it is proposed to review the situation, role and impact of the Planning Forums in Rajasthan with a view to assessing as to what we have achi-

eved so far and also to pledge what best we can further do in the campus and outside the campus and in society. A word of caution here. Since the scheme of Planning Forums is an integral part of our State's educational set up the functioning, achievements and shortcomings of the Forum activities could hardly be viewed in isolation. During the last three decades, the expansion of education in Rajasthan revealed trends of sustained progress and stresses and strains of a developing system. It is, therefore, in this background of the development and growth of our State's education both quantitative and qualitative that the achievements and failings of the functioning of the Planning Forums should be reviewed and judged.

To begin with, at the level of students' involvement in the scheme, as evidenced by the growing enrolment figures, the Planning Forums programme has certainly acquired popularity. In 1955, there were only 2 Planning Forums in the State. To-day we have 103 duly registered Planning Forums in the universities and colleges with a sizeable strength of 22,616 active and dedicated workers who are engaged in the dissemination of the Plan goals by organising debates and seminars, conducting surveys, arranging exhibitions, holding tests and competitions etc. In the course of last 22 years, the Planning Forums have expanded their activities in various directions just as their number has been increasing.

The Planning Forums have done commendable and leading work in the field of survey studies. Out of 103 Planning Forums, 37 Forums undertook survey investigations. Population explosion being number one problem of our country, 16 Forums undertook survey work on Family Planning with a view to adjudging the nature and extent of 'knowledge, attitude and practice' of family planning among almost all the sections of community-i.e., among teachers, labourers, 'Adivasies', educated, uneducated, persons belonging to S.C./S.T., etc. Other 21 Forums carried on surveys on miscellaneous themes. Some 20 Forums have published their surveys and project reports. Chapter sixth dealing, as it does, with a broad survey of surveys throws a flood of light on the magnitude of the work done by our Forums. The worth-mentioning aspect of the Forums activities is that the lectures and survey topics on various aspects of the Plan, relevant to the needs of our State are selected carefully by Committee of experts in consultation with the Planning/Man Power/Social Welfare and other allied departments. Proper guidelines and methodology to undertake the surveys and other activities are also issued regularly by the Planning Forum Cell of the Directorate.

Since the creation, formation and establishment of the independent cell of the Planning Forums in the Directorate, the greatest achievement of Rajasthan

in this field can be seen at the organisational level. Not only the Planning Forums activities are better coordinated and well supervised now, they are properly directed also. Now, the Planning Forums keep better liasion with District Administration in order to know the Plan Programme and contribute to their implementation effectively, they receive plan literature regularly, they are given help to undertake survey work,they are provided with trained personnel to carry out the various meaningful constructive activities. A word about the range and sweep of the activities of the Cell; it got registered all the Forums of the State, categorised them into 'A' and 'B' categories for the purpose of releasing grants, identified topics for lectures and surveys (separate for P. G. College and Degree College Planning Forums), arranged orientation and refresher courses for the Incharges, linked Planning Forums with allied activities of educative importance like the NSS and Nehru Yuvak Kendras and Adult Literacy Centres so that they could work together towards the welfare of the deprived sections of the society in rural and urban areas and thereby develop understanding of the process of Planning among the masses. Few selected Planning forums have also joined hands with the Deptt. of Economics, University of Rajasthan, Jaipur to conduct a survey on the 'Rural Indebtedness in Rajasthan'. This survey is being conducted under the auspices of Rajasthan Economic Association with financial help being provided by the Government of Rajasthan.

Besides this, 35 Incharges of Planning Forums could also participate in a 'Regional Seminar on the role of Planning Forums' organised by the Department of Economics, University of Rajasthan. The teacher incharges were given some orientation about the methodology of conducting surveys and organising Planning Forum activities. The seminar was financed by the Ministry of Education, Government of India, New Delhi.

Having strengthened the day-to-day activities of the Forum, the Research Cell intends, under the inspiring leadership of Prof. N. M. Kothari, Director of College Education, Rajasthan, Jaipur, to publish a consolidated report on the role and impact of Planning Forums in Rajasthan. In order to exploit optimally the Planning Forum potential the Research Cell intends to undertake zonal and state level work along with District and College level works. In the year 1976-77 few lectures were organised at the zonal level. These lectures were delivered by experts and were attended by all the Incharges and student members of Planning Forums in that particular zone. Strengthening of the Plan Information Centres, provision for awards and certificates and other incentives are being given due consideration. Though one of the most discouraging and unfortunate aspect of the Forum activities is the static, nature of its budgetary provision

(in 1968-69 there were only 56 Planning Forums in Rajasthan now in 1976-77 we have 103 Forums with enrolled strength of 22,616 but the budget has been the same all through these years) the Research Cell has succeeded in making a break through. Besides the regular grant of Rs. 78,000 per annum, the Cell succeeded in obtaining another grant of Rs. 28,000 and Rs. 42,000 during the sessions 1976-77 and 1977-78 respectively with a view to financing the Forums for intensifying their activities.

The real success of the Planning Forums, however, depends on the vision and imagination and the sense of dedication of the Incharges, on the role they play in keeping harmony among all the four cardinal constituents of the Planning Forums : the students, the teachers, the community and the programme contents. Needless to say, the adequate interaction and coordination of these component elements and the greater involvement of the people is essential for the success of the Planning Forums. We achieved political independence some 30 years ago. Economic independence is yet to become an accomplished fact. Pledged as we are to democratic and socialistic planning where the creative energies of the people have to be roused by persuasion and discussion, planned development through peoples' participation is the only way to achieve economic growth with social justice. To achieve this we require new institutions, modes and values. A Planning Forum is one of such institutions and modes. The introduction of the scheme of Planning Formus in our seats of higher learning has helped bring about the emergence of a new social order based on justice and equality.

Sub. National Systems Unit,
National Institute of Educational
Planning and Administration
-110016
Doc. No. D-1851
Date 26-11-84

NIEPA DC
D01851